वर्ष-25 आसोज (निज) अक्टूबर 2020 अंक-10

आर.एन.आई.नं. 0048570/29/30/982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.न. एस.डी.08/2018-2020

मूल्य 10/- रुपया

मासिक

आगमोद्धारक

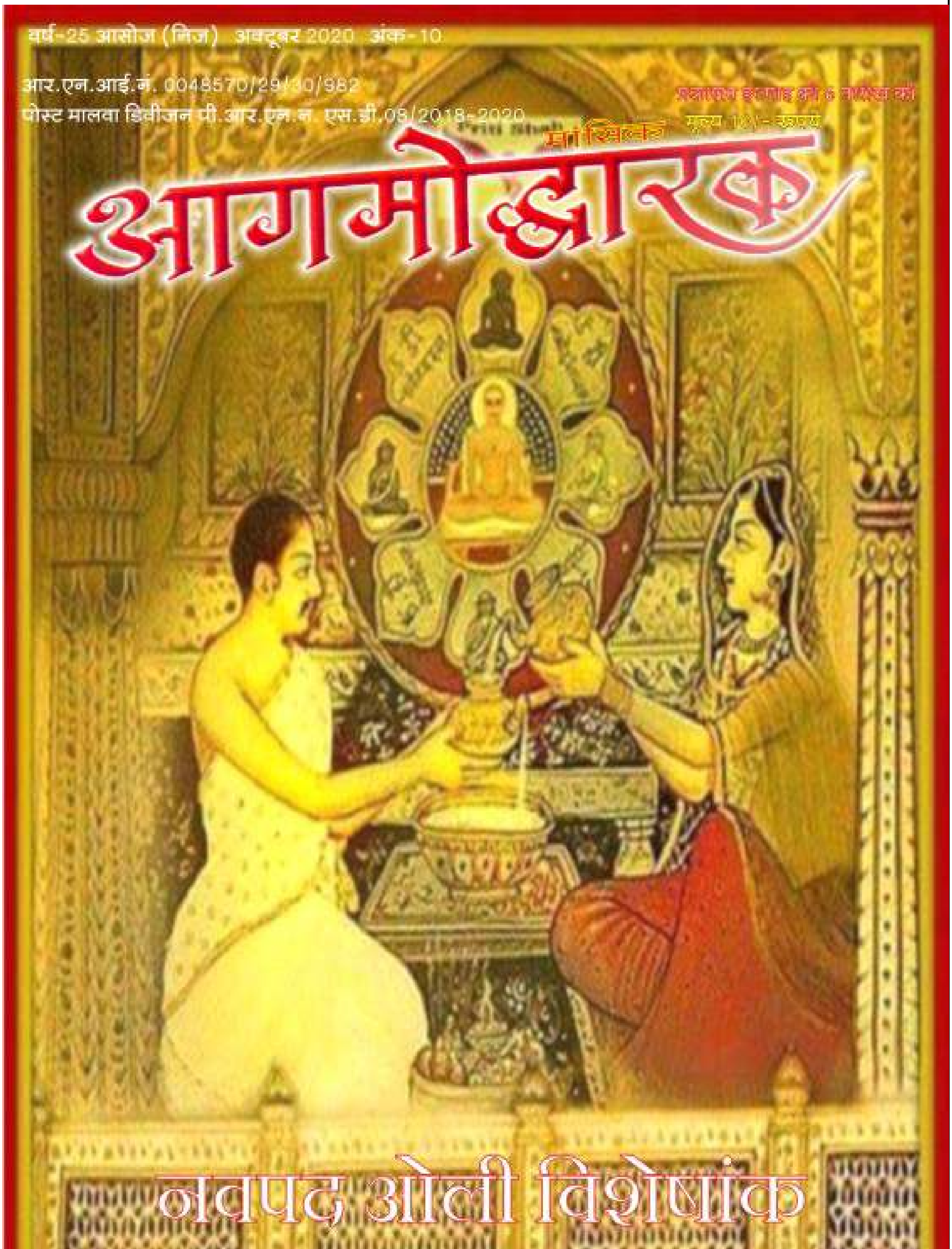

नवपद ओली विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नम:

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

किसी भी प्रकार क्रिया, जप, तप या शास्त्र-वाचन करके भी एक ही कार्य सिद्ध करना है, वह यह है कि जगत की विस्मृति करना और सत्के चरणों में रहना। और उस एक ही लक्ष पर प्रवृत्ति करने से जीव को स्वयं क्या करना योग्य है और क्या करना अयोग्य है वह समझ में आता है, समझ में आने लगता है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया।
तमुच्छित्ता जहानायं, विहरामि महामुणी॥

भवतृष्णा को लता कहा गया है, जो अत्यन्त भयावह है। उसे यथाविधि उच्छिन्न कर, हे महामुने! मैं सुखपूर्वक विचरण करता हूं। **- उत्तरा. सूत्र, 23.48**

पाथेय

जैसे ही में स्थूल व्यावहारिक जिम्मेदारियों से होती है, मुक्त इनके विषय में आने वाले सभी विचार मेरे अन्दर से भाग जाते है दूर और में पूरी तरह तुमसे और तुम्हारे सेवा कार्य में हो जाता हूं निमग्न तब हे प्रभु, मैं अपनी इच्छा को संयुक्त कर लेता हूं, तुम्हारी महती इच्छा से और उस गहन एवं अचल नीरवता में, मैं सुनाता हूं तुम्हारे महान सत्य और उसकी अभिव्यक्ति की वाणी। तुम्हारे संकल्प के प्रति संचेतना हो जाना और स्वयं को तुमसे समरुप कर लेना, इसी में निहित आत्म-स्वातन्त्र्य एवं आत्म प्रभुत्व का रहस्य। इसी में निहित है, शक्तियों का पुनरुद्धार एवं सत्ता का रुपान्तर। हे नाथ! तुम्हारे साथ पूर्णतया एवं निरन्तर जुड़े रहना है, इस बात का आश्वासन कि हम सभी बाधाओं का करेंगे अतिक्रमण और अन्तर बाहर की सभी कठिनाईयों पर पायेंगे विजय।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-25 आसोज (निज) अक्टूबर 2020 अंक-10

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- जैनों का मोनोपाली तप : आयंबिल तप (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- माला में 108 मणके क्यों ? -आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तमसूरीश्वरजी म.	6
5- मैं सुव्रताश्री -श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. ,	7-9
6- महान आत्माओं की महानता था ''रावण''- शान्तिलाल सगरावत	10
7- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा.,	11-12
8- बिटिया रानी...! पू.आ.श्री जितरत्नसागरसूरीजी ''राजहंस'' तृष्णा की तड़फ, जैन साधु-साध्वी दुनिया का एक अजूबा....	13-14
9- श्रद्धा, जानकारी एवं उद्यम : रत्नत्रयी- कहे कलापूर्ण सूरी से	15-16
10-वेध एवं वेधशालाओं की परम्परा- डॉ. विनयकुमार पाण्डेय पंच परमेष्ठी से पंचाचार की शुद्धि	17-18
11-सफल जीवन के लिये नई राहें बनाएं....- ललित गर्ग , कार्य-सिद्धि हेतु सोपान, भगवान श्री मुनिसुव्रत स्वामी के 9 भव	19-20
12-श्री शेरीसा महातीर्थ	21-23
13- वीर विक्रमशी-मुनिश्री दिव्यरत्नसागरजी म.	24
14-उम्र की जवान देहरी पर खड़ी समस्त कुंवारी बहनों के नाम एक पत्र- फूलचन्द्र जैन	25-27
15-यह आप करेंगे तो पुण्य की छोली भरेंगे...!, केवलज्ञान	28-29
16-निरापद नहीं है मोमबत्तियां- मेनका गांधी	30
17-वर्गपहेली- 306 - जयंतीलाल जैन	31
18-ज्ञान गंगोत्री- 306 - जयंतीलाल जैन	32
19-आगमोद्धारक भविष्य फल- अक्टूबर-2020- अनु दीपक जैन	33
20-शासन-समाचार	34-41
21-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, घर कहता है....	42

संपादकीय

जैनों का मोनोपाली तप : आयंबिल तप

जैन धर्म में आध्यात्मिक अंतदृष्टि आंतरिक पवित्रता प्राप्त करने के लिये जो आचरण संहिता बनाई गई है उसके अंतर्गत तप कहो या तपस्या कहो को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। दान, शील और भावनाओं से कई लोगों ने जैन धर्म में अपने समर्पण भाव से गौरांवित स्थान प्राप्त किया है। परन्तु तप के तेज से भी जैन शासन में अनेक तारीखें तेजस्वी बनी है। जैन शासन में तपधर्म के द्वारा शीलकर्म की साधना और काम विजेता श्री स्थुलिभद्र का नाम चौरासी चौबीसी तक याद किया जाकर अमर रहने वाला है। तप धर्म की अराजकता करनेवाले महातपस्वी श्री चन्द्रकेवली महार्षि का नाम और उनका जिन शासन को दिया गया योगदान तो आठ सौ चौबीसी तक अमर रहने वाला है। छः ब्राह्य और छः सम्यंतर ऐसे बारह प्रकार के तप के द्वारा भूखण्ड पर तप साम्राज्य की विजय पताका फहराती रहेगी। श्री सूत्र कृत्रांग सूत्र में तप के पुण्य प्रभाव के बारे में बतलाया गया है किः-

साउणी जह पंसुगुंड्यिां विहुणिय घंसयइ सिंध इंय।
एवं रवियोवहाणंठ कंम्म खवइ तपस्सि माहणे ॥

जिस प्रकार पक्षी अपने परों को फड़फड़ाकर उन पर लगी धुल झटक देता है उसी प्रकार तप का तपस्वी भी अपने किये कर्मो का अपनयन यक्षाशीघ्र कर देता है। तप की महिमा महान है। तप द्वारा ही मनुष्य अपने अभीष्ट पद को प्राप्त करता है। पाप पर अपनी अपूर्णता को दूर कर अपने चारित्रा को उज्ञवल तथा पवित्र बनाता है। धीर पुरुष तप द्वारा ही संसार में उन्नति के शिखर पर विराजमान होता है।

संसार सागर की वर्तमान संकट पूर्ण अवस्था में कदाचित हमें जैन धर्म की क्रियाओं में ही एक ऐसा उच्चतर बंधन मिलेगा जो मानव को परम सत्ता या परमात्मा जिसके लिये मानव का मन प्यासा है के निकट लाने में सार्थक सिद्ध होगा। परम सत्ता तक पहुंचने के लिये जैन धर्म में जो उत्कर्ष साधन बतलाये गये है उनमें तपधर्म सर्वोत्तम माना गया है, जितनी महान आत्माओं ने तीर्थकर पद प्राप्त किया है वे सभी तप करते हुए इस तीर्थकर पद प्राप्त कर सकी है। तप द्वारा हमने केवल ईश्वर तक पहुंचते है, वरन मनुष्य के हृदय में ईश्वर का प्रार्दुभाव भी देख सकते हैं। दुर्भावना मिट जाती है एवं अंतःसंघर्ष शांत हो जाता है। जब हमारे अंदर की चिंगारी मुक्त हो जाती है तो वह अग्नि का रुप धारण कर लेती है और संसार सागर को स्वच्छ कर देती है। यह तभी हो सकता है जब हम-आप तप धर्म का आलंबन लेकर अपने संकुचित अहं, लोभ, क्रोध, घृणा एवं सब प्रकार के बंधनकारी बुभुक्षा एवं वासनाओं को, जो हमारे मरणशील जीव के अंदर के बंध को समाप्त कर देती है। तप पूर्णता के लिये एक सीढ़ी देता है जिस पर प्रयत्नपूर्वक ही हमें चढ़ना होगा। आत्मोलब्धि का मार्ग किसी यांत्रिक चलसोपान की भांति नहीं होता है, जो चढ़ते ही हमें, बिना हमारे प्रयत्न किये शिखर पर पहुंचा देगा इसके लिये तो सतत् प्रयास आवश्यक है।

मैं आपसे ऐसी ही एक विशिष्ट तपाराधना के बारे में बात करने जा रहा है जो वर्ष में दो बार आती है। जिसे हम नवपद ओली के नाम से जानते हैं। परम तारक परम प्रभावक जिन शासन में बेजोड़ इस तपाराधना में आयंबिल किया जाता है। संसार के सब धर्मो में तपस्या होती है जिनके करने के तरीके भी अलग-अलग होते हैं परन्तु आयंबिल जैसी तपस्या किसी भी धर्म में नहीं है। यह सिर्फ जैन धर्म में ही होती है इसलिये जैन धर्म में इस तप की मोनोपाली है। इस तप में खाना (एक) होता है लेकिन एकदम रुखा-सुखा बिना स्वादवाला विगई का त्याग कर बनाया हुआ। प्रश्न उठेगा ऐसा क्यों ? जैसे सर्प बिना लक्ष्य अपने शरीर की रक्षा के लिये बिल में प्रवेश करता है वैसे ही हमें अनासक्त भाव से शरीर की रक्षा एवं रसेन्द्रिय पर कंट्रोल करना है।

दो ऋतुओं के संधिकाल में हमारे शरीर में काय, पित्त, वायु का प्रकोप बढ़ जाता है। ऐसे समय स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिये बिना तेल, घी, दूध, दही, मिर्च, मसाले शक्कर का भोजन तपस्या के साथ करने से अनेक शारीरिक विकृतियां कम हो जाती है, स्क्रीन की बीमारी में भी लाभ होता है। हम यह जानते है कि सभी धार्मिक क्रियाएं और तप का संबंध स्वास्थ्य से भी है। आहार की आसक्ति और स्वाद पर विजय प्राप्त कर लेने से कई रोगों से बचा जा सकता है। यह धर्म और विज्ञान का मेला। **जैन धर्म जबरदस्त है लेकिन यहां कोई जबरजस्ती नहीं है।** हम शक्ति के अनुसार तप कर सकते है। नवकारसी से लेकर मासक्षमण तक और उससे भी ऊपर तक करने के तप है लेकिन इन सबमें आयंबिल की महिमा अपरम्पार है। तप करने से कर्म की निर्जरा सौ प्रतिशत होती है इच्छा का निरोध करना, रोकना इसी में वास्तविक आत्मीय सुख है। अगर हमें समभाव की साधना करनी है तो इसके लिये आयंबिल तप बेजोड़ है। यह आराधना करने का मौका आनेवाला है। जिनशासन में विशिष्ट इस तपाराधना से अपने जीवन को सफल बनानेवाले श्रीपाल राजा और मैयणा सुन्दरी ने अब से 11 लाख वर्ष पूर्व ओली की आराधना उज्जैन में की थी और जीवन के सब सुखों को पाया था।

आपके पास में यह शुभ अवसर आ रहा है परमात्मा श्री महावीरस्वामीजी ने भी इस तप की प्रशंसा की है, भगवान के दरबार में स्थान मिलना हमारे लिये अत्यन्त पुण्यवाणी का उदय है, इस तप से जुड़कर हम अपने पूर्व कर्मो के बंधन से मुक्ति के लिये प्रयत्नशील बने यही शुभ भाव।

✻ डॉ. सुभाष जैन

माला में 108 मणके क्यों ?

✻ आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

नमोकार महामंत्र का जप करने में माला का विशेष महत्व है। सूत, रेशम, चन्दन, मूंगा या रुद्राक्ष आदि की 108 मनके वाली माला लेकर प्रत्येक मनके पर एक-एक मंत्राक्षर या पद का जप करने में माला उपयोगी होती है।

प्रश्न होता है कि एक पूरी माला में 108 मनके क्यों होते हैं ?

इस प्रश्न के उत्तर आचार्यो ने कहा है कि- पांच परमेष्ठी के 108 गुण होते हैं। जैसे-अरिहंत भगवान के 12, सिद्ध भगवान के 8, आचार्य भगवंत के 36, उपाध्याय के 25 तथा साधुजी महाराज के 27 गुण। ये सब मिलकर 108 गुण होते हैं। इन 108 गुणों का स्मरण-वन्दन करने की भावना से प्रत्येक मनके पर एक-एक गुण का स्मरण करें तो 108 गुणों के 108 मनके होते हैं। इसलिये एक पूरी माला में 108 मनकों का विधान मंत्रशास्त्र में किया गया है।

1- अरिहंत भगवान के 12 गुण- अष्ट महाप्रातिहार्य जैसे अशोक वृक्ष-जहां अरिहंत भगवान के समवसरण की रचना होती है, वहां अरिहंत भगवान के सिंहासन के ऊपर अशोक वृक्ष की रचना होती है। **2- पुष्पिवृष्टि-** समवसरण में देवगण अचित्त फूलों की वर्षा करते हैं। **3- दिव्य ध्वनि-** समवसरण में जब भगवान मालकोश राग में देशना फरमाते हैं तब देवगण उनकी वाणी को दिव्य ध्वनि से विस्तृत बना देते हैं। **4- चामर-** अरिहंत भगवान के दोनों तरफ देवगण श्वेत मनोहर चंवर डुलाते हैं। **5- सिंहासन-** भगवान के बैठने के लिये देवगण रत्नजड़ित सुवर्ण सिंहासन की रचना करते हैं। **6- आभामंडल-** भगवान के मस्तक के पीछे सूर्य किरणों के समान तेजस्वी आभामंडल रहता है। **7- दुंदभि-** समवसरण के आसपास देवगण आकाश में दुंदुभि बजाकर लोगों को सूचना देते हैं। **8- तीन छत्र-** भगवान के मस्तक पर चन्द्र समान उज्जवल मोतियों की झालर वाले स्वर्णमय तीन छत्रों की रचना देवगण करते हैं। ये आठ प्रातिहार्य हर समय प्रभु के साथ रहते हैं।

1-चार मूल अतिशय-

भगवान जहां विचरते है उनके चारों तरफ 25-25 योजन तक तथा साढ़ेबारह योजन ऊपर, साढ़े बारह योजन नीचे, यों एक सौ पच्चीस योजन तक स्वचक्र-परचक्र का भय, रोग, वैर, मारी, अतिवृष्टि आदि नहीं होते।

2- ज्ञानातिशय- प्रभु केवल ज्ञान द्वारा हाथ की रेखाओं की तरह संपूर्ण लोक को देखते हैं।

3- पूजातिशय- इन्द्र, देव, चक्रवर्ती, वासुदेव बलदेव मनुष्य आदि सभी प्रभु की पूजा करना चाहते हैं।

4- वचनातिशय- प्रभु की वाणी 35 गुणों से युक्त होती है। देव, मनुष्य, तिर्यच सब अपनी-अपनी भाषा में उसको समझते हैं। यह वाणी एक योजना प्रमाण क्षेत्र तक एक समान सुनाई देती है। ये 12 गुण अरिहंत भगवान के होते है।

आठ कर्मो का सम्पूर्ण क्षय हो जाने से सिद्ध भगवान के 8 गुण प्रकट होते हैं- 1- अनन्त ज्ञान, 2- अनन्त दर्शन, 3- अनन्त चारित्र (वीतरागता)। ये तीनों गुण ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय तथा मोहनीय कर्म के क्षय से प्रगट होते हैं। 4- अनन्त वीर्य (स्वाभाविक अनन्त आत्मशक्ति) 5- अब्याबाध अनन्त आत्मिक सुख (वेदनीय कर्म के क्षय से) 6- अक्षय अजर-अमर स्थिति (आयुष्य कर्म के क्षय से), 7- अरुपी अवस्था-नाम कर्म क्षय होने से सिद्ध भगवान वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, रुप रहित होते हैं। 8-अगुरु-लघुता-गोत्र कर्म के क्षय से हलका-भारीपन, ऊंचा-नीचापन रहित अवस्था।

आचार्यों के छत्तीस गुण- पाँच इन्द्रियों का संयम, नव गुप्ति से युक्त, ब्रह्मचर्य का पालन व चार कषायों का वर्जन, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार पांच आचार का शुद्ध पालन। 5 महाव्रतों का पालन, 5 समिति, 3 गुप्ति को धारण करना।

उपाध्याय के 25 गुण- 11 अंग तथा 14 पूर्वो का अध्ययन स्वयं करते हैं तथा दूसरों को करवाते हैं।

साधुजी के 27 गुण- 5 महाव्रत, छठा रात्रि भोजन त्याग, छह काया के जीवों की रक्षा, पांच इन्द्रियों को जीतना, मन, वचन,काय के तीन योगों का संयम, क्षमाशीलता, लोभत्याग, भावों की निर्मलता, पडिलेहणा आदि में उपयोग रखना, संयम योग में युक्तता अर्थात् समिति-गुप्ति का पालन करते हुए निद्रा, विकथा, अविवेक का वर्जन, बाईस प्रकार के परीषह, उपसर्ग को समताभावपूर्वक सहन करना।

इस प्रकार 12+8+36+25+27=108 गुण पंचपरमेष्ठी के होते हैं।

- आधार : नवकरवाली नी सज्झाय महाप्रभाविक नवस्मरण

मैं सुव्रताश्री

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

मैं अत्यन्त रुपवती थी, परन्तु यह रुप ही मेरा शत्रु बना। रुप तो तीर्थंकर प्रभु का भी होता है.... ऐसा अद्भूत वह रुप होता है कि करोड़ें इन्द्र भी उनके जैसा रुप बना नहीं सकते। अंगूठे जितना भी नहीं। किन्तु प्रभु का रुप देखते ही आँखें शीतलता का अनुभव करती है, शांत रस के झरने बहने लगते हैं, वासना के भूत मन में भाग जाते हैं.... लेकिन हमारे जैसों के रुप में ऐसा अतिशय कहां से लाएँ ? जो दूसरों को विकारी बनाये ऐसा रुप किस काम का ? हाय छट्! जब मुझे पता चला कि मेरे जेठ मेरे रुप में पागल बने है तब मैं स्तब्ध हो गई! यह तो पानी में से आग पैदा हुई! दूसरा कोई मुझ पर कुदृष्टि करें तो मैं स्वसुर तुल्य जेठ के पास जाऊं, लेकिन जेठ ही कुदृष्टि करें तो मैं कहां जाऊं ? रक्षक ही भक्षक बने, बाड़ ही खेत को खाने लगे तो क्या किया जाय ?

मेरे पति युगबाहु! मेरे जेठ मणिरथ! सुदर्शन नगर के राजा! किसी काल चौघड़ीये में मेरे जेठ की मुझ पर नजर पड़ी और उस दिन से मेरे दिन बिगड़ गये, हालांकि मुझे तो इस बात की जानकारी भी नहीं थी कि मेरे जेठ मुझ पर मोहित है, एक पक्षीय प्रेम शुरु हो गया है। बहुत बार मेरे जेठ अपनी दासी को मेरे पास भेजते और उसके साथ अच्छे-अच्छे आभूषण-वस्त्र इत्यादि भेजते। मैं वह सभी सामान्य समझकर ले लेती। मुझे कहां पता था कि इसके पीछे जेठ दूसरा ही कुछ कहना चाहते हैं ? सरल को सब सरल ही दिखाई देता है।

.... किन्तु एक दिन दासी ने जब जेठ के दिल की बात कही तब मैं चौक उठी। ''तेरे राजा को कह देना कि मदनरेखा की आशा छोड़ दें। अगर जबरदस्ती करने गये तो मदनरेखा का मुर्दा ही हाथ में आयेगा, जिंदी मदनरेखा कभी भी नहीं मिलेगी।'' मैंने गर्जना की।फिर भी मेरे जेठ के भीतर से निराश नहीं हुए। भीतर मानने लगे- जब तक युगबाहु जिंदा है तब तक मदनरेखा मेरी कैसे हो सकती है ? युगबाहु का कांटा निकालना आवश्यक है। फिर दूसरा काम सरल हो जायेगा। मदनरेखा भले 'ना' कहती रहे, लेकिन वह 'ना' ही 'हाँ' में बदल जायेगी। वैसे भी स्त्रीयों का स्वभाव पहले तो 'ना' कहने का ही होता हैं। ना.... ना.... ना.... करते आखिर कब हाँ.... हाँ.... हो जाता है उसका उसे उसका उसे स्वयं को ही पता नहीं चलता।

मेरे पति का कांटा निकालने तक जेठ पहुंच गये है, इस बात का तो मुझे तभी पता चला जब मैं अपने पति के साथ उद्यान में कीड़ा करने गई थी। रात में भी कदलीगृह में ही हम दोनों ने रहने का निश्चय किया। थोड़ी रात व्यतीत होने के बाद समाचार मिले- मेरे जेठ मेरे पति से मिलने आ रहे हैं। मुझे कुछ शंका तो हुई.... लेकिन अभी मैं कुछ विचार करुं इसके पूर्व तो मणिरथ जेठ तो आ ही पहुंचे। बड़े भाई को देखते ही मेरे पति उनके चरणों में गिर पड़े और समय मौका देखकर जेठ ने मेरे पति की गर्दन पर जोर से तलवार चला दी। लोही के फव्वारे निकले। मैंने चिल्लाना शुरु कर दिया। मेरी चीख सुनकर चौकीदार तुरन्त आ पहुंचे। जेठ को बांधने लगे, परन्तु मेरे घायल पति ने ऐसा करने का मना कर दिया। इससे चौकीदारों के छोड़ देने से जेठ तो तुरन्त ही भाग निकले।

मैं इस आघात से कांप उठी थी। मेरे जीवन का सर्वस्व मेरे अधम जेठ ने लूंट लिया था। मेरी नजर के सामने मेरे पति तड़फ रहे थे। मैं क्षणभर हतप्रभ हो गई.... लेकिन तुरन्त ही मैंने अपने आप को संभाल लिया। अभी हिम्मत हारने से कुछ होनेवाला नहीं था। खास करके मेरे पति को समाधि देना जरुरी था। सभी विचारों को एक तरफ रखकर मैं मेरे पति को अंतिम आराधना करवाने लगी। इस समय मेरा बड़ा पुत्र चन्द्रयशा भी चिकित्सा के लिये आ पहुंचा। मैं निर्यामणा करवाने में लयलीन बनी- ''हे पतिदेव ! किसी के भी ऊपर वैर न रखना। अपना बुरा अपने कर्मों से ही होता है। सर्व जीवों के साथ क्षमापना करो, खास करके आपके बड़े भाई के साथ करो। अरिहंतादि चार की शरण स्वीकारो। दुष्कृतों की गर्हा करो। सुकृतों की अनुमोदना करो। पतिदेव! कहीं भी आसक्ति मत रखना। बिदाई की वेला नजदीक आ रही है। पूर्ण जागृति पूर्वक समाधि रखें। भवोभव यह जीव असमाधि में ही मरा है। असावधानी में, बेहोशी में ही मरा है। कभी समाधि नहीं मिली है। इस समय यह सुंदर अवसर मिला है। थोड़ी भी असमाधि या असावधानी मत रखना।''

मैं देख रही थी कि पतिदेव का मुंह अंधेरे में भी चमक रहा है। समाधिमग्न है। भीतर की समाधि बाहर मुखमुद्रा पर झलके बिना रहती नहीं है। अत्यंत समाधिपूर्वक उन्होंने अंतिम श्वास लिया। मुझे उनकी चिरविदाई से दुःख जरुर हुआ, लेकिन अंतिम समय पर उन्हें समाधि रही इस बात का मुझे बहुत ही आनंद था।

पति के अलविदा से मैं और मेरा पुत्र चन्द्रयशा दोनों फूट-फूटकर रो पड़े।

मैंने सोचा- ऐसे रोने से काम नहीं चलेगा। अभी मुझ पर विपत्ति के बादल मंडरा रहे है। यदि यहां रहूंगी तो जेठ मुझे कुचल डालेंगे। मर जाऊंगी लेकिन पर-पुरुष को हाथ लगाने नहीं दूंगी- यह मेरा दृढ़ संकल्प था। वैसे तो मैं मर भी जाती! परन्तु मेरे पेट में बालक था। मेरे कारण मेरे पेट में रहे हुए बालक को गर्भ में ही मर जाना पड़े, मिला हुआ महामूल्यवान् मानव-जीवन हार जाना पड़े, ऐसा मैं कभी नहीं होने दूंगी! मुझे शीलरक्षा के साथ बालरक्षा भी करनी थी। इससे मुझे भाग जाना ही उचित लगा।

इस तरफ चंद्रयशा रोता रहा और मैं अंधेरे में जंगल की तरफ भाग निकली। काजल काली रात थी। भयंकर जंगल की बाट थी और मैं भाग्य-भरोसे चल पड़ी। कभी जमीन पर पैर भी नहीं रखनेवाली राज्यपरिवार की स्त्री मैं, आज नंगे पैर जंगल में चल रही थी। कांटों और कंकरों से जब तब मेरे पैर वेध जाते थे, लेकिन अभी वह सभी गौण था।

पूरी रात मैं चलती रही तब जाकर सुबह मैं भयंकर अटवी के किसी जलाशय के पास आ पहुंची थी। पास में कदली वन था। उसके द्वारा कदली गृह बनाकर मैं वहां पर रहने लगी। फल और निर्मल जल की सुविधा तो थी ही। जल और फल की व्यवस्था तो जंगल में और भी मिल जाती परन्तु मुझे सर्वप्रथम आश्रय की आवश्यकता थी। मनुष्य की पहली आवश्यकता ''रोटी, कपड़ा और मकान'' कहलाती है। मनुष्य को सबसे पहले भोजन चाहिये। उसके बाद वस्त्र और उसके बाद रहने का मकान चाहिये। यह विधान पुरुषों के लिये आवश्यकता का क्रम उलटा है, जिस पर पुरुषों ने शायद ही विचार किया है। स्त्रीयों को सर्वप्रथम आश्रय चाहिये, मकान चाहिये उसके बाद वस्त्र और अंत में रोटी चाहिये। पुरुषों के लिये ''रोटी, कपड़ा और मकान''यह क्रम भले ही रहा परन्तु स्त्रीयों के लिये ''मकान, कपड़ा और रोटी'' यह क्रम अधिक अच्छा रहता है।

मुझे कदली-गृह रुपी मकान मिल गया था। मैं कुछ निश्चित होकर रहने लगी। जंगल में संपूर्ण निश्चितता तो कहां से मिलेगी? इतनी मिली वह भी मेरा भाग्य!

सात दिन के बाद मैंने पुत्र को जन्म दिया- रे पुत्र! यदि तूने थोड़े ही दिन पहले जन्म लिया होता तो? राजकीय ठाठ के साथ तेरा जन्मोत्सव होता। आज जन्मोत्सव तो क्या? कोई प्रसूतिकर्म करनेवाला भी नहीं है। रे, नसीब! मेरा हृदय रोने लगा। मैं फूट-फूटकर रो पड़ी, लेकिन यहां पर मेरा रुदन कौन सुननेवाला था? हाँ, शायद जंगल के सिंह-बाघ मेरा रुदन सुनकर मुझे खाने के लिये आ जाते! ''अरण्य-रुदन निष्फल होता है।'' ऐसा सुना तो कई बार था, परन्तु अनुभव तो पहली बार ही किया था! जंगल में रोने पर कौन सुनेगा? कौन आयेगा? कौन आश्वासन देगा? यदि कोई आश्वासन देनेवाला ही नहीं हो तो रोने का मतलब ही क्या था? छोटा बच्चा भी यह बात समझता है। किसी की उपस्थिति हो तो ही वह रोता है। नहीं तो चुप बैठ जाता है! मैं छोटे बच्चे जितना भी न समझुं इतनी नादान नहीं थी। इससे तुरन्त ही चुप हो गई।

बालक के हाथ में 'युगबाहु' नामांकित अंगूठी पहनाई, बालक को कंबल में लपेटकर एक वृक्ष के नीचे रखकर सरोवर में वस्त्रादि की शुद्धि करने पहुंची। जैसे ही मैं सरोवर में थोड़ी अंदर गई, तभी एक जलहस्ती आ पहुंचा! मैं भागने का प्रयत्न करुं उसके पहले ही उसने मुझे सूंढ़ में पकड़ लिया और आकाश में ऊपर उछाला।

रे कर्म! क्या तुझे इतने दुःख कम लगे?

जेठ की कुदृष्टि!

गर्भवती अवस्था में जंगल गमन!

जंगल में अकेले ही रहना!

अकेले ही प्रसूतिकर्म करना!

दुःखों का यह कैसा बेअटक कारवाँ!

ये दुःख कम थे वैसे जलहाथी ने आकाश में उछाली!

ऊपर आकाश और नीचे पानी था। बचने की कोई संभावना नहीं थी। मैं नवकार में लीन बनी। मैंने मान लिया कि अब मरना ही है! लेकिन.... राम रखे उसे कौन चखे?

मेरे किसी प्रबल पुण्योदय से उस समय आकाश में से किसी विद्याभर का विमान जा रहा था। मुझे आकाश में उछलती देखकर तुरन्त ही उसमें रहे हुए विद्याधरने मुझे बचा लिया। मुझे विमान में रखकर उसने तो विमान चला दिया। मैं विमान में रोती ही रही। मातृहृदय नवजात बालक की चिंता कर रहा था। क्या होता होगा? कैसे जीयेगा मेरे बिना? कोई जंगली प्राणी फाड़ तो नहीं खायेगा न?

वैताढ्य पर्वत पर ले जाकर उस विद्याधर ने मुझे रोने का कारण पूछा- मैंने संपूर्ण आपबीती सुनाकर कहा- ''जंगल में रहे हुए मेरे पुत्र को आप यहां पर ले आओ अथवा मुझे आप वहां पहुंचाओ। मेरे बिना नवजात शिशु मर जायेगा अथवा जंगली पशु मार डालेंगे।''

''यदि तू मुझे पति के रुप में स्वीकार करेगी तो मैं तेरी सभी बात मानने के लिये तैयार हूं। मैं कौन हूं ? यह तू जानती है ? वैताढ्य पर्वत के रत्नावह नगर के राजा मणिचूड़ विद्याधर का मैं पुत्र हूं। मेरा नाम मणिप्रभ। मेरे पिता ने मुझे राज्य सौंपकर दीक्षा ले ली है। मेरे पिता मुनि कल ही नंदीश्वर द्वीप की यात्रा करने गये हैं। उन्हें वंदन करने मैं जा रहा था। वहीं रास्ते में मुझे तू मिली। यदि तू मुझे स्वीकारेगी तो मैं तुझे अपनी पट्टरानी बनाऊंगा।

मैं चौक उठी। फिर यह उपाधि कहां से आ पड़ी ? एक में से मुश्किल से छूटती हूं वहीं दूसरी उपाधि आ पड़ती हैं। वहां मणिरथ मिला। यहां मणिप्रभ मिला। भूत गया तो पलित आया। इससे तो मैं सरोवर में पड़कर मर गई होती तो कितना अच्छा होता। कम से कम ऐसी अनिच्छनीय घटना तो नहीं आ पड़ती जिसके पिता ने दीक्षा ली है ऐसा यह आदमी भी मेरे जैसी पर-स्त्री में लिपट जाता है ! मोह की कैसी विडम्बना है ? अब मैं क्या करुं ? मैं स्पष्ट मना कर दूं ? नहीं....नहीं....ऐसा करने जाऊं तो सभी बाजी बिगड़ जायेगी। अभी 'कुछ' युक्ति लगानी पड़ेगी। सबसे पहले पुत्र की संभाल लेनी पड़ेगी। मैंने कहा- ''पहले मेरे पुत्र से मिला दो। फिर दूसरी बात।'' मैंने प्रज्ञप्ति विद्या से जान लिया है कि तेरे पुत्र को मिथिलानगरी के पद्मरथ राजा ले गये हैं। उन्होंने रानी पुष्पमाला को दे दिया है। गूढ़गर्भा रानी पुष्पमाला ने पुत्र को जन्म दिया है- ऐसी घोषणा करके अभी उसका जन्मोत्सव मना रहे हैं। पुत्र की चिंता छोड़ दे। वह वहां सुखी ही बनेगा। अब तू मेरी हो जा। मेरी बनकर रहना। बोल, तेरी क्या इच्छा हैं ?

मैंने सोचकर कहा- ''अभी तो आप नंदीश्वर की यात्रा के लिये जा रहे हैं न ? मुझे भी आना है। मुझे पहले यात्रा करवाइए। उसके बाद हम देखेंगे।'' मुझे विश्वास था- पिता मुनि के समझाने से अवश्य यह अकार्य से पीछे हटेंगे जिसके पिता सर्वविरतिधार बने हो वह सर्वथा अयोग्य नहीं हो सकता। मेरी धारणा सच निकली। हम जब विद्या के बल से नंदीश्वर द्वीप पहुंचकर वहां के बावन शाश्वत चैत्यों के दर्शन करके मुनि श्री मणिचूड़ के पास पहुंचे। तब उनकी देशना सुनकर मणिप्रभ का सिर ठिकाने आ गया। मुनिश्री ने ज्ञान से अपने पुत्र के मनोभाव जान ही लिये थे। इससे ही उन्होंने देशना में ''परस्त्रीगमन करनेवाले नरक में कैसी भयंकर वेदना सहन करते हैं। यही विषय छेड़ा था। नरक का ऐसा आबेहूब वर्णन किया कि महाशूरवीरों की छाती कांपने लगे। सुननेवाले को ऐसा ही लगे- मेरे सामने ही परमाधामी नरक के जीवों को पीस रहे हैं। पेर रहे हैं, मार रहे है, मसल रहे हैं, हैरान-परेशान कर रहे हैं।

मुनि की देशना में ऐसी ताकत थी कि सुननेवाले हिल उठे। मणिप्रभ तुरन्त ही मेरे पास आकर माफी मांगने लगा- ''बहन ! तू मुझे माफ कर दे। अब से तू मेरी बहन है।''

महानुभाव ! आप तो मेरे उपकारी हैं। सरोवर में पड़ती हुई मुझे बचाई तथा नंदीश्वर के शाश्वत चैत्यों की यात्रा करवाई। आपके उपकार का क्या वर्णन करुं ? मैं भी गद्गद् होकर बोल उठी।

हमारी इस तरह बातें चल रही थी वहीं घ....र....र....र.... आकाश में से एक विमान आया उसमें से एक देदीप्यमान देव उतरा.... और उसने मुझे प्रदक्षिणा दी। वंदन करने लगा। मैं तो स्तब्ध ही हो गई। मैं कुछ बोलुं इसके पहले ही मणिप्रभ बोल उठा- ''ओ देव ! आप तो विबुध कहलाते हैं, विवेकी कहलाते हैं। मुनि भगवंत यहां पर प्रत्यक्ष विराजमान हैं, उन्हें छोड़कर आप एक स्त्री को प्रणाम करते हैं ? आपके अंदर इतना भी विवेक नहीं है।''

देव कुछ बोले इसके पूर्व ही मणिप्रभ के पिता मुनि मणिचूड़ बोल उठे- मणिप्रभ ! देव जो कर रहा है वह बराबर हैं। पूर्व भव का यह युगबाहु है, मदनरेखा का पति है। मरण के समय मदनरेखा ने समाधि दी, धर्म दिया, इसके कारण आसन्न उपकारी मदनरेखा को प्रथम नमस्कार कर रहा है वह योग्य ही हैं। अतः मणिप्रभ ने देव से क्षमा मांगी।

फिर देव ने मुझे कोई काम के लिये पूछा तब मैंने कहा- ''मुझे तो अब मोक्ष की झंखना है। संसार के इस परिभ्रमण से मैं ऊब गई हूं। लेकिन यह तो आप दे सकते नहीं हैं। तो अभी मुझे मिथिलानगरी में पहुंचा दे जिससे मैं मेरे नवजात पुत्र का मुख देखकर साधु धर्म का स्वीकार करुं।

देव मुझे मिथिलानगरी ले आये। वहां मंदिर में दर्शन करके साध्वीजी भगवंत के पास धर्म सुनने बैठी। देशना इतनी वैराग्य प्रेरक थी कि सुनते ही मेरी आत्मा उसी समय संयम ग्रहण के लिये उत्सुक बनी। वैराग्य इतना प्रबल बन गया कि पुत्र का मुंह देखने की इच्छा भी मर गई।

मैंने वहीं, उसी समय दीक्षा ग्रहण की। मेरे गुरुणीजी ने मेरा नाम ''सुव्रताश्री'' रखा। मदनरेखा से ''सुव्रताश्री''बनी हुई मैं साधना द्वारा कर्म क्षय कर केवलज्ञान पाकर संसार का संपूर्ण अंत लाकर मुक्ति पद की अधिकारी बनी।

(आगे और भी है...!)

महान आत्माओं की महानता था "रावण"

(रावण की गिनती महापुरूषों में होनेवाली कुछ घटनाएं)

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

माता ने कहा- जो पुत्र अपने पेतृक राज्य सम्पत्ति को ग्रहण न कर सके, ऐसे पुत्रों के होने का क्या मतलब ? आक्रोश भरे वचनों को सुन विभीषण ने कहा- दशमुख के सामने इन्द्र और वैश्रमण कौन ? दशमुख ने कहा- माता। मैं भयंकर अटवी में जाकर दो प्रहर में आठ अक्षरोंवाली विद्या को साध लूंगा और दश करोड़हजार के जाप का फल देनेवाले सोलह अक्षर वाले मन्त्र को साधूंगा। इस प्रकार माता ने द्वेषाग्नि की आग प्रज्जवलित कर दी।

रावण ने लंका नगरी पर आक्रमण कर धनद वैश्रमण को पराजित कर दिया। वैश्रमण ने ममत्व त्याग कर युद्ध भूमि में ही पंचमुष्टि लोच कर देवताओं द्वारा प्रदत्त वेशधारण किया।

एक दिन पुष्पक विमान में बैठकर रावण ने सम्मेत शिखर तीर्थ पर जाकर जिनेश्वर भगवंतों को नमस्कार किया। वहां के सेनापति ने रावण (स्वामी) के वाहन के रुप में 'भुवनालंकर' नाम के हाथी को वश में किया।

अष्टापद पर्वत रावण द्वारा उठाये जाने की बात अवधि ज्ञान से जानकर वाली मुनि ने सोचा-यह चैत्यों का निध्वंश करने का प्रयत्न क्यों करता है ? इसे मैं राग द्वेष रहित शिक्षा दूंगा। उसके बाद पैर के अंगुठे से दबाने पर पर्वत को उठाने वाला रावण खून की उल्टियां करने लगा और पृथ्वी से उठे, ऐसे राव (शब्द) करने लगा। इसी से वह ''रावण'' नाम से प्रसिद्ध हुआ। जोर की पुकार सुनकर रावण को छोड़ा। दशानन के नाम से पहचानने वाले तो विद्वदजन है ही, सामान्य लोगों में तो ''रावण'' नाम ही प्रचलित है।

मुनीश्वर वाली ने पूर्वानुसार इस बार भी दया कर उसे मुक्त कर दिया। रावण ने तीन प्रदक्षिणा कर वंदन किया। नमस्कार कर रावण ने अष्टापद पर्वत पर जाकर विधि पूर्वक पूजा की। बहिन से वीणा लेकर महासाहसिक दशानन भक्ति पूर्वक वीणा वादन करने लगा। तब वहां धरणेन्द्र ने आकर अरिहंत भगवान की पूजा कर रावण से कहा-गीत में रंजित मैं तुझसे तुष्ट हूं। वर मांगो। रावण ने कहा- वर लेते मेरी भक्ति को दाग लगने के समान है। खुश होकर नागेन्द्र ने अमोघशक्ति रुपविकारिणी विद्या दी। कहा जाता है कि रावण जब अष्टापद पर्वत पर वीणा बजाने में मस्त था, वीणा का तार टूट गया। भक्ति में भंगता न आये इसलिये उसने हाथ की नस निकालकर लघु लाघवी कला से तार के स्थान पर उस नस लगाकर अखण्ड भक्ति में लवलीन रहा। वहां उसे तीर्थंकर नाम कर्म के दलिक इकट्ठे करने का अवसर मिला।

दिग्यात्रा पर निकले रावण ने चौदह हजार विद्याधरों के स्वामी स्वर के साथ इन्द्र विजय करने को नर्मदा नदी के तट पर पहुंचकर पवित्र होकर मणिमय पाठ पर रत्नमयी जिन प्रतिमा रखकर नदी के कमलों से पूजा करने लगा तो नदी बहाव से हुए पूजा में विघ्न को रावण शिरच्छेदन मानता हुआ क्रोधित हुआ। नदी में जड़ क्रीड़ा कर रहे राजा सहस्त्रांशु जिससे पूजा दुषित हुई उसको बंधित करने रावण ने सैनिक भेजे। अंत में स्वयं रावण गया और अजेय होकर लौटा। सहस्त्रांशु ने दीक्षा लेकर रावण को राज्य सौंप दिया। जिन भक्ति प्रेमी रावण अपने साथ हर प्रवास में पूजा हेतु जिन प्रतिमा रखता था। इस तरह रावण महान आत्माओं की महानता था।

नारद ऋषि अन्याय-अन्याय लिखते हुए रावण से कहने लगे- राजपुर मे मरुत्त नामक मिथ्यादृष्टि यज्ञ कर रहा है और देवों की तृप्ति हेतु पशुओं का होम रहा है। मैंने उसे शरीर को सल भूमि, आत्मा को यज्ञी,तप को अग्नि, ज्ञान को घी, कषाय को पशु, प्राणी रक्षण को दक्षिणा, कर्मो को लकड़ी और रत्नत्रयी को वेदिका बताया। यह सुन क्रोधित हो मुझे मारने आया। इसलिये आपके पास आया हूं। रावण विमान से उतरकर यज्ञ स्थल पर आया। मरुत ने पैर धोकर आसन देकर पूजा की। रावण ने कहा- धर्म अहिंसा से होती है। मरुत ने यज्ञ रोक दिया।

✻ प्राय: जीव जिस परिचय में रहता है। उस परिचय रुप अपने को मानता है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव भी है। अनार्थ कुल में परिचय रखनेवाले जीव, अपने को दृष्टतापूर्वक अनार्य रुप मानता है और आर्यत्व में मति नहीं करता। जीव को सत्संग ही मोक्ष का परम साधन है। सत्संग जैसा अन्य हितकारी साधन हमने इस जगत में न देखा है न सुना है।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

मिथ्यात्वी की 10 संज्ञाएंः-

मिथ्यामतिनी रे दश संज्ञा जिके, अभ्याख्याननां भेदो की।
गुण-अवगुण नो रे जे करे पालटो, ते पामे बहु खेदो जी॥

इस पापस्थानक में मिथ्यात्व के मूल भेद के रुप में दश संज्ञाएं बताई गई है। जो गुण को अवगुण के रुप में और अवगुण-अर्थात् दोष को गुण के रुप में विपरीत आरोपण करके देखता है। यह अभ्याख्यान मिथ्यात्व का मूल रुप है। इसीलिए ऐसी मिथ्या विपरीत वृत्ति वाला बहुत दुःख पाता है। वे मिथ्याविपरीत वृत्ति की दस संज्ञाएं निम्न प्रकार है-

1- धर्म को अधर्म कहना, 2- और अधर्म को धर्म मानना। 3- सन्मार्ग को उन्मार्ग कहना, 4- और उन्मार्ग को सन्मार्ग कहना। 5- असाधु को साधु कहना, 6- और साधु को असाधु कहना। 7- जीव को अजीव कहना, 8- और अजीव को जीव कहना। 9- संसारी को मुक्त कहना, 10-और मुक्त को अमुक्त (संसारी) कहना।

धर्म क्षेत्र में अभ्याख्यानः-

अभ्याख्यान केवल संसार की प्रवृत्ति में ही होना है ऐसा नहीं है। धर्म के क्षेत्र में भी ऐसी वृत्ति काम करती है। इसलिये अभ्याख्यान दो भेद करते है।

अभ्याख्यानः-

1- छोटा सामान्य आरोप गुजराती में- आल

2- महा आरोप प्राल

अभ्याख्यान की वृत्ति धर्म के क्षेत्र में, तत्वज्ञान के सिद्धांत क्षेत्र में भी काम करती है। अतः तत्वों पर भी आरोप लगा देते हैं और महापुरुषों पर भी आरोप लगा देते हैं। उपर जो दश संज्ञाएं मिथ्यात्व की बताई है वे इस अभ्याख्यान के अंतर्गत क्यों गिनी जाती है ? चूंकि उनमें भी आरोपित भाव है। हम जो जैसा नहीं है उस पर वैसा आरोप कर देते हैं। उसी तरह जो तत्व नहीं है उस पर उस तत्व का आरोपण करना अभ्याख्यान है। जैसे जीव नहीं है उस पर (जड़पर) जीव का आरोप करना और उससे उल्टा अजीव पर जीव का आरोपण करके वैसे व्यवहार करना। इसी अभ्याख्यान की वृत्ति से लोग सच्चे तत्वज्ञान को, सच्चे दर्शन को भी बिगाड़कर विपरीत स्वरुप वाला बना देते हैं और झूठे दंभ को भी धर्म बना देते हैं। अतः यह भी मृषावाद ही है। झूठा ही है। जो धर्म नहीं है उस पर धर्म का आरोपण करके उसे मानना, जानना आदि प्रवृत्ति करना यह अभ्याख्यान का पाप ही हुआ। तत्वज्ञान के क्षेत्र में भी ऐसे कई लोग असत् में सत् का और सत् में असत् का आरोपण करके व्यवहार करते हैं। वायुभूति गौतम को जो शंका थी उसमें उन्होंने देह में ही आत्मा का आरोप कर रखा था। हाँ आत्मा है, यह मानता हूं लेकिन शरीर ही आत्मा है। शरीर से आत्मा भिन्न नहीं है। नास्तिक मत में देहत्मवादी है। देह को आत्मा मानने का पक्ष इसी अभ्याख्यान की मिथ्यावृत्ति का पापस्थान कहते हैं। अतः ऐसा पाप व्यवहार करने वाला कर्म बांध कर संसार बढ़ाता ही रहता है।

महापुरुषों पर महा आरोप :-

अभ्याख्यानी पाप की वृत्ति वाले जीव महापुरुषों को भी छोड़ते नहीं है ! उन पर भी भिन्न-भिन्न आरोप लगाते है। आरोपण करके बोलते है। उदाहरणार्थ देखिए- भगवान श्रीमहावीर के ऊपर भी झूठे आरोप लगाए गए। गोशालक जो कि उन्हीं का शिष्य बना था वह भी कितनी हद तक का अभ्याख्यानी था कि उसने प्रभु श्रीमहावीर के विषय में ऐसा कहा कि ये जिन भगवान नहीं है। जिन भगवान तो मैं हूं। वह अपनी जात को भगवान कहने लगा जबकि स्वयं कुछ भी नहीं था। मंखालिपुत्र गौशालक था। और प्रभु श्रीमहावीर भगवान होते हुए भी वे भगवान नहीं है। ऐसा आरोप खाड़ा किया और चारों तरफ प्रचार करने लगा।

उसी तरह भगवान श्रीमहावीर के बाद उन्हीं को मानने वाले उन्हीं के भक्तों ने भी अभ्याख्यानी वृत्ति से भगवान के ऊपर ऐसे-ऐसे आरोप लगाए हैं कि जिससे भगवान का स्वरुप ही चित्र विचित्र हो गया है। एक पक्ष तो कहता है कि भगवान श्रीमहावीर ने शादी की थी उनके एक पुत्री भी थी। उसकी भी शदी जमाली से हुई थी। यशोदा श्रीमहावीर की धर्म पत्नी थी। जिसका नामोल्लेख आगमों में है। इसका ठीक उल्टा दिगम्बर पंथ कहता है। नहीं-नहीं.... भगवान महावीर ने शादी की ही नहीं। न उनकी पत्नी है और न ही पुत्री है। एक और पंथ है जो यह कहता है कि श्रीमहावीर भी मुंह पर मुंहपत्ति बांधते थे। इस तरह एक ही भगवान को मानने वाले उन्हीं के भक्तगण अपने ही भगवान के विषय में ऐसे आरोप प्रत्यारोप करते हैं तो फिर प्रभु का स्वरुप क्या रहा ? वैसे ही दूसरी बात सिद्धांत की है। सिद्धांतों की बात भी ऐसी है कि उसमें भी

आरोप-प्रत्यारोप है। एक पक्ष कहता है कि जो स्त्रीयां मोक्ष में गई। जबकि दूसरा पक्ष इस बात को नहीं स्वीकारता वह उल्टा ही कहता है। वैसे ही केवलज्ञान होने के बाद भी केवली आहार लेते है क्योंकि ज्ञान तो आत्मा को होता है, चूंकि आत्मगुण है। जबकि आहार यह तो देहधर्म है। देह को आहार की आवश्यकता है। देह पुद्‌गलजन्य पौद्‌गलिंक है। आहार भी पौद्‌गलिक है। ''पुद्‌गलैः पुद्‌गला स्तृप्तिः'' श्रीमहावीर स्वामी को 42 वें वर्ष में केवलज्ञान हुआ और कुल आयु 72 वर्ष का था। तो 30 वर्ष प्रभु केवली के रुप में विचरे है। तो क्या 30 वर्ष तक बिल्कुल आहार नहीं लिया ? 30 वर्ष तक क्या यह पुद्‌गल देह बिना आहार-पानी के टिक सकता है ? अच्छा यह तो महावीर प्रभु का 30 वर्ष का काल है। लेकिन चौबीशी में अन्य-अन्य तीर्थकरों का सैकड़ों-हजारों वर्ष का केवली पर्याय का काल है। भगवान ऋषभदेव का 1 हजार न्यून ऐसा 1 लाख पूर्व का केवली पर्याय काल है तो क्या प्रभु ने इतने लम्बे काल तक आहार लिया ही नहीं तो शरीर कैसे टिका ? शरीर तो औदारिक ही था ? सब बातें सही है फिर भी दिगम्बर पंथ का यही कथन है कि केवली आहार नहीं लेते है। सोचिए ऐसी बातें छद्‌मस्थों ने उठाई है। किसी केवली ने ऐसे आरोप नहीं रखे हैं। अतः ये वाड़ेपन्थ, पक्ष सम्प्रदाय या फिरके ये सब छद्‌मस्थों के द्वारा खड़े किये गए हैं। किसी केवली सर्वज्ञ के द्वारा नहीं बनाए गए हैं। अभ्याख्यानियों के द्वारा ये महाकलंक लगाए गए हैं। प्रभु का और सिद्धांत-धर्म का स्वरुप कितना विकृत कर दिया ?

✻ अभ्याख्यानीयों ने दोषारोपण के कलंक कम नहीं लगाए है। यहां तक कह दिया कि महावीर ने मांसाहार किया था। इतनी बड़ी श्रेष्ठ जगत की अहिंसा की विभूति और उनके लिये ये शब्द कहने भी कितने शरमजनक लगते हैं ? लेकिन अभ्याख्यानी वैसे भी बेशरम ही होता है। उसे शरम कहां आती है ?

✻ कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य के विषय में कहते है कि वे अंतिम अवस्था में मुसलमान बन गये थे। मरते समय उनके मुंह से अल्ला शब्द निकला था। अब सोचिए इस बात के न हाथ-न पैर न सिर न धड़ फिर भी एक गप गोला फैंक दिया किसी अभ्याख्यानी का यह महापाप है।

✻ कोई कहते हैं कि वाचकवर्य श्रीउमास्वातिजी हमारे दिगम्बर आचार्य है। जबकि श्वेतांबर पक्षवाले श्वेतांबराचार्य मानते हैं। इतने बड़े महान आचार्य थे और उनका जीवन चरित्र नहीं मिलता है इसलिये अपने पक्ष में खींचने का प्रयत्न आरोपित भाव से ही किया जाएगा।

✻ आचार्य श्रीअभयदेवसूरी के विषय में विवाद जगाया है कि.... वे हमारे खतरगच्छी आचार्य थे ? आज भी कई, तपागच्छी मंदिरों में एक कोने में कहीं खतरगच्छाचार्य की प्रतिमा कोई बैठा देता है और फिर ये मान्यता उठानी कि नहीं ये मंदिर हमारा खतरगच्छ का है।

✻ वैसे ही बड़े-बड़े प्राचीन तीर्थस्थानों पर अपना अधिकार जमा कर और कोर्टो में सब कुछ करके.... ये तीर्थ हमारा है यह सिद्ध करने का वालिश प्रयत्न करना। जो अपना नहीं है उसे अपना बनाने के लिये आरोपित भाव से अपना बनाना यह अभ्याख्यान का ही काम है।

✻ ऐसी अनेक बातें है। अभ्याख्यान वृत्ति वाले छद्‌मस्थों ने महा आरोप-महादोषारोपण का पाप करके सैकड़ों बातें उपजाई है। इस पाप से कोई मुक्त नहीं है। इतना ही नहीं हद् के बाहर की बात तो यह है कि-नास्तिक वृत्ति वाले नौजवान यह भी कहते हैं कि महावीर हुए थे यह बात भी गलत है। यह तो सिर्फ हम लोगों को समझाने के लिये इन महाराजों ने यह एक श्रीमहावीर के नाम का रुपक खड़ा किया है। परन्तु महावीर आदि कोई हुए ही नहीं है। नास्तिक मतवाला मिथ्यादृष्टि तो कैसे भी गप्पे मार सकता है परन्तु उसे सिर्फ इतना ही पूछना चाहिये कि ये तेरे बाप है इस बात में तेरे पास क्या प्रमाण है ? कौन कहता है कि वे तेरे बाप है ? तेरी माँ तो बनाती है। झूठ भी बोलती है। अब शायद महा नास्तिक भी सिर खुजलाएगा। इस प्रकार से अभ्याख्यानी वृत्ति का नाटक बहुत बड़ा है। सारा संसार अभ्याख्यान का बहुत बड़ा घर है। यहां यही चलता है। ऐसा ही नाटक चलता है। साम्प्रदायिक भेद भी कई खड़े हुए हैं। मूल धर्म का स्वरुप भी काफी विकृत कर दिया गया है। इसलिये अभ्याख्यान यह मिथ्यात्व का मित्र है और इसीलिये अभ्याख्यान मृषावाद के पाप के अंतर्गत एक शाखा है। अभ्याख्यानी प्रायः सम्यक्त्व से दूर रहता है। क्योंकि सम्यक्त्व तो सत्य को सत्य स्वरुप में ही देखते-कहने की बात करता है। जो जैसा है उसे वैसा ही देखना, मानना और कहना है। लेकिन अभ्याख्यानी आरोपण करके चलता है। अतः स्वरुप उल्टा हो जाता है। विपरीत-मिथ्या स्वरुप देखते-कहने और मानने का काम मिथ्यात्वी करता है। अतः अभ्याख्यान को सम्यक्त्व का मित्र न बताकर मिथ्यात्व का मित्र बताया है। मिथ्यात्व की दृष्टिकी दस संज्ञा अभ्याख्यान मे ही है। **(आगे और भी है...!)**

बिटिया रानी...!

✽ पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीजी म. ''राजहंस''

प्यारी प्यारी बिटिया...!

पता नहीं कि तू मालूम है या नहीं ?

परन्तु कॉलेज में पढ़ती कई लड़कियों को घर से कॉलेज की फीस और टैक्स बुक के पैसे मिल जाते हैं। बस या ट्रेन का किराया या पेट्रोल के पैसे भी मिल जाते हैं।

परन्तु उनके महंगे परफ्युम्स और मेक-अप के रुपये उनके पिताजी के लिए देना शक्य नहीं बनता है। उन कइयों कन्याओं में से कुछ छोकरियों ने इस खर्च को निकालने का रास्ता खोज लिया है। अब रास्ता खूब ही हलका और नीच है।

I Think you can Understand.

कई लड़कियों की वृत्ति ऐसी है कि मेक-अप करना है, लड़कों को इम्प्रेस करने के लिये। लड़कों को इम्प्रेस करना है दुराचार करने के लिये। दुराचार करना है मेक-अप आदि के बजट के लिये। है ना सिर घुम जाए ऐसी दास्तान।

बेटा...!

मैं जानता हूं कि यह सब सुनकर तुझे घृणा हो रही होगी।

My Point is This.

किसी भी वस्तु की जीवन में ऐसी आवश्यकता खड़ी न होने देनी चाहिये कि वे वस्तु अपने पर राज करें। और अपने Principals तोड़ने के लिये अपने को मजबूर बना दें। लाचार बना दें। अपने को अपने सांस्कृतिक परम्पराओं से पतित कर दें।

प्यारी बिटिया...!

चारित्र अपनी आत्मा है। That's our self का खून करके जो सुख मिलता है वह वास्तव में मुर्दो का श्रृंगार मात्र है।

हमारी संस्कृति तो चारित्र के मामले में कितनी महान थी। जो स्त्रियां रुपवती थी वे अपने शील-सदाचार के लिये पीठ पर कपड़े की पोटली बांधकर चलती थी ताकि देखनेवालों को लगे कि यह कुकड़ी है।

अपने यहां सभी स्त्रियां घुंघट निकालती थी। वह बंधन नहीं था सुरक्षा थी। आज वेस्टर्न कल्चर के अंधे अनुकरण में लाज-घुंघट तो गए सिर ढकना भी गया। इतना ही बस नहीं है, चुस्त कपड़े आ गए। शार्ट कपड़े पहने जाने लगे। इस रामायण में एक समांतर घटना यह बनी कि जो जो शरीर का भाग खुला दिखने लगा उसे सजाने-संवारने की उपाधियां बढ़ने लगी। दर्पण के सामने खड़े रहने का समय भी बढ़ने लगा। दर्पण के सामने खड़े रहने का समय भी बढ़ने लगा।

यदि हिसाब किया जाए तो पता चलेगा कि अपनी छोटी सी जिंदगी का अमूल्य समय इन सभी साज-सज्ञा भी ही बेकार हो गए।

अभी एक पति ने अपनी पत्नी से कहा-''सुना...! आजकल फोन आता है और उसे रिसिव करने के साथ ही बात करनेवालों के आमने-सामने फोटो दिखने लग जाते हैं।

तब पत्नी ने कहा- ''तो तो फोन रिसीव करने से पहले मेकअप करने दौड़ना पड़ेगा।''

लाख रुपये का सवाल है कि यह सब किसके लिए ? I Mean किसे दिखाने के लिए ? गाँव को, अपने शहर के लोगों को ?

जानती हो बेटा...!

जिसका सौंदर्य सम्पूर्ण ग्रामवासियों के लिए या शहरीजनों के लिए होता है, उस स्त्री को अपने यहां पर ''नगरवधु कहकर पुकारा जाता था जिसका पर्यायवाची शब्द है ''वैश्या''।

एक कुलिन स्त्री का सौंदर्य मात्र उसके पति के लिये होता है। यह स्वाग्रह की बात नहीं है बल्कि साहजिक है। निर्मल प्रेम, सहज आत्मीयता और स्वस्थ दाम्पत्य जीवन की यह आधारशीला है।

मगर अफसोस...!

इसे गुमा कर आज लाखों घर टूट गए हैं। बिखर गये है और लाखों कोड़भरी कन्याओं की कीमत फूटी कोड़ी की भी नहीं रही है।

प्यारी बेटी...!

दुनिया क्या कर रही है, यह तू दो मिनिट के लिये भूल जा और न्यूट्रली विचार कर कि वेस्टर्न ड्रेस पहनकर, मेक-अप करके, परफ्युम्स छींट कर खुले राजमार्गों पर अपने आपका प्रदर्शन करके कॉलेज के हजार पांच सौ लड़के उस कॉलेज कन्या को घूर-घूरकर देखें, पांच-पच्चीस लड़कों के साथ मजाक-मस्ती करके घर आनेवाली लड़की के चारित्र की भूमिका क्या हो सकती है ?

जानती हो ना बेटी...!

जो सबकी होती है वह किसी की भी नहीं होती है। झांकी बाजी में और जीवन में खूब बड़ा अन्तर होता है।

एक रामू फिल्म सिटी में जा चड़ा। वहां कोई प्रेस रिपोर्टर जा रहा था। रिपोर्टर एक एक्टरनी से मिला और इन्टरव्यू प्रारंभ हुआ। रामू भी पास में ही खाड़ा था।

संवाद प्रारंभ ही हुआ था कि वहां एक व्यक्ति आया। तो एक्टरनी ने परिचय कराते हुए कहा- इन्हें मिलिये, ये मेरे हसबेंड है।

रिपोर्टर बोला- ''आपके सभी पतियों से मिलकर मुझे बहुत खुशी होती है।''

सुन रही हो ना बेटा...!

अमेरिका या युरोपियन लेडी कि उसके चौथे पति की आठवी पत्नी है उसके जीवन की यातनाओं के बारे में तू समझ सकती हो तो तुझे मेरे कहने का तात्पर्य समझ में आ सकता है।

अपने यहां ऐसी स्थिति नहीं है। मगर हम उस दिशा में आगे बढ़ रहे है, इसमें कोई दो मत नहीं है।

बेटा...!

वहां स्त्रीयां भी सिगरेट, शराब और ड्रग्स की लतवाली हो जाती है, इस कारण वे चित्र-विचित्र रोगों का भोग बनकर मानस-चिकित्सक की मुलाकात लेने लग जाती है।

यह सब कहे जाने वाले स्त्री स्वातन्त्र्य का मूल्य है जिसके अन्तिम हफ्तों में पागलपन और आत्महत्या भी हो सकती है।

- तेरे प्यारे-प्यारे डैडी

तृष्णा की तड़फ

एक दानी राजा के यहां प्रतिदिन प्रातःकाल में याचकों का समूह आता और वांछित वस्तु प्राप्त कर- संतुष्ट हो वापस लौट जाता था। एक दिन एक याचक आया और उसने राजा के सामने अपना भिक्षा पात्र रख दिया। राजा ने उस पात्र में अनेक स्वर्ण मुद्राएं डाल दी-परन्तु राजा आश्चर्यचकित हो देखता है कि- वह पात्र एकदम खाली है। राजा ने बार-बार स्वर्ण मुद्राओं से उसे पूर्ण किया, परन्तु वह हर बार खाली ही दिखाई दिया।

चकित हो राजा ने इसका कारण-रहस्य-भिक्षुक से पूछा- याचक भिक्षुक नहीं एक मनीषी संत था, उसने उत्तर दिया- ''हे राजन्! यह पात्र मनुष्य की अस्थियों से निर्मित है, अतः इसमें इतनी तीव्र तृष्णा है कि यदि इसको कुबेर के कोष से भी भर दिया जाये तो भी यह रिक्त ही रहेगा।''

ज्ञानियों ने कहा है- ''शतमेकं सहस्रं च सहस्रं शत-वानपि।'' (एक की प्राप्ति में सैकड़ों की तृष्णा एवं सैकड़ों की प्राप्ति में सहस्रों की इच्छा है)

मानव तृष्णा आकाश के समान असीम है। इन अनन्त तृष्णाओं की काली छाया से उसका निर्मल चक्र-सा आत्मदेव आवेष्टित रहता है, अतः उसे दिव्य सौंदर्य की अनुभूति नहीं हो पाती है।

अतः मानव मन के उस विस्फोटक विकार के शमन हेतु उसे संतोष रुपी दिव्य रसायन का नित्य सेवना करना चाहिये। तभी भव रोगों से मुक्ति संभव है।

जैन साधु-साध्वी दुनिया का एक अजूबा....

जो विवाह न करता हो,
जिसका परिवार न हो,
पैर में जुते न पहनता हो,
जिसके पास राशन कार्ड,
आधार कार्ड, वोटर कार्ड, पेन कार्ड,
ड्राईविंग लाईसेंस आदि न हो,
जिसे पासपोर्ट की जरुरत न हो,
जिसे दर्जी, नाई, मोची, सुथार, लुहार, धोबी, तैली,
वणिक आदि लोगों की जरुरत न हो
और फिर भी जो सदैव सुखी रहे,
तो आपको कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं,

जैन साधु-साध्वी के रुप में ऐसे हजारों श्रमण भगवंत आपके आसपास विचरण करते हुए नजर आ जायेंगे।

भारत का संविधान 1950 में बना था और अब तक 62 सालों में इसमें 100 से अधिक संशोधन हो चुके है, परन्तु एक संविधान आज से 2576 वर्ष पूर्व शासन स्थापना के दिन भगवान श्रीमहावीर ने साधु-साध्वीयों के लिए बनाया था जो आज तक अपरिवर्तित है।

2576 वर्ष पूर्व जैन साधु-साध्वीजी जो जीवन जीते थे, आज के आधुनिक चकाचौंध भरे युग में भी वे लगभग वैसा ही जीवन जी रहे हैं।

श्रद्धा, जानकारी एवं उद्यम : रत्नत्रयी

✽ कहे कलापूर्ण सूरी से

भगवान के मार्ग पर चलने के लिये जीवन में तीन बातें लानी आवश्यक है- श्रद्धा, जानकारी एवं उद्यम। इन्हें ही हम जैन परिभाषा में रत्नत्रयी कहते है। रत्नत्रयी ही मोक्ष मार्ग है।

भगवान या भगवान का मार्ग अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुआ। इसका कारण मुख्यतः श्रद्धा का अभाव है। प्रभु में प्रभुता नहीं दिखाई दी। मार्ग में मार्ग नहीं दिखाई दिया। मोक्ष किसे मिले ?

ज्ञान आदि हमारे भाव-प्राण है। यदि इनकी उपेक्षा करें तो कैसे चलेगा ? भाव-प्राण के कारण ही द्रव्य प्राण प्राप्त हुए हैं। भाव-प्राण रुपी आत्मा चली जाये तो क्या द्रव्य-प्राण का कोई मूल्य रहेगा ?

प्रभु में प्रभुता दृष्टिगोचर न हो, श्रद्धा नहीं जमे, तब एक मोक्ष-मार्ग कदापि खुलने वाला नहीं है। **''तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइअं।''** इतना बोलने मात्र से श्रद्धा नहीं आती। श्रद्धा कदापि शाब्दिक नहीं होती, आंतरिक होती है। श्रद्धा का जन्म हृदय की भूमि पर होता है। श्रद्धा के द्वारा हम प्रभु में विद्यमान प्रभुता जान सकते है। प्रभु में प्रभुता दृष्टिगोचर होना ही सम्यग्दर्शन है।

✽ हरिभद्रसूरीजी योगदृष्टि समुच्चय में कहते हैं- हम वास्तविक रुप में जीव कब कहलाते हैं ? जब हम ज्ञान आदि गुणों को जान लें तब।

मित्रादृष्टिमें जीव आने पर ही प्रथम गुणस्थान यथार्थ गिना जाता है। इससे पूर्व का गुणस्थान केवल नाम का होता है। उस प्रकार जीव कब कहलायेंगे ? जब भीतर के गुण जान लें तब। इससे पूर्व तो नाम के जीव। बाकी जड़ के भाई।

✽ कृपा करके आप गुरु बनने का प्रयत्न मत करना, शिष्य बनने का ही प्रयत्न करना। ऐसा करोगे तो ही विनय आयेगा। विनय आयेगा तो बाकी सब स्वतः ही आ जायेगा। विनय ही पात्रता प्रदान करता है।

✽ जिस तरह घुड़सवार के पास से घोड़ा नहीं छूटता, उस प्रकार विनय का निग्रह करने वाले के पास से विनय नहीं छूटना चाहिये।

जिस प्रकार 45 आगम, आगम कहलाते है, उस प्रकार उन पर की गई टीका-चूर्णि आदि भी आगम ही है। टीका-चूर्णि तो आगम के अंग है। अंगों को छोड़कर आप पुरुष को कैसे मान सकते है ?

पू.आनन्दधनजी का कथन हैः-

''चूर्णि,भाष्य,सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति-परंपर अनुभव रे,
समय-पुरुष ना अंग कह्या ए, जे छेदे ते दुर्भव्व रे....

जो लोग (स्थानकवासी) टीका आदि को नहीं मानते, उनके लिए ऐसा लिखा है।

आगे बढ़कर कहूं तो हरिभद्रसूरीजी के ग्रंथ भी आगम कहलाते है। क्योंकि वे आगम-पुरुष थे। उन्होंने आगमों को जीवन में पचाया था, आत्मसात् किया था। उपा. यशोविजयजी म. का कथन है कि हरिभद्रसूरीजी के योग-ग्रंथों के बिना आप आगमों के रहस्य नहीं जान सकते।

✽ विनय-निग्रह अर्थात् विनय-गुण ऐसा आत्मसात् हो कि नींद में भी विनय जाये नहीं। ऐसा विनीत शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करके सांप को भी पकड़ने के लिये जाये, गुरु-आज्ञा से सचित्त भी वहोर लाये और गुरु यदि दिन को रात कहे तो भी वह 'तहत्ति' कहे।

विशेषतः छेद ग्रंथ पढ़ाने से पूर्व गुरु यह जानने के लिए ऐसी परीक्षा करते हैं कि शिष्य परिणत, अपरिणत या अतिपरिणत्त है ?

✽ पांच प्रतिक्रमण (आवश्यक सूत्र) पूर्ण रुपेण अर्थ सहित आते है ? अच्छी तरह कितनों को आते होंगे ?

प्रकाश-विहीन दीपक कार्यकारी नहीं बन सकता, उस प्रकार अर्थ के बिना सूत्र कार्यकारी नहीं बन सकते।

✽ श्रद्धा (सम्यग्दर्शन), जानकारी (ज्ञान) अथवा उद्यम (चारित्र) में जितना कम प्रयत्न हो उतनी अपनी मोक्ष की इच्छा कम है, यह मानें। उपाय में प्रयत्न कम उस प्रकार उपेय की इच्छा कम ही माननी रही। धीरे चलने का अर्थ ही यह है कि मंजिल पर पहुंचने की शीघ्रता नहीं है।

✽ अपने पू. उपा. यशोविजयजी म. का कथन है-

''जिहां लगे आतम द्रव्यनूं, लक्षण नवि जाण्युं,
तिहां लगे गुणठाणुं भलुं, किम आवे ताण्युं...?

नरसैया कहते है-

''जिहां लगे आतमातत्व चिन्यो नहीं,
तिहां लगे साधना सर्व जूठी।''

इस आत्मा को कब जानेंगे ? हम इसमें कब रमण करेंगे ? रत्नत्रयी आत्मा में जाने के लिए ही है।

✽ कोई गृहस्थ कमाई करके लाया हुआ धन वैसे ही नहीं रख देता, खो जाये वैसे नहीं रखता। क्या हम ज्ञान रुपी धन उस प्रकार संभालते है ? कि यह सब भूल गये ? आज

कितना कण्ठस्थ है ? हम करने के समय याद कर लेते है, बाद में एक ओर रख देते हैं।

संस्कृत का अध्ययन करने वालों को पूछो- स्वाध्याय अब ताक पर तो नहीं रख दिया न ?

यदि अध्ययन किया हुआ याद हो तो अभिमान न करें। ज्ञान अभिमान करने के लिये नहीं है, अभिमान नष्ट करने के लिये है। यदि अभिमान करने गये तो जो है वह भी चला जायेगा। जिस किसी वस्तु का अभिमान हुआ, तो वह वस्तु हमारे पास से चली जाएगी। प्रकृति का यह सनातन नियम है।

✻ मद्रास (चैन्नई) में तो ऐसी स्थिति आ गई थी कि लगभग अन्त समय निकट आ गया ! मुहपत्ति के बोल भी भूल गया। उस समय ऐसी आशा कैसे रखी जा सकें कि बच जाऊंगा और गुजरात में आकर इस प्रकार वाचन भी दूंगा। परन्तु उस समय भगवान ने मुझे बचाया। दूसरा कोई क्या कर सकता है ? भगवान के बिना किसका सहारा ? माता-दिवाकर सूरीजी भगवान के साथ माता-पिता आदि का संबंध जोड़ने का कहते हैं। उस समय मेरा ही लिखा हुआ (ज्ञानसार आदि) मुझे ही काम लगता।

✻ स्वदर्शन में निष्णात बन कर श्रद्धालु बनने के बाद ही पर-दर्शन में निष्णात बनने का प्रयत्न करना या दूसरा पढ़ना। उसके बिना टेढ़ा-मेढ़ा पढ़ने गये तो मूल मार्ग से भ्रष्ट हो जाओगे।

✻ हमारा मोक्ष रुका हुआ है, परन्तु भरत क्षेत्र में से मोक्ष रुका हुआ है, यह न मानें। महाविदेह में से अपहृत किसी मुनि का यहां से अब भी मोक्ष हो सकता है, ऐसा सिद्धप्राभृत में उल्लेख है।

मोक्ष के लिये मनुष्य लोक चाहिये। मनुष्य-लोक से बाहर मोक्ष में नहीं जा सकते।

✻ तप क्रिया आदि की शक्ति होते हुए भी उसे छिपाना अर्थात् अपने ही हाथों अपनी मोक्ष गति धीमी करनी।

✻ कई वस्तु बार-बार आती रहे तो थकना नहीं, वे भावित बनाने के लिये आती है, यह माने 'नवकार' कितनी बार गिनना चाहिये ? 'करेमि भंते' कितनी बार बोलना चाहिये ? कम से कम नौ बार। ये सूत्र भावित बनाने है।

पांचों प्रकार का स्वाध्याय एक प्रकार का तप है। स्वाध्याय तो ऐसा तप है जिसकी तुलना कोई अन्य तप कर नहीं सका और न कर सकेगा।

✻ स्वाध्याय का चौथा प्रकार ''अनुप्रेक्षा'' है। अनुप्रेक्षा अर्थात् कवि की उत्प्रेक्षा नहीं। जो पढ़ें है उसकी ही प्रेक्षा करनी है।इस प्रकार की अनुप्रेक्षा सभी कर सकते हैं। उसके लिये महान प्रतिभाशाली बनना आवश्यक नहीं है।

✻ आज आप में बुद्धि अधिक हो तो मानव की पूर्वजन्म में ज्ञान की साधना जोरदार की है। अब उस बुद्धि का कहां उपयोग करें ?

यहां तो कहते है कि बुद्धि अधिक हो या अल्प, परन्तु ज्ञान का प्रयत्न चालू ही रखें।

ज्ञान ही ऐसी सम्पत्ति है, जिसे हम परलोक में भी साथ ले जा सकते है। हमारी उपाधि, देह आदि सब यहीं रहने वाले हैं, यह तो पता है न ?

✻ पास के कमरे में कोई बीमार हो तो भी हम नहीं जाते, परन्तु अपने भगवान कैसे है ? चंडकौशिक के वहां बिना बुलाये गये। भगवान को चंडकौशिक भयंकर रुप से बीमार प्रतीत हुआ। इसलिये सहज ही परोपकारी स्वभाव के कारण भगवान वहां गये। भगवान चंडकौशिक के कोई सम्बन्धी नहीं थे, ऐसा भी नहीं सुना कि उनका पूर्वभव का कोई सम्बन्ध हो। फिर भी भगवान गये। अन्य कोई सम्बन्ध हो या न हो, जीवत्व का सम्बन्ध तो है न ?

✻ एक बार आप चुनाव में चुने जाकर उच्च पद पर पहुंच जाओ, परन्तु वहां जाकर ऐश-आराम ही करो, जनता का कोई कार्य न करो तो जनता क्या आपको पुनः चुन कर भेजेगी ?

पांचवें परमेष्ठी के उच्च पद पर हम सब पहुंचे हुए है। अब यदि यहां कार्य न करें तो क्या यह सब पुनः मिलेगा ? जिस वस्तु का हम सदुपयोग न करें, प्रकृति पुनः हमको वह वस्तु नहीं देती। प्रकृति का यह नियम अच्छी तरह समझ लेना।

हमारे भीतर बुद्धि कदाचित अल्प हो तो भी प्रयत्न तो नहीं छोड़ना चाहिये। बुद्धि हमारे हाथ में नहीं है परन्तु प्रयत्न तो हाथ में है। प्रयत्न करते रहे। अपने आप ज्ञान बढ़ेगा। कदाचित न बढ़े तो भी क्या ? आपका प्रयत्न तो निरर्थक नहीं है। कदाचित आप पूरे दिन में एक गाथा, अरे आधी गाथा भी कर सकते हो तो भी प्रयत्न करना बंध मत करना।

✻ आप ज्ञान में पुरुषार्थ करते है, स्वाध्याय करते रहते हो, तब प्रति पल ढेर सारे कर्मो का क्षय करते रहते हो, यह न भूलें।

बहु कोड़ी वरसे खपे, कर्म अज्ञाने जेह,
ज्ञानी श्वासोच्छवासमां, करे कर्मनो छेह....

ज्ञान की यह महिमा जानने के बाद आप ज्ञानी बनना चाहेंगे या अज्ञानी ? आप पसन्द कर लें।

वेध एवं वेधशालाओं की परम्परा

✻ डॉ. विनयकुमारजी पाण्डेय

ज्योतिषशास्त्रों में वेध एवं वेधशालाओं का अन्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। ब्रह्माण्डस्थ ग्रहननक्षादि पिण्डों की अवलोकन को वेध कहा जाता है। संस्कृत व्याकरण में वेध व्यत् धातुओं से निष्पन्न होता है। परिभाषा रुप में नग्न नेत्र या शलाका, यष्टि, नलिका, दूरदर्शक, इत्यादि यंत्रों के द्वारा आकाशीय पिण्डों का निरीक्षण ही वेध है। नलिकादि यंत्रों से ग्रहों के विद्ध होने के कारण ही इस क्रिया का नाम वेध विश्वविश्रुत है। दृष्टि एवं यंत्रभेद से वेध दो प्रकार का होता है।

दृष्टिवेध भी अन्तर्दृष्टि वेध एवं बाह्यदृष्टि वेध से दो प्रकार का होता है। यहां महर्षियों द्वारा यम-नियम, आसन-प्राणायामादि तपस्याओं से भक्ति-ज्ञानजन्य नेत्र द्वारा ब्रह्माण्डस्थ पिंडों के अवलोकन को अन्तर्दृष्टिवेध तथा स्व-स्व नग्न नेत्र द्वारा आकाशस्थ पिण्डावलोकन को ब्राह्यदृष्टि वेध माना जाता है। जब हम चक्रनलिका, शंकु, दूरदर्शक आदि वेध-उपकरणों से सूर्यादि ज्योतिष पिण्डों को देखते है तो यंत्रवेध होता है।

वैदिक काल से ही नक्षत्रों, तारापुंजों, सप्तर्षिमण्डल एवं नक्षत्रों की युति-अन्तर आदि का वर्णन मिलता है, जिनका ज्ञान वेध के बिना संभव नहीं था। वेदों में वर्णित आकाशीय घटनाओं का उल्लेख वेध-संबंधित कुछ साक्ष्य उपस्थित करता है-

''अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः''
(ऋक्. 10/85/2)

वेदों के अवलोकन से प्राप्त ज्योतिषीय तथ्यों के अवगमन द्वारा सारांशरुप में कह सकते हैं कि वैदिककाल में भी वेधा-परम्परा प्रचलित थी परन्तु किन स्थलों (वेधशालाओं)- पर किन साधनों (यंत्रों)- द्वारा वेध सम्पादित होते थे, इस विषय में दृढ़तापूर्वक कुछ भी कहना बड़ा ही कठिन होगा।

शूल्बसूत्रों में यज्ञ-सम्पादन के प्रसंग में कुण्ड-मण्डपादि-साधनों के लिये शंकुद्वारा दिग्-साधना का उल्लेख प्राप्त होता है। महाभारत काल में ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का समुचित ज्ञान था। शल्यपर्व में शुक्र एवं मंगल के चन्द्रमा से युतिका वर्णन प्राप्त होता है। भीष्मपर्व में तो ग्रहों की युति-अन्तरादि विषयों के अनेक उदाहरण उपलब्ध है। सूर्यसिद्धांत ज्योतिषशास्त्र का प्रथम सिद्धांत ग्रंथ स्वीकृत है। इसके स्पष्टाधिकारियों के 14 वें श्लोक में स्पष्ट वर्णन है कि जिस विधि से ग्रह विधि से ग्रह दृष्टि में उपलब्ध होते हैं, उस क्रिया को कह रहा हूं। ग्रंथ के अन्त में गोल, बीज, शंकु, कपाल एवं मयूर इत्यादि यंत्रों का वर्णन मिलता है।

परन्तु वहां भी यंत्रों के निर्माण एवं प्रयोग की विधि नहीं दी गई है, फिर भी वेधविधि विकास पथ में अग्रसरित दिखाई देती है। ज्योतिष शास्त्रीय सिद्धांत ग्रंथ में ''आर्यभटीयम्'' उपलब्ध है। इसकी रचना 398 शक में आर्यभट ने की थी। इस ग्रंथ में कालमापक यंत्र की निर्माण एवं प्रयोगविधि निर्दिष्ट है तथा शंकु यंत्र का भी वर्णन मिलता है। इसके बाद मध्य युगीय परम्परा में वेध की दिशा में क्रमशः सार्थक प्रयास दिखायी देता है। वराहमिहिर के पंचसिद्धांत में वेध-सम्पादन पूर्वक बीज संस्कार भी दिखाई देता है। वराहमिहिर के अनन्तर वेध परम्परा में ब्रह्मगुप्त का महत्वपूर्ण योगदान है। इनका जन्म 520 शकाब्द में हुआ था। ब्रह्मगुप्त महान् दैवज्ञ वेधकुशल एवं दृक्सिद्ध ग्रहों के पोषक थे। उन्होंने वेध द्वारा यह अनुभव किया कि प्रचलित विभिन्न सिद्धांतों के द्वारा दृक्सिद्ध ग्रह प्राप्त नहीं होते। अतः ब्रह्मगुप्त ने स्फुट दृक्सिद्ध ग्रहों के आनयन के लिये ''ब्राह्मस्फुट सिद्धांत'' की रचना की। इस ग्रंथ में स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है कि नलिकादि यंत्रों द्वारा स्पष्टतर बीज का साधन कर उससे संस्कृत ग्रहों द्वारा ही निर्णय एवं आदेश करना चाहिये। ब्रह्मगुप्त के बाद 1442 शकाब्द तक वेध परम्परा बुद्धिपथ में दिखायी देती है। इस बीच मुंजाल, श्री धराचार्य, श्रीपति, भास्कराचार्य, बल्लालाल सेन, केशवार्क, महेन्द्रसूरि, मकरन्द, केशव, ज्ञानराज इत्यादि वेधनिपुण दैवज्ञों के प्रयास वेध की दिशा में अन्यतम स्थान रखते हैं। दृक्सिद्ध ग्रह साधन एवं वेधपरम्परा में केशवदैवज्ञ तथा उनके पुत्र गणेशदैवज्ञ का भी महत्वपूर्ण स्थान है। केशवदैवज्ञ वेधक्रिया में अतीव दक्ष दिखायी देते हैं। 1418 में शक के लगभग इन्होंने ग्रहकौतुक नामक करणग्रंथ की रचना वेधसिद्ध ग्रहों के आधार पर की। ग्रहकौतुक की स्वकृत मिताक्षरा टीका में अपने द्वारा किये गये गये वेध का जैसा स्पष्ट वर्णन इन्होंने दिया है, वैसा अन्यत्र ग्रंथों में नहीं दिखाई पड़ता। कालान्तर से इनके ग्रंथ को भी वेध द्वारा

स्थूल देखकर इनके पुत्र गणेशदैवज्ञ ने वेध द्वारा प्राप्त निष्कर्षों से ग्रहलाघव नामक करणग्रंथ की रचना की। इसके बाद लगभग दो शताब्दियों तक ज्योतिष एवं वेध परम्परा का प्रचार-प्रसार सामान्य गति से चलता रहा। इसके बीच अनेक विद्वान हुए, जिनमें कमलाकर भट्ट एवं मुनीश्वर आदि प्रमुख हैं। इनके ग्रंथों में भी वेध-संबंधी पूर्वागत परम्परा का ही परिपालन है। इस तरह सूर्यसिद्धांत या आर्यभटके काल से आरम्भ कर लगभग 15 वीं शताब्दी तक मुख्यतया शंकुयंत्र, घटीयंत्र, नलिकायंत्र, यष्टियंत्र, चापयंत्र, तुरीययंत्र, फलकयंत्र, दिगंशयंत्र, एवं स्वयंवह यंत्र का प्रयोग दिखायी देता है।

यद्यपि इस काल में वेधप्रक्रिय विकसित हो चुकी थी, नये यंत्रों का आविष्कार भी प्रचलन में था, परन्तु स्थायी वेधशालाओं की चर्चा कहीं प्राप्त नहीं होती।

15 वीं शताब्दी तक यूरोप एवं अरब देशों में वेध प्रक्रिया बहुत विकसित हो चुकी थी। हिपार्कस, टालमी इत्यादि विद्वानों ने अपनी वेधक्षमता से अनेक नूतन तथ्य उपस्थापित किये थे। सन् 1394 ई. एवं 1449 ई. के मध्य तैमूरलंग के पौत्र उलूगबेग समरकन्द का बादशाह एवं खगोलविद्या का प्रेमी था। अतः इसने अपने राज्य में एक वेधशाला का निर्माण कर वेध द्वारा ग्रह-नक्षत्रों की अनेक सारणियां निर्मित की थी। 15 वीं शताब्दी के अनन्तर कालक्रम से वेधविषयक ज्ञान में वृद्धि हुई। पूर्व प्रचलित शंकुयष्टिनलिका इत्यादि यंत्रों के स्थान पर धातुनिर्मित लघु यंत्रों का प्रयोग होने लगा। कालान्तर में लघु यंत्रों के परिणाम की स्थूलता देखकर ईट-पत्थर एवं चूर्ण इत्यादि से बड़े आकार के यंत्रों एवं विस्तृत वेधशालाओं का निर्माण एवं प्रयोग होने लगा।

भारतीय वेध-परम्परा का स्वर्णकाल महाराज सवाई जयसिंह के काल से प्रारंभ होता है। यद्यपि जयसिंह के पूर्ववर्ती वेधकुशल दैवज्ञों ने वेधशालाओं का निर्माण कर वेध कार्य सम्पादित किया था तथापि वेधशालाओं की परम्परा में सवाई जयसिंह की तरह सुव्यवस्थित एवं व्यापक कार्य भारतीय ज्योतिषशास्त्र के इतिहास में नहीं दिखाई देता। इन्होंने जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी तथा मथुरा में वेधशालाओं की स्थापना की।

सवाई जयसिंह की इच्छा से इनके गुरु जगन्नाथ सम्राट ने दिल्ली-जयपुर आदि वेधशालाओं में वेध सम्पादित कर प्राप्त परिणामों की समीक्षापूर्वक अरबी भाषा में ''जिज-ए-मुहम्मदशाही'' तथा संस्कृत भाषा में ''सिद्धांत सम्राट'' नामक ग्रंथों की रचना की। जयसिंह के अनन्तर आधुनिक वेधकर्ताओं में सर्वप्रथम वेंकटेश बापूशास्त्री केतकर महोदय का नाम स्मरणीय है। इन्होंने प्राच्य-पाश्चात्य ग्रहगणित के समन्वय से 1818 शक में सूक्ष्मसिद्धांतमंडित ''केतकीग्रहगणित'' नामक ग्रंथ की रचना की है। इसी क्रम में सन् 1835 ई. के उड़ीसा प्रांत के सामन्त चन्द्रशेखर का भी वेध के क्षेत्र में योगदान स्मरणीय है। इन्होंने दृगणितैक्य-सम्पादन के लिये प्राचीन ग्रंथों में उद्धृत यंत्रवर्णन के अनुसार कुछ यंत्रों का निर्माण कर वेध द्वारा ''सिद्धांतदर्पण'' नामक ग्रंथ की रचना की। ज्योतिष शास्त्र की आधुनिक वेध-परम्परा में डॉ.मेघनाद साहा आदि विद्वान स्मरणीय हैं।

13 वीं शताब्दी में ''पोप ग्रिगरी'' द्वारा रचित ''वाशिंगटन'' वेधशाला पाश्चात्यदेशीय वेधशालाओं में उपलब्ध सबसे प्राचीनतम वेधशाला है। अमेरिका में तीन वेधशालाएं प्रमुख है- 1-लिंगवेधशाला, 2- प्रो.लावेलकी वेधशाला। अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत में ''फ्लोमर'' पर्वत पर स्थित वेधशाला आधुनिक वेधशालाओं में अग्रणी है। आधुनिक भारतीय वेधशालाओं में मद्रास वेधशाला, तमिलनाडु-प्रदेशस्थ कोडाईकनाल वेधशाला, नीलगिरि पर्वत पर स्थित उटकमण्ड-वेधशाला, उस्मानिया वेधशाला आदि प्रमुख है।

राजस्थान प्रांत के उदयपुर नगर में फतेहसागर जलाशय के निकट स्थित उदयपुर वेधशाला और उत्तरांचल प्रदेश के नैनीताल शहर में स्थित नैनीताल वेधशाला भी देश की श्रेष्ठ वेधशालाओं में परिगणित है। इन आधुनिक वेधशालाओं के अतिरिक्त राष्ट्र के अनेक भागों में कृत्रिम तारामंडल भी स्थापित हैं।

पंच परमेष्ठी से पंचाचार की शुद्धि

अरिहंत के ध्यान से ज्ञानाचार की शुद्धि होती है।
सिद्ध के ध्यान से दर्शनाचार की शुद्धि होती है।
आचार्य की आराधना से चारित्राचार की शुद्धि होती है
उपाध्याय के ध्यान से तपाचार की शुद्धि होती है।
(सज्झायसमो तवो नत्थि)
साधु की आराधना से वीर्याचार की शुद्धि होती है।
(वीर्याचार की तरह साधु सर्वत्र व्याप्त है)

सफल जीवन के लिये नई राहें बनाएं....

✻ ललित गर्ग, दिल्ली

धूप और छांव की तरह जीवन में कभी दुःख ज्यादा तो कभी सुख ज्यादा होते हैं। जिंदगी की सोच का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि जिन्दगी में जितनी अधिक समस्याएं होती है, सफलताएं भी उतनी ही तेजी से कदमों को चुमती हैं। बिना समस्याओं के जीवन के कोई मायने नहीं हैं। समस्याएं क्यों होती है, यह एक चिन्तनीय प्रश्न है। यह भी एक प्रश्न है कि हम समस्याओं को कैसे कम कर सकते हैं। इसका समाधान आध्यात्मिक परिवेश में ही संभव है। जैसा कि जोहान बॉन गोथे ने कहा था- ''जिस पल कोई व्यक्ति खुद को पूर्णतः समर्पित कर देता है, ईश्वर भी उसके साथ चलता है।'' जैसे ही आप अपने मस्तिष्क में नए विचार डालते हैं, सारी ब्रह्माण्डीय शक्तियां अनुकूल रुप में काम करती है।

''जीवन बस एक दर्पण है और बाहर की दुनिया अंदर की दुनिया का प्रतिबिम्ब है।'' एक बार अपने अंदर सफलता प्राप्त कर लें, बाहर खुद-ब-खुद वह प्रतिबिम्बित होगा।''

''जिन्दगी में जितनी अधिक समस्याएं होती है, सफलताएं भी उतनी ही तेजी से कदमों को चुमती हैं।''

अति चिन्तन, अति स्मृति और अति कल्पना-ये तीनों समस्या पैदा करते हैं। शरीर, मन और वाणी- इन सबका उचित उपयोग होना चाहिये। यदि इनका उपयोग न हो, इन्हें बिलकुल काम में न लें तो ये निकम्मे बन जायेंगे। यदि इन्हें बहुत ज्यादा काम में ले, अतियोग हो जाए तो ये समस्या पैदा करेंगे। इस समस्या का कारण व्यक्ति स्वयं है और वह समाधान खोजता है दवा में, डॉक्टर में या बाहर ऑफिस में। यही समस्या व्यक्ति को अशांत बनाती है। जरुरत है संतुलित जीवनशैली की। जीवनशैली के शुभ मुहूर्त पर हमारा मन उगती धूप की तरह ताजगी-भरा होना चाहिये, क्योंकि अनुत्साह भयाक्रांत, शंकालु, अधमरा मन समस्याओं का जनक होता है। यदि हमारे पास विश्वास साहस, उमंग और संकल्पित मन है तो दुनिया की कोई ताकत हमें अपने पथ से विचलित नहीं कर सकती और सफलता का राजमार्ग भी यही है। जैसा कि किसी ने कहा है-''जीवन बस एक दर्पण है और बाहर की दुनिया अंदर की दुनिया का प्रतिबिम्ब है।'' एक बार अपने अंदर सफलता प्राप्त कर लें, बाहर खुद-ब-खुद वह प्रतिबिम्बित होगा।

हम सबसे पहले यह खोजें जो समस्या है, उसका समाधान मेरे भीतर है या नहीं ? बीमारी पैदा हुई, डॉक्टर को बुलाया और दवा ले ली। यह एक समाधान है पर ठीक समाधान नहीं है। पहला समाधान अपने भीतर खोजना चाहिये। एक व्यक्ति स्वस्थ रहता है। क्या वह दवा या डॉक्टर के बल पर स्वस्थ रहता है ? या अपने मानसिक बल यानी सकारात्मक सोच पर स्वस्थ रहता है ? हमारी सकारात्मकता अनेक बीमारियों एवं समस्याओं का समाधान है। आप आसमान को देखकर यह कह सकते है- ''यह कितना नीरस है'' या यह कह सकते है- ''यह कितना बड़ा है।'' यह बस दिमाग को अनुकूलित करने और उसे प्रशिक्षित करने की बात है।

मूल प्रश्न यह है कि हम अपनी समस्या को समझें और अपना समाधान खोजें। मन कमजोर क्यों होता है ? यह निषेधात्मक भावों के द्वारा कमजोर होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी यह माना है- जितने नकारात्मक भाव (निगेटिव एटीट्यूट) हैं, वे हमारी बीमारियों एवं समस्याओं से लड़ने की प्रणाली कमजोर बनाते हैं। ईर्ष्या, भय, क्रोध, घृणा- ये नकारात्मक भाव है। प्रायः यह कहा जाता है- ईर्ष्या मत करो, घृणा और द्वेष मत करो। क्योंकि यही समस्याओं की जड़ है। एक धार्मिक के लिये यह महत्वपूर्ण निर्देश है, किंतु आज यह धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन गया है। विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है- जो व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है, उसे निषेधात्मक भावों से बचना चाहिये। बार-बार क्रोध करना, चिड़चिड़ापन आना, मूड़ का बिगड़ते रहना-ये सारे भाव हमारी समस्याओं से लड़ने की शक्ति को प्रतहित करते हैं। इनसे ग्रस्त व्यक्ति बहुत जल्दी बीमार पड़ जाता है। एक दार्शनिक ने बहुत खूबसूरती से कहा है- ''हे आत्मा ! तुम क्यों चिंतित होते हो ? कठिनाईयां आयेगी तो क्या ! अपनी दृष्टि समाधान पर लगाए रखो, समस्या पर नहीं।''

ध्यान आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं, स्वास्थ्य की दृष्टि से

भी बहुत उपयोगी है। ध्यान से निषेधात्मक भाव कम होते हैं, विधायक भाव जागते हैं। ध्यान एक ऐसी विद्या है जो हमें भीड़ से हटाकर स्वयं की श्रेष्ठताओं से पहचान कराती है। हममें स्वयं पुरुषार्थ करने का जज्बा जगाती है। स्वयं की कमियों से रु-ब-रु होने को प्रेरित करती है। स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार कराती है। आज जरुरत है कि हम अपनी समस्याओं के समाधान के लिये औरों के मुंहताज न बने। ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान हमारे भीतर से न मिले। भगवान श्रीमहावीर ने का यह संदेश जन-जन के लिये सीख बने- ''पुरुष ! तू स्वयं अपना भाग्यविधाता है।'' औरों के सहारे मुकाम तक पहुंच भी गए तो क्या ? इस तरह की मंजिलें स्थायी नहीं होती और न इस तरह का समाधान कारगर होता है। इलेनोर रुजवेल्ट के ये शब्द भी प्रमाणिक लगेंगे- ''आखिरकार जीवन का उद्देश्य उसे जीना और इष्टतम अनुभवों को हासिल करना, नए और समृद्ध अनुभवों को उत्सुकता से और निर्भर होकर आजमान है।'' इसलिए अपने लिए एक नई राह बनाएं, ताकि अपने जीवन को भरपूर जी सकें।

गुरुनानक ने कहा था- ''मनुष्य सांसों से बना है, एक बार में एक सांस। अगर सांस आती है तो हम मनुष्य हैं, वरना मिट्टी के पुतले।'' सांस की तरह हमारे भीतर अनेक शक्तियां हैं, जो हमें बचा सकती है, हमें समस्याओं के समाधान दे सकती है। लिनेश सेठ ने लिखा है- ''जीवन के साथ एक सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने का सबसे सरल तरीका है- अपने श्वास के साथ एक प्रेमपूर्ण, खुशनुमा संबंध विकसित करना।'' एक और शक्ति संकल्प की शक्ति है। अनावश्यक कल्पना मानसिक बल को नष्ट करती है। लोग अनावश्यक कल्पना बहुत करते हैं। यदि उस कल्पना को संकल्प में बदल दिया जाए तो वह एक महान शक्ति बन जाए। एक विषय पर दृढ़ निश्चय कर लेने का अर्थ है- कल्पना को संकल्प में बदल देना। यह संकल्प का प्रयोग करें तो वह बहुत सफल होगा। संकल्प एक आध्यात्मिक ताकत है। संकल्पवान व्यक्ति अंधकार को चीरता हुआ स्वयं प्रकाश बन जाता है। चंचलता की अवस्था में संकल्प का प्रयोग उतना सफल नहीं होता जितना वह एकाग्रता की अवस्था में होता है। हर व्यक्ति रात्रि के समय सोने से पहले एक संकल्प करें, उसे पांच-दस मिनट तक दोहराए, मैं यह करना या होना चाहता हूं, इस भावना से स्वयं को भक्तिकरें, एक निश्चित भाषा बनाए और उसकी सघन एकाग्रता से आवृत्ति करें, ऐसा करने से संकल्प बहुत शीघ्र सफल होता है।

मारग्रेट शेफर्ड ने यह खूबसूरत पंक्ति कही है- ''कभी-कभी हमें सिर्फ विश्वास की एक छलांग की जरुरत होती है।'' इसी से व्यक्ति में आत्म विश्वास उत्पन्न होता है और इसी से एक समाधान सूत्र मिलता है कि- मेरी समस्याओं का समाधान कहीं बाहर नहीं है, भीतर है। ध्यान का प्रयोजन है-व्यक्ति में यह आत्मविश्वास पैदा हो जाए- जो मुझे चाहिए, वह मेरे भीतर है। यदि यह भावना प्रबल बने तो मानना चाहिये- ध्यान का प्रयोजन सफल हुआ है। ध्यान का अर्थ यही है कि हमारे शरीर के भीतर जो शक्तियां सोई हुई है, वे जाग जाएं। ध्यान से व्यक्ति में यह चेतना जगनी चाहिये- मुझमें शक्ति है, उसे जगाया जा सकता है और उसका सही दिशा में प्रयोग किया जा सकता है। शक्तिका बोध, जागरण की साधना और उसका सम्यग् दिशा में नियोजन-इतना-सा विवेक जाग जाए तो सफलता का स्रोत खुल जाए।

कार्य-सिद्धि हेतु सोपान

1- क्या चाहिये ? कैसा बनना है ? स्पष्ट करें।
2- ध्येय को बार-बार न बदलो।
3- संकल्प की श्रद्धा के जल से सिंचन करते रहें, परमात्मा पर परम श्रद्धा रखें।
4- तद्नुसार मानस चित्र खड़ा करें।
5- मानस चित्र में मन स्थिर करें।
6- मानस चित्र में जो आप चाहते हैं, वह वर्तमान-काल में बन रहा है उस प्रकार देखें।
7- वैसा ही बना है, उस प्रकार जीवन जिए।

भगवान श्री मुनिसुव्रत स्वामी के 9 भव

1- शिवकेतु राजा, 2- सौधर्म देवलोक, 3- कुबेरदत्त राजा, 4- सनत्कुमार देवलोक, 5- वज्रकुंडन राजा, 6- ब्रह्मदेवलोक, 7- श्री वर्म राजा, 8- अपराजित देवलोक, 9- श्री मुनिसुव्रत स्वामी।

श्री शेरीसा महातीर्थ

अहमदाबाद से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांधीनगर जिले व कलोल तहसील का छोटा सा मनोहर गाँव ! गाँव के समीप से ही नर्मदा केनाल निकलती है।

ईस्वी सन् 2011 की जनगणना के आधार पर शेरीसा गाँव की जनसंख्या 1183 परिवार अर्थात् 6167 लोगों की है। उसमें स्त्री-पुरुष की संख्या लगभग समान ही है। जाति अनुपात लगभग शत प्रतिशत समान है।

गाँव में शिक्षित लोगों की संख्या लगभग 76 प्रतिशत है। ग्राम पंचायत प्रशासन के अधीन सरपंच द्वारा संचालित की जाती है। इस गांव में 3 प्राथमिक शालाएं तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि भी है।

अहमदाबाद से वडसर के मार्ग से कलोल की ओर आने से पहले 7 कि.मी. की दूरी पर अहमदाबाद के समीप का शेरीसा गाँव जैनों की प्राचीन तीर्थ भूमि है। विशाल संकुल में शिखरबंध भव्य जिनालय, धर्मशालाएं, उपाश्रय, पेढ़ी कार्यालय, प्राथमिक सुविधाएं, भोजनशाला आदि अनवरत चालू रहती है। भव्य जिनालय देखते ही मन प्रफुल्लित हो जाये वैसा यह रमणीय तीर्थ है।

शेरीसा नाम कैसे पड़ा, इस संबंध में विक्रम संवत् 1562 में कविवर श्री लावण्यसमय के द्वारा रचित ''शेरीसा तीर्थस्तवन'' में कुछ सूचनाएं मिलती है।

''ए नवण पाणी विवर जाणी, खाल गयो तव विसरी,
अंतर एवडो सेरी सांकड़ी, नयरी कहती सेरीसा-कड़ी''

इस पद्म में कड़ी के समीप स्थित शेरीसा के परिपेक्ष्य में संकेत मिलता है, नगर की जिस संकीर्ण गली में यह जिनालय स्थित था, उसमें भगवान का अभिषेक करवाने पर उस सँकरी शेरी में चारों और पानी भर गया, इसलिये लोग उस स्थान को शेरी-सांकड़ी के नाम से पुरारने लगे। उसके मात्र शेरीसा नाम ही प्रचलित हो गया यद्यपि शेरीसा से कुछ किलोमीटर की दूरी पर कड़ी नामक गाँव बसा हुआ है लेकिन आज तो वह शहर जैसा विकसित हो गया है। वैसे देखा जाए तो शेरी-सांकड़ी के नाम में छुपा कोई योग इन दोनों गाँवों के बीच नहीं है।

शेरीसा में वर्षो पहले समतल मैदान पर कुछ खैरवृक्ष और एक ओर नवीन जिनालय के अतिरिक्त कुछ देखने को नहीं मिलता था, किंतु अब इस गाँव में पक्के घरों के निर्माण में भी वृद्धि हुई है। कवि इस स्थान पर सौ वर्ष पहले के प्राचीन नगर का वर्णन करते हुए कहते है कि-

''ए नगर मोटुं, एक खोटुं, नहीं जिन प्रासाद ए''

इस संबंध में संवत् 1389 में रचित ''विविध तीर्थकल्प'' में शेरीसा में जिनप्रतिमाएं कब आई और कब मंदिर का निर्माण हुआ उसकी विषयवस्तु आलेखित है। उसका सारांश यह है कि, नवांगीवृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि शाखा के आचार्य श्री देवेन्द्रसूरीजी शेरीसा पधारे तब उन्होंने एक पहाड़ी से निकाली हुई शिला से सोपारक के अंध शिल्पी-सलाट द्वारा एक मूर्ति बनवाई। इसके अलावा अन्य जगह से अन्य चौबीस प्रतिमाएं मिली थी और श्री देवेन्द्रसूरीजी इस नगर में मंदिर निर्माण हेतु अयोध्या से चार बड़ी प्रतिमाएं लेकर आए थे तब उनमें से एक प्रतिमा धारासेनक (कदाचित् मालवा का ''धार'' नामक स्थान हो) गाँव में रखी और तीन प्रतिमाएं शेरीसा में निर्मित भव्य मंदिर में स्थापित की। इसके बाद चौथी मूर्ति गूर्जर नरेश कुमारपाल ने स्थापित करवाई थी। श्री जिनप्रभसूरीजी (संवत् 1389 के आसपास) प्रत्यक्ष देखे हुए दृश्य का उल्लेख करते हुए बताते है कि ''ये सभी प्रतिमाएं शेरीसा गांव के जिनमंदिर में आज भी संघ द्वारा पूजी जाती है।''

संवत् 1393 में श्री कक्कसूरी द्वारा रचित ''नाभिनंदन जिनोद्धार प्रबंध'' में कहा गया है कि, नागेन्द्र गच्छ के श्री देवेन्द्रसूरीजी ने शेरीसा तीर्थ की स्थापना की। इस पर से बारहवीं शताब्दी में इस तीर्थ की स्थापना हो गई थी, ऐसा कहने में ऐतिहासिक दृष्टि से कोई आपत्ति नहीं है और इसी कारण श्री जिनप्रभसूरीजी ने चौदहवीं शताब्दी में देखे हुए इस तीर्थ की वास्तविकता आलेखित की है।

इन सभी प्रतिमाओं में मूलनायक की प्रतिमा के विषय में कहा गया है कि- ''लख लोक देखे, सहु पेखे, नाम लोडण थापन''

प्रतिमा को हिलती डुलती देखकर लोगों ने उसका नाम ''लोडण पार्श्वनाथ'' रखा था। अन्य मतानुसार उस मूर्ति का एक पैर अलग बनाया गया होने से उसका यह नाम रखा गया है। जबकि एक और मतानुसार ऐसी भी कहा जाता है कि रेत से बनी यह प्रतिमा लोहे जैसी कठोर हो गई इसलिये इसका नाम लोढण पार्श्वनाथ प्रसिद्ध हुआ। इन सभी मतों के विषय

में कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता।

लगभग चौदहवीं शताब्दी में हुए श्री जिनतिलकसूरी द्वारा रचित ''तीर्थमाला'' में मूलनायक की मूर्ति का वर्णन करते हुए लिखा हैः- **''शेरीसा पास छे उड्ड् काय''**

अर्थात्- शेरीसा में श्री पार्श्वनाथ की मूर्ति बहुत ऊँची और भव्य है। कविवर लावण्य के समय में अर्थात् विक्रम संवत 1562 में यहां जिनमंदिर विद्यमान था। इस विषय में कवि स्वयं ही शेरीसा तीर्थ की बात करते हुए कहता है किः-

''पोस कल्याणक दसम दीहाड ए,
महियल महिमा पास देखाड ए
प्रभु पास महिमा संघ आवे उमट्या,
ध्वज पूज मंगल आरती तेणे पाप पूरवनां घट्यां
संवत पन्नर बासट्ठि प्रासाद शेरीसा तणो,
लावण्यसमे इम आदि बोले, नमो नमो त्रिभुवन धणी।''

अर्थात् लगभग सोलहवीं शताब्दी तक यह तीर्थ बहुत प्रसिद्ध हो गया था। अनेक चमत्कारों और महिमा ने लोगों को आकर्षित किया। हजारों की संख्या में श्रद्धालु लोग वहां आते और प्रभु के दर्शन-पूजन कर कृतार्थ होते। 13 वीं शताब्दी में गुर्जर राष्ट्र के महामंत्री श्री वस्तुपाल और तेजपाल ने यहां अपने अग्रज बंधु श्री मालदेव और पूर्णसिंह के कल्याणार्थ दो देवकुलिकाएँ बनवाई थी। एक देवकुलिका में नेमनाथ भगवान की सपरिकर प्रतिमा और अन्य देव कुलिका में वीरप्रभु की प्रतिमा तथा अंबिका देवी की मूर्ति जो कि वर्तमान में भी शेरीसा तीर्थ के जिनालय में स्थित है, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय आचार्य श्री विजयसेनसूरीजी महाराज के वरद हस्त से करवाई थी।

काल की वक्र दृष्टि इस शेरीसा तीर्थ पर पड़ी और फलस्वरुप वि.सं. 1721 में मूर्ति विध्वंसक यवनों ने शेरीसा पार्श्वनाथ के इस जिनालय को विध्वंस किया। उसके बाद शेरीसा नगर ध्वस्त हुआ एक भव्य सर्जन विसर्जन में परिवर्तित हुआ। नगर और देरासर ध्वस्त होने पर भी वहां के चतुर श्रावकों की दूरदृष्टि व कौशल्य के कारण कुछ जिनप्रतिमाएं भग्न होने से बच गई। युद्ध के या ऐसे किसी आततायी प्रसंग पर श्रावकों ने सभी मूर्तियां जमीन में छुपा दी होगी, पश्चात मंदिर पर विनाश के बादल छाए होंगे। उस समय गुजरात, मारवाड़, मेवाड़ आदि प्रदेशों में बार-बार होनेवाले विधर्मी आक्रमणों के कारण अनेक मंदिर टूटते थे। तब उस समय विचक्षण और भावि को समझाने वाले श्रावक मंदिर से प्रतिमाएं उत्थापित कर निकाल लेते और कहीं तहखाने में, कहीं भूमि में गहराई में गाड़ देते थे। इस कारण प्राचीन प्रभावशाली व तेजस्वी प्रतिमाएं सुरक्षित रहती थी। आज भी खुदाई करते समय गुजरात में अनेक स्थानों पर कई मूर्तियां निकलने के उदाहरण सामने है। कहीं, कहीं तो पूरे के पूरे मंदिर ही गड़े हुए निकले हैं, ऐसे भी उदाहरण है। ऐसा ही कुछ शेरीसा के मंदिर के साथ भी हुआ हो।

आज जो नया जैन मंदिर यहां बना हुआ है उसके सामने के मैदान में प्राचीन जैन मंदिर खंडहर के रुप में पड़ा था। मंदिर का अधिकांशतः भाग तो ध्वस्त हो चुका था। मात्र दीवारों का कुछ भाग बचा था। उसमें पत्थर के ढेर पड़े थे। इनके साथ ही मूर्तियां भी दबी पड़ी हुई थी। उन मूर्तियों में एक खंडित मूर्ति- जो 4 फीट चौड़ी, पौने चार फीट लम्बी और फणाकृति सहित 5 फीट लम्बी थी, श्यामवर्ण की दो कायोत्सर्ग मूर्तियां- जो 2 फीट चौड़ी साड़े छः से सात फीट लम्बी थी, एक अंबिका देवी की मनोहर मूर्ति, ये पांचों मूर्तियां विशिष्ट पत्थर से बनी हुई थी, तथा एक सफेद संगमरमर की बनी हुई आदीश्वर भगवान की खंडित मूर्ति इस प्रकार कुल 6 मूर्तियां मिली थी।

इस खंडहर से नक्कीशीवाले पत्थर, खंभे, कलश आदि निकले थे वे एक ओर रख दिये गये थे। इसके अलावा दूसरी बार खुदाई करने पर जो मिला उसमें पत्थर की 15-16 मूर्तियां, संगमरमर की खंडित 2 मूर्तियां तथा संगमरमर की ही बड़ी मनुष्यकृति की कायोत्सर्ग मूर्ति जिसमें दोनों और 24 तीर्थकरों की जिनप्रतिमाएं उकेरी गई है और उस कायोत्सर्ग मूर्ति के नीचे एक लेख भी था परन्तु बिलकुल घीस चुका था जिसका बारहवीं या तेरहवीं शताब्दी का होने का अनुमान लगाया जाता है। इसके अलावा सफेद संगमरमर के परिकर की गद्दी के दो टुकड़े भी निकले हैं, उनके आगे का तीसरा टुकड़ा नहीं मिल सका है परन्तु प्राप्त दो टुकड़ें में आलेखित लेख इस प्रकार लिखा है-

महामंत्री श्री वस्तुपाल-तेजपाल ने अपने भाई मालदेव और उनके पुत्र पुनसिंह के कल्याणार्थे शेरीसा महातीर्थ के पार्श्वनाथ चैत्य में श्री नेमिनाथ भगवान का प्रतिबिंब स्थापित करवाया है और उसकी प्राणप्रतिष्ठा नागेंद्रगच्छीय श्री विजयसेनसूरी ने की है। यह संवत् 1585 होना चाहिये, क्योंकि लेख में मात्र (5) का अंक ही दिखता है। इस लेख

में शेरीसा को ''महातीर्थ'' की उपाधि दी गई है व वस्तुपाल और तेजपाल जैसे महान व्यक्तियों ने यहां मूर्ति प्रतिष्ठित की है इस तीर्थभूमि का गौरव उस समय कैसा रह होगा यह मात्र ग्रंथों के त्रुटित विषयवस्तु के आधार पर समझा जा सकता है।

उपर्युक्त मूर्तियों के अलावा प्राचीन धर्मशाला खंडहर से जो फणाकृतियुक्त श्री पार्श्वनाथ भगवान की विशाल प्रतिमा निकली थी, वह मूर्ति लोग वर्षो तक एक योद्धा के रुप में पूजते रहे और उसकी मानता रखते थे।

उपर्युक्त कथानक यहां के विशाल प्राचीन मंदिर का व उसके तीर्थ की महिमा का गुणगान करते हैं। वि.सं. 1967 के मार्गशीर्ष महीने में यहां पूज्य शासन सम्राट आचार्य भगवंत श्री विजय नेमिसूरीश्वरजी महाराज साहब पधारे और सारी परिस्थिति समझकर उन्होंने शीघ्र ही अपने भक्त श्रावक गोरधनभाई अमुलखभाई तथा मोहनलाल कोडिया को अपने पास बुलवाया और उनके साथ विचारविमर्श किया। गहनता से जाँच-पड़ताल करने पर मंदिर के पीछे के भाग से एक खंडित प्रतिमा जिसकी ऊंचाई मूलनायक भगवान जितनी ही थी, वह मिल गई। आस-पास से अन्य संप्रति महाराज के समय की श्री आदिनाथ की प्रतिमा, श्री अंबिकादेवी की नयनाभिराम प्रतिमा, परकर पट, विहारमान जिनकी कायोत्सर्ग आकार खंडित प्रतिमा आदि वस्तुएं मिल गई। परिकर पट के लेख पर वस्तुपाल मंत्री का इतिहास मिला। सूक्ष्म दृष्टि से कोना-कोना ढूंढ लेने के बाद पूज्यश्री ने गोरधनदास से कहकर रबारी के वाड़े जितनी जमीन अहमदाबाद के सेठ मनसुखलाल भगुभाई के नाम से खरीदवा ली और उसमें ये सभी प्रतिमाएं और अन्य वस्तुएं व्यवस्थित रख दी। उनके सदुपदेश से स्व. सेठ श्री साराभाई डाह्याभाई ने शेरीसातीर्थ के जीर्णोद्धार का उत्तरदायित्व स्वीकार कर कार्य प्रारंभ किया था। जीर्णोद्धार के इस कार्य में तीर्थ के शिखरबंध जिनालय के निर्माण में सेठ श्री साराभाई डाह्याभाई ने उस जमाने में तीन लाख दस हजार रुपये का सद्व्यय किया था। सेठ साराभाई ही इस तीर्थ के जीर्णोद्धार के मुख्य सूत्रपात थे। इस तीर्थ की स्थापना व जीर्णोद्धार आदि कार्य सुचारु रुप से हों इसलिए उन्होंने परमानंदजी कल्याणजी नामक पेढ़ी की स्थापना की। वर्षो तक उन्होंने इस तीर्थ की तन-मन-धन से सेवा की थी। वि.सं. 1984 (ई.सन् 1928) के वर्ष आषाढ़ सुद-15 के शुभ दिन सेठ श्री साराभाई डाह्याभाई ने अखिल भारत वर्ष के जैनों की प्रतिनिधिरुप सेठ आणंदजी कल्याणजी को इस तीर्थ के कार्यभार संचालन का दायित्व सौंपा। जमीन से निकली हुई इन मूर्तियों में से पांच मूर्तियों पर सेठ जमनाभाई भगुभाई ने मोतियों का लेप करवाया था और संवत् 1988 (ई.सन् 1932) के माघ सुद 6 के दिन उन मूर्तियों को मंदिर में प्रस्थापित करवाया था। इस जिनालय के निर्मित होने के बाद वि.सं. 2002 (ई.सन् 1946) में वैशाख सुद-10 के दिन परम पूज्य शासन सम्राट आचार्य भगवंत श्री विजयनेमि सूरीश्वरजी महाराज आदि की पवित्र निश्रा में उत्साहपूर्वक इस प्राचीन से नवनिर्मित जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई गई थी।

विशाल चौगान में चारों और धर्मशाला से घीरा हुआ और बीच में खाली मैदान से विशेष शोभित हुआ यह भव्य जिनालय निश्चय ही एक कलात्मक और मनोहर मंदिर है। इसमें मुख्य गर्भगृह में भगवान शेरीसा पार्श्वनाथ की श्याम रंग की विशाल परिकरयुक्त बड़ी जिनप्रतिमा प्रतिष्ठित की गई और जो प्रतिमा जमीन से निकली थी उसकी प्रतिष्ठा जिनालय के भूगर्भ में की गई। शेरीसातीर्थ में वर्तमान में निम्नोक्त स्थानों का विकास हुआ है।

पूज्य साधु भगवंतों के ठहरने के लिए उपाश्रय तथा पूज्य साध्वीजीश्री के ठहरने के लिए उपाश्रय में सुविधा है। आनेवाले यात्रीगण भाई-बहनों की सुविधा हेतु 18 ब्लॉकवाली पुरानी धर्मशाला तथा 12 ब्लॉकवाली नवीन धर्मशालाएं भी है।

और अंत में....

अहमदाबाद के अति समीप यह तीर्थ के होने के कारण यात्रा बड़ी संख्या में यहां आते हैं। दीपावली की छुट्टियाँ, ग्रीष्मकालीन अवकाश आदि में तो यहां धर्मशाला में जगह ही नहीं मिलती। वर्षो पहले अहमदाबाद के आसपास शेरीसा, पानसर, रांतेज, भोयणी और मातर जैसे तीर्थो की बोलबाला थी, किंतु आज सुविधाप्रिय मानसिकता के कारण तीर्थयात्रा को पर्यटन.... प्रवास या मोजमस्ती की नजरसी लग गई है तथापि अन्य तीर्थो की अपेक्षा शेरीसा की महिमा आज भी सुरक्षित है।

✻ दु:ख का कारण एक मात्र विषम-आत्मा है। अगर आत्मा सम है तो सब सुख ही है।

वीर विक्रमशी

देव मंदिरों की नगरी शत्रुजय में श्मशान जैसी भयंकर शांति छा गई थी।

वहां कहीं से एक वनराज आ पहुंचा था। वह यात्रियों को परेशान करता। यात्रियों का अपना भक्ष बनाकर उदय पूर्ति करता था। गिरिराज की यात्रा में विघ्न हुआ। यात्रियों ने यात्रा करना बन्द की और सिद्धाचल पर श्मशान जैसी शान्ति छा गई।

पालीताना शहर में भावसार जाति का विक्रमशी नामक एक युवा रहता था। सशक्त देह भव्य मुखारविंद, काली-काली मूंछें उसकी भव्यता में अभिवृद्धि करते थे।

वह अपने भाई व भाभी के साथ रहता था। उसका जीवन निष्फल था। मनचाह खाना व मनचाह घूमना।

एक दिन की बात थी।

सूर्य मध्य आकाश में तप रहा था। विक्रमशी शत्रुंजय नदी पर से अपने कपड़े धोकर हाथ में धोका व कपड़े के लिये घर आया। उसे जोरदार कड़ाके की भूख लगी थी। भाभी से भोजन की थाली परोसने को कहा तब भोजन में देर होने से भाभी ने कहा- जरा थोड़ी देर बाहर आराम करो भोजन में देर है।

भूख कड़ाके की लगी थी विक्रमशी चिड़ गया। दोपहर हो गई तो भी भोजन तैयार नहीं हुआ तो घर में बैठकर क्या भाड़ झोकती हो तुम ? समय से भोजन भी नहीं बनाती हो। सनसनाते शब्द सुनकर भाभी को गुस्सा आ गया, बोली देर भी हो सकती है इसमें क्या हुआ ? तुम इतना पावर किस पर कर रहे हो ? तुम्हारे भाई कमाते है और तुम्हें बैठे-बैठे तागड़धिन्ना करते हो। बाहुबल हो तो सिद्धाचल पर यात्रियों को परेशान करने वाला सिंह। उसे मारो तो जानू तुम बहादुर हो।

भाभी के शब्द से विक्रमशी के अंग-अंग में क्रोध फैल गया। भाभी के टांटिग (मेणा) से विक्रमाशी को ताव आ गया उसने उसी समय कहा-भाभी, मेरी प्रतिज्ञा सुन लो, अगर मैं सिंह को नहीं मारुंगा तब तक घर में प्रवेश नहीं करुंगा।

विक्रमशी तो कपड़े धोने का धोना हाथ में लेकर निकल पड़ा, रास्ते में उसे उसके मित्र मिले पूछा विक्रमशी, आज गुस्से में कहां जा रहा है तू ?

सिंह का शिकार करने। विक्रमशी बोला- सभी मित्रों ने विदमशी को घेर लिया। मित्रों के साथ विक्रमशी तलेटी आया मित्रों से बिदा लेते विक्रमशी बोल- मैं ऊपर जाकर सिंह को मार डालूंगा फिर घटनाद करुंगा। घंटनाद सुनाई दे तब तुम समझ जाना कि सिंह मर चुका है।

विक्रमशी गिरिराज पर चढ़ने लगा। उसके पीछे उसके अनेक मित्र चढ़े। किन्तु वे विक्रमशी से बहुत पीछे रह गये कारण कि सिंह का भय उन्हें सता रहा था।

विक्रमशी ऊपर पहुंचा। चारों तरफ सिंह को ढूंढने लगा उस समय सिंह एक वृक्ष की छाय में निंद्राधिन था। विक्रमशी वहां आया सोये सिंह को नहीं मारा जाता यह जानने से जोरदार आवाज लगाकर सिंह को जागृत किया।

सिंह जैसे ही ऊपर देखने की तैयारी करें इतने में तो विक्रमशी ने जोरदार धीकासिंह के मस्तक पर मारा। सिंह तड़कने लगा व बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

विक्रमशी समझा सिंह मर चुका है। अब घंटनाद करना चाहिये वह युगादिदेव श्री ऋषभदेव के मंदिर की ओर चल दिया। धंट के पास जब वह पहुंचा कि सिंह होश में आ चुका था वह सिंह विक्रमशी की ओर झपटा व विक्रमशी को अपना पंजा जोर से मारा, विक्रमशी दूर जा गिरा विक्रमशी ने भी धोने का वार किया।

सिंह का सिर फुट गया था। वही सिंह के प्राण उड़ गये। सिंह जमीन पर गिर पड़ा था। विक्रमशी भी सिंह के घाव से घायल हो गया था वह विचारने लगा। सिंह तो मर गया किन्तु अब घंटनाद कैसे करुं। मुझ में तो शक्ति ही नहीं रही है उठने की। परन्तु हिम्मत रखकर उसने घाव पर पट्टी बांधी व सारी शक्ति इकट्ठी कर धीरे से उठकर खड़ा हुआ व जोर जोर से घंटा बजाया व पुनः वहीं घंटे के नीचे ही गिर पड़ा। घंटनाद सुनकर दूर रहे मित्र दौड़ते वहां आये। एक तरफ सिंह मरा पड़ा था दूसरी और विक्रमशी। मित्रों ने विक्रमशी को उसी वक्त सम्भाला किन्तु विक्रमशी तो अमर लोक की यात्रा पर निकल पड़ा था। मित्रों की आँख आँसू से छलक उठी ! वे बोल उठे। वाह रे वीर विक्रमशी वाह ! कमाल की तन ! अपने प्राण देकर भी यात्रा चालू कराई तुने ! धन्य है वीर विक्रमशी तुझे।

आज भी गिरिराज पर वाघण पोल व हाथी पोल के बीच राजकुमार पाल के मंदिर के सामने नीम के वृक्ष के नीचे वीर विक्रमशी का पुतला उसकी वीरता का संदेश सुन रहा है।

उम्र की जवान देहरी पर खड़ी समस्त कुंवारी बहनों के नाम एक पत्र

✽ फूलचन्द्र जैन

प्रिय छोटी बहन,

शुभाशीष !

तुम्हें पता न होगा कि तुम्हारे जन्म दिन पर शायद खुशियां मनाई गई होगी या मातम मनाया गया होगा। तुम्हें यह भी पता न होगा कि तुम्हारे जन्म पर लड्डू बांटे गये या सिर पीटा गया। अब तुम सयानी हो गई हो, तो तुम्हारे इस भैया के आग्रह पर यह प्रश्न जरुर अपने माँ-बाप से पूछना। अगर तुम्हारे जन्म पर खुशी हुई होगी तो तुम स्वयं भाग्यशाली समझना और यदि तुम्हारे घर में गम के बादल छा गये हो तो तुम स्वयं के भाग्य को कोसना मत।

लेकिन इस बात का चिन्तन अवश्य करना कि तुम्हारे जन्म पर तुम्हारे पिता के आंगन में खुशियों की बहार आने के बजाए गम के कांटे क्यों उग गए ?

बहन ! तुम्हें जन्म देनेवाली तुम्हारी माँ भी तुम्हारी बिरादरी की है, यानी कि वह भी एक नारी है। फिर तुम्हारे ही जन्म पर असंतोष जाहिर करने का यह हक तुम्हारी माँ को क्यों मिला ?

यह भूमिका मैंने इसलिये बनाई कि तुम अब जवानी की उस दहलीज पर खड़ी हो, जहां स्वयं को माँ बनने का गौरव प्राप्त करने का अभूतपूर्व समय ज्यादा दूर नहीं है। अतः तुम अपनी प्रसव पीड़ा के बाद जिस किसी को भी जन्म दोगी वह चाहे पुत्र हो या पुत्री तुम्हारे घर-आंगन में खुशियां ही खुशियां होगी। आनन्द के फव्वारें छूटेंगे, न कि पुत्र जन्म पर संताप में सिर झुका लोगी। मुझे यकीन है इतना पढ़ने के बाद, पुत्री जन्म पर भी, मेरी सयानी बहन गर्व से सिर ऊंचा उठाना सीख जायेगी।

अब एक दूसरी बात तुम्हारा भैया तुम तक पहुंचाना चाहता है, वह यह है कि उम्र के दोराहे पर तुम जहां खड़ी हो वहां से एक मार्ग तुम्हारे जीवन को सजाने, संवारने की ओर जाता है, दूसरा मार्ग पतन के गर्त की ओर। पुरातन संस्कृति के इस देश में जन्म लेने वाले हम लोगों में इतने संस्कार तो जन्म से ही आ जाते है कि हमारे लिये अच्छा क्या है, बुरा क्या है, यह हम पहचान सकें। बहनों ! जिस स्कूल में तुम पढ़ती हो जिस कॉलेज में भविष्य निर्माण के लिये तुम गई हो वहां तुम्हें कई युवा-युवक साथियों के साथ मिलने का, विचारों के आदान-प्रदान करने का, हंसने-हंसाने का अवसर मिलता ही होगा, ऐसे मिलन पर स्वयं को संभालना अति आवश्यक है। स्कूल, कॉलेज में पढ़ने वाले युवक तुम्हारे दोस्त तो हो सकते हैं, जीवन साथी कभी नहीं। हां, उनमें से कोई पसंदीदा युवक जो तुम्हारे जीवन को संजाने-संवारने में सक्षम हो सके तो तुम उस युवक को माँ-बाप के सामने प्रस्तुत करने में कभी हिचकिचाना मत।

बहन ! जवानी और प्रेम की आंधी तुम्हें गुमराह राहों में भटकाव की ओर न ले जाये, अतः जरुरी है कि युवकों की भारी भीड़ के बीच तुम अपने जीवन के आईने को टूटने से बचाना। वरना यह मानव जीवन का अमूल्य उपहार व्यर्थ चला जायेगा। इसलिये मेरी छोटी बहन, साथ पढ़ने-पढ़ाने में या किसी प्रसंग पर किसी युवक से सम्पर्क में आने पर दोस्ती भरी बातें तो भले ही कर लेना परन्तु प्रेम उसी से करना जिसे तुम जीवन-साथी बनाने के लायक समझो।

बहन ! तुम्हें पता है न, तुम्हारी कितनी बहनें हर महीने घर से भाग जाती है। यह मानसिक अपरिपक्वता के कारण नहीं, किसी युवक द्वारा दिखाये गये जवान स्वप्न के भ्रमजाल में फंसकर गुमराह हो जाने के कारण होता है। जिस आंगन में तुम पली-बढ़ी, जिस भाई के हाथों में वर्षों तक राखी बांधी, जिस माँ के आंचल का दूध पीकर तुम जवान हुई, जिस बाप ने तुम्हें पढ़ा-लिखाकर अपने आंगन में तुम्हें सजा-धजा कर पिया के घर विदा करने का सपना संजोया। क्या उनको पलभर में भूल जाओगी ? किसी एक युवक के बहकावे में आकर तुम जीवन के उन सारे अनमोल रिश्तों को तोड़कर भाग जाओगी व उन सब के अरमानों को कुचल दोगी। यह कहां का न्याय है ? ऐसा कदापि मत करना बहन।

बहन ! भागकर जाने वाली करीब-करीब सभी युवतियां आज भी अपने अशोभनीय कृत्य पर आंसू बहा रही है, या कोई युवती दाने-दाने को मोहताज बन दया की भीख मांग रही है या किसी युवक द्वारा जवान देह से खेल, खेल लेने के बाद खुले बाजार में व्यापार के लिये छोड़ दी गई है, या फिर किसी ने अपनी घुटन भरी जिंदगी से तंग आकर आत्महत्या कर ली है।

इसलिये बहन ! जीवन में ऐसा कभी गलत कदम घर की दहलीज के बाहर मत रखना जहां स्वार्थ के अंधे भूखे भेड़िये तुम्हें नोचने को तैयार बैठे हों। वक्त आने पर बेधड़क अपने माँ-बाप या बड़े भाई-भाभी से रुबरु होकर जीवन-साथी के लिये अपने प्रस्ताव को अवश्य प्रस्तुत करना पर भागकर जीवन नर्क मत बनाना। यह भाई तुमसे यह निवेदन करता है कि माँ-बाप के निर्णय को सर्वोपरि मानना।

मैं इस पत्र के माध्यम से उन तमाम माँ-बाप को भी आगाह करना चाहता हूं कि वे झूठी शान-शौकत, आडम्बर और बराबरी का रिश्ता न होने के झूठे मोहजाल को त्याग कर अपनी बेटी के सपनों के अनुसार उसके जीवन का सरताज चुनने में बाधा न बनें, बल्कि मदद करें।

बहन ! फिल्में, टीवी, केबल टीवी, वीडियो ये सारे के सारे मानवीय राक्षस है जो सरकार के सहयोग से दिन के उजाले में पूरी भारतीय संस्कृति को नष्ट करने में व्यस्त है। टीवी संस्कृति ने हमारी मानसिक शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया और हमारे जीवन के अनमोल क्षणों को बर्बाद करने पर तुल गई है। अश्लील चित्रों के फूहड़ दृश्यों ने बहुमूल्य दिमाग में पैदा हुए घावों को अब तो नासूर ही बना दिया है।

बहन ! जो फिल्मी संस्कृति तुम्हें माधुरी दीक्षित की अदाओं पर फिदा करती हो, श्रीदेवी की अठखेलियों की ओर आकर्षित करती हो, करिश्मा के करिश्मे से प्रभावित करती हो या किसी अर्धनग्न परिधान पहनने को मजबूर करती हो वहां पन्नाधाय का बलिदान, झांसी की रानी लक्ष्मी का शौर्य, सीता माता का त्याग, सावित्री की निष्ठा, मदर-टेरेसा का दीनःदुखियों के प्रति समर्पण भाव, तुम्हें कैसे याद रहेगा, भला।

बहन ! तुम तो आने वाली भावी पीढ़ी की जन्मदात्री हो, यदि तुम्हारी सोच में अश्लीलता की सड़ांध लग जायेगी तो आने वाली पीढ़ी का क्या होगा ? फिर तुम अच्छी तरह जानती हो कि जो भी पर्दे पर दिखाई देता है, वह तो काल्पनिक है, तो फिर उसे सच मान लेने की भूल मेरी बहन कैसे कर सकती है ?

तुम्हें पता है बहन, कि जीजा माता के गर्भ में जब शिवाजी थे तभी वह उन्हें भूतकालीन भव्य इतिहास की शौर्य गाथाओं का श्रवण कर उन्हें सुनाती और उसका अंजाम भी तुम्हें पता है कि छत्रपति शिवाजी महाराज किस तरह साहस और हिम्मत के उच्चतम शिखरों को छू गये। वीर अभिमन्यु ने भी चक्रव्यूह की गाथा माँ के गर्भ में ही सुनी थी। इतिहास के ये प्रमाण इस बात को मजबूत धरातल प्रदान करते हैं कि बालक पर सबसे पहले संस्कारों का प्रभाव माँ का ही पड़ता है। इसलिये बहन तुम्हारी संस्कार युक्त भाव तुम्हारे वंश को एवरेस्ट की ऊंचाई प्रदान करेंगे, अतः यह जरुरी है कि तुम संयमी बन आधुनिकता की अंधी दौड़ से स्वयं को बचाओ।

बहन ! अब तुम जल्दी गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाली हो। तुम्हें पता है न बहन, तुम्हारे सपनों का सौदागर घोड़े पर सवार होकर तुम्हें लेने तुम्हारे घर की ओर आने को निकल चुका है। तुम्हारे पिता यदि धनाढ्य है, तो वे तुम्हारे परिणय बंधन के सुअवसर पर आसमान से चांद-सितारे उतार कर विवाह-स्थल को संजाने-संवारने में व्यस्त हो गये है। यानी वर्षों की कमाई चन्द लम्हों की भौतिक चकाचौंध और ढेर सारे मनभावन व्यंजनों का मीनू बनाने में व्यस्त हो गये हैं। यह आडम्बर की प्रतिस्पर्धा तुम्हें खुश करने के लिये कम, परन्तु अपना नाम नम्बर वन की लिस्ट में दर्ज करने हेतु ज्यादा है। बहन ! अपने पापा से कहने की हिम्मत करो, कि पापा 5-10 लाख या ज्यादा खर्च कर झूठी शौहरत पाने की मूर्खता से कहीं बेहतर है कि आप इसकी आधी राशि ही मेरे नाम से फिक्स डिपोजिट करवा दो, जो कुछ वर्षों में कई लाख हो जायेंगे। यानी तुम्हारे वैवाहिक जीवन के भविष्य की यह महत्वपूर्ण निधि सदैव तुम्हें खुशहाली देगी अन्यथा हम जैसे हजारों भोजन खाकर चले जायेंगे और तुम्हारे सामने विवाह-स्थल पर तुम्हारा स्वागत स्टेज, चन्द मजदूरों द्वारा खण्डहर में तबदील कर दिया जायेगा। क्या यह मूर्खता नहीं ? और बहन ! यदि तुम मध्यम वर्ग या गरीब वर्ग की हो तो तुम्हारे विवाह की चिंता से तुम्हारा बूढ़ा बाप या जवान भाई कहीं ब्याज से पैसा लाने की जुगाड़ में है। बेटी के हाथ पीले करने है, समाज में इज्ज़त है, लोग क्या कहेंगे ? यह सारी चिंता उन्हें दिन-रात खाये जा रही है। पापा की दहलीज को लांघकर अपने ससुराल विदा होने की पावन खुशी पर क्या अपने बाप व भाई को सदा के लिये कर्जदार बना दोगी ? तमाम जिंदगी ब्याज भरते-भरते उनके जीवन की बहार को पतझड़ में तबदील कर जाओगी ? नहीं, कदापि नहीं। भाई एवं बाप तो तुम्हारे प्रति अपने को निभाने में बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तैयार हो जायेंगे पर तुम्हें सादगी पूर्वक विवाह हेतु बाध्य करना होगा।

तुम्हारा अमूल्य आभूषण तो निडरता है, त्याग एवं समर्पण भाव है। गरीबी की चक्की पीसते-पीसते तुमने जवानी की चादर ओढ़ी है। इसलिये इस लायक बन जाओ कि तुम्हारे असीम गुणों की बहुमूल्य रत्नों भरी शान पाने की लालसा में तुम्हारा शौहर इतना खो जाये कि वह विवाह-स्थल की चकाचौंध कराने की सारी शर्तों ही भूल जाये।

बहन, अगर तुम्हारा आत्मबल मजबूत है तो यह पूर्ण रुपेण संभव है। तुम्हारी विदाई तुम्हारे बाप के आंगन में खिले फूलों की खुशबु न छीन लें, यही तुम्हारी सोच होनी चाहिये, तुम्हें अब इसके लिये तैयार हो जाना है। समझो बाबूल के आंगन में बिताया बचपन अब मात्र यादों के झरोखे में सिमट कर रह गया है और तुम यौवन की चुनर ओढ़ अपने सरताज

के घर, ससुराल आ गयी हो। हर चीज नयी, आंगन नया, लोग नये, चेतन तो चेतन, जड़चीजें तक नयी। ऐसी सम्पूर्ण वातावरण में स्वयं को व्यवस्थित कर सबका दिल जीतना तुम्हारा पहला फर्ज है। सबको प्यार देकर सबका प्यार पाना मुख्य ध्येय है तुम्हारा। सास, ससुर, पति के सुख में सुखी एवं दुःख में दुःखी होना तुम्हारा धर्म होना चाहिये। उनके विचारों एवं व्यवहार को समझ उसके अनुरुप खरा उतरना ही तुम्हारा फर्ज है। कहीं ऐसा न हो कि तुम दहेज लाने के नशे में स्वयं का फर्ज भूल जाओ और तुम्हारी अहम भरी गलती का यह तूफानी तुम्हारी जीवन नैया को मझदार में ही डुबो दे। छोटी-मोटी अनबन तो प्यार में इजाफा भी करती है, यदि दृष्टिसही हो। पर तुम्हारी कोशिश यही रहे कि तिल का ताड़ न बने और अव्यावहारिकता पति-पत्नी के बीच दीवार बन तलाक का कलंक तुम्हारे जीवन को न लगे।

बहना! यहां ससुराल में तुम्हारी किस्मत अच्छी हो तब सब कुछ ठीक अन्यथा तुम्हारी किस्मत ने तुम्हें दहेज के भूखे भेड़ियों के जबड़ों में धकेल दिया जो भगवान का मालिक है। ऐसे हालात में तुम सबको समझाने की अन्त तक कोशिश करना, यदि फिर भी भेड़िये दहेज के पंजों से तुम्हारे पर कुतरना चाहे तो बहन कभी हिम्मत मत हारना। कुछ भी कर लेना पर आत्महत्या मत करना। घासलेट डालकर अग्नि की लफ्टों से लिपट कर कोई परीक्षा मत देना। यही परीक्षा तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी हार होगी। स्वयं के आत्मबल को मजबूत बनाना और अपने पावों पर खड़ी होकर वक्त के झंझावातों के थपेड़ेखाने को हिमालय बन अडिग खड़ी रहना। जमाना खुद तुम्हारे कदम चूमेगा।

गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर अब तुम वैवाहिक रथ की कुशल सारथी बन कर गृहस्थों को मंजिल की ओर सकुशल आगे बढ़ाती रहना। तुम्हें मालूम है न बहन, हम 21 वीं सदी में प्रवेश कर रहे हैं और पाश्चात्य-सभ्यता के असांस्कृतिक व्यवहारों का आवरण हम ओढ़ते जा रहे है। पश्चिमी देशों में बूढ़े माँ-बाप की दयनीय स्थिति बदतर है कि उन्हें बेटे-बेटियों को जन्म देना अभिशाप लगने लगा है क्योंकि बेटे-बेटियों का सुख, बूढ़े माँ-बाप को कभी नसीब नहीं होता। यही हालत यहां भी बड़ी तेजी से घर-घर में फल रही है।

इसलिये बहन! बस एक रत्न ही घर में काफी है, फिर लड़का हो या लड़की, अन्यथा पूरा जीवन उनको पालपोस कर बड़ा करने में व्यतीत हो जायेगा, उनकी जिम्मेदारियां पूरी करने में ही तुम दोनों स्वयं को खपा दोगे और अंजाम वही आयेगा कि आप बूढ़े हो गये तो हॉस्टल में भर्ती करवा दिये जाओगे। पुराने जमाने के संस्कारों का वृक्ष तो कब का सुख चुका है बहन। अतः यह ख्याल अच्छी तरह रखना कि एक ही औलाद हो जिसे पूरी तरह सुसंस्कृत बना सको और पूरी एकाग्रता के साथ उसे एक अच्छा इन्सान बनाने में स्वयं को खपा सको। यदि वह अच्छे फल दे तो ठीक वरना प्रति फल भाग्य पर छोड़ अपने पति का सच्चा सहारा बन अपने जीवन-रथ को कुशलतापूर्वक चलाते हुए स्वयं को समाज एवं दीन-दुःखियों की सेवा में समर्पित कर देना।

भ्रूण हत्या का महापाप तुम्हारे माथे न आये, अतः सोनोग्राफी कर गर्भ जांच कराने की भूल कभी मत करना और यह पता कतई न लगाना कि पेट में लड़का है या लड़की।

पत्र के शुरु में मैंने तुमसे कहा है कि- तुम अपने माँ-बाप से पूछना कि- तुम्हारे जन्म पर वे दुःखी क्यों हुए ? कारण स्पष्टहै कि बहन। बेटी के जन्म से लेकर ससुराल विदा करने के उत्तरदायित्वों को निभाते-निभाते तुम्हारा बाप असमय बूढ़ा हो जाता है और क्रूर समाज उसकी मजबूरियों का उपहास उड़ाकर प्रतिदिन सर्पदंश बन कर उनकी मानसिक चेतना को डसता रहता है। इसलिये तो बेटी के जन्म पर मातम छा जाता है, बहन।

तुम सृष्टि की रचनाकार हो, सृष्टि की रचना में तुम्हारा बराबर का हिस्सा है। अतः कभी अपने स्वाभिमान के साथ समझौता मत करना, साथ ही साथ कोई ऐसा काम भी मत करना जिससे तुम्हारे माँ-बाप का सिर शर्म से झुक जाये जिसमें मुख्य है, घर से भाग जाने की महामूर्खता।

तुम अब सोलहवां बसन्त पार कर चुकी हो, तुम परि-पक्व हो चुकी हो। यह मानव जीवन बार-बार नहीं मिलता। अतः कोई भी कदम उठाने से पहले तुम अपने, अपने परिवार अपने समाज और अपने देश के प्रति सचेत रहना क्योंकि नारी अपने आप में विद्यालय होती है। तुम भटक गई तो पूरा देश भटक जायेगा।

पत्र पढ़ते-पढ़ते शायद ऊब रही होगी और वैसे भी इस कलयुग में किसी को सीख अच्छी नहीं लगती पर मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूं, तुम्हारे भविष्य की मुझे चिन्ता है, अतः यह पत्र पढ़कर नाराज नहीं होना बहना। बहन! इस सीख को जीवन के दर्पण में सजाकर रखना। यकीन मानना तुम्हारा जीवन सदैव सुखमय रहेगा। कहीं भी, कभी भी तुम अपनी खुशहाली के लिये, इसे बड़े भाई की कुर्बानी की आवश्यकता समझो तो बेझिझक याद करना। ढेर सारा आर्शीवाद और तुम्हारे सुन्दर एवं सुखमय भविष्य के लिये शुभकामनाएं।तुम्हारा बड़ा भाई

युगराज जैन, मुम्बई -आत्म रश्मि से

यह आप करेगें तो पुण्य की छोली भरेगें ......!

जैन धर्म में मनुष्य जीवन को पाप पुण्य के अनुसार फल मिलते है ऐसा बताया गया है, अगर पुण्य अर्जित की तो उसके उदय से सुख और पाप किया तो उसके उदय से दुःख ही मिलता है। शास्त्रों में पुण्य ही पुण्य कमाने के कुछ सरल तरीके बताये हैं।

✲ 5500 सौनेया खर्चकर जीवभिगम, पन्नवणा, भगवती सूत्र आदि लिखने से जितना पुण्य होता है उतना पुण्य किसी को मुहपत्ति देने से होता है।

✲ 5500 गर्भवती गायों को अभयदान देने से जो पुण्य होता है, यह एक मुहपत्ति देनेवाले को होता है।

✲ 25000 शिखर युक्त जिनालयों के निर्माण करवाने से जितना पुण्य होता है, उतना पुण्य एक चरवाला देने से होता है।

✲ मासक्षमण की तपस्या अथवा जीवदय हेतु 1 करोड़ पिंजरे निर्माण करने के समान पुण्य एक आसन (बैठका) देने से होता है।

✲ 84000 दानशालाओं को बंधवाने से जितना पुण्य होता है उतना पुण्य गुरु को द्वादशावर्त वंदन करने से होता है।

✲ पांच सौ धनुष प्रमाण वाली 28000 प्रतिमा भरवाने से जो पुण्य होता है उतना पुण्य एक इरिवाहिया करने से मिलता है।

✲ 10000 गायों का एक गोकुल कहलाता है, ऐसे 10000 गोकुलों के गायों को दान में देने से जो पुण्य मिलता है उतना पुण्य प्रतिक्रमण का उपदेश देने से मिलता है। (प्रबोध टीका)

✲ मणिजड़ित स्वर्ण की सीढ़ी युक्त 1000 स्तम्भ युक्त ऊंचा, स्वर्ण के तल वाला श्री जिनमंदिर का निर्माण करवाने से जितना पुण्य होता है उतना पुण्य तप सहित एक पौषध करने से मिलता है।

✲ कोई व्यक्ति 20 लाख करोड़ सोने का दान करें, उससे भी अधिक फल एक सामायिक करने से मिलता है।

✲ दीवाली का छठ करने से एक लाख करोड़ उपवास का फल मिलता है।

✲ मौन एकादशी का उपवास करने से 150 उपवास का फल मिलता है।

✲ थाली धोकर पीने एवं मंदिर का कचरा निकालने से आयंबिल का लाभ मिलता है।

✲ एक करोड़ सोना मुहर दान करने से या 7 मंजिल का सोने का मंदिर बनवाने से भी अधिक लाभ एक दिन का ब्रह्मचर्य पालन से मिलता है।

✲ जिनमंदिर की ध्वजा चढ़ानेवाले की 101 पीढ़ी नरक में नहीं जाती है।

कुछ जैन परिभाषिक शब्द

1- आत्मा की ज्ञान दर्शन में प्रवृत्ति.... **उपयोग।**

2- कर्मो का आत्मा से छुटना....**क्षय** ।

3- सिद्धांत विरुद्ध आचरण करना.... **उम्मग्गो।**

4- प्राप्त वस्तु पर ममत्व भाव रखना.... **लोभ।**

5- जिवादि नवतत्वों को जो स्वीकारता है....**सम्यक्त्व।**

6- एक दिशा में प्रशंसा हो.... **यश।**

7- गुणगान करना, स्तुति करना.... **वंदन।**

8- जीव रक्षा का साधन (चरवला आदि)....**उपकरण।**

9-सामान्य रुप से नियम का पालन करना.... **उत्सर्ग।**

10-जिस बोध से सम्यक्त्व की या विरती की भावना जागृत हो.... **बोधि।**

11-मस्तक झुकाकर नमस्कार करना.... **नमन।**

12-नियम की रक्षा के लिए आपत्ति आने पर मार्ग ग्रहण करना.... **अपवाद।**

13-जिन जीवों ने एक बार भी निगोद छोड़कर दूसरी जगह जन्म लिया.... **व्यवहार राशि।**

आयंबिल....आयंबिल........

1-श्रेणीकराजा की कौन सी रानी ने दीक्षा लेकर आयंबिल वर्धमान तप 14 वर्ष में पूर्ण किये ? ....

रानी महासेन कृष्ण।

2-धन्ना मुनि ने आजीवन कौन सी तपस्या का पारणा आयंबिल से किया ? .... **बेले की।**

13-60,000 वर्ष तक आयंबिल करने से किसको दीक्षा की आज्ञा मिली ? .... **सुंदरीजी।**

4-आयंबिल करने से किसका कुष्ठ रोग नष्ट हुआ ? .... **श्रीपालजी का।**

5-तामली तापस 60,000 वर्ष तक चावल को कितनी बार धोकर आयंबिल करते थे ? ....**21 बार।**

6-बेले-बेले पारणे में मुट्ठी भर बाकुले का आयंबिल करने से वैक्रिय लब्धि किसे प्राप्त हुई ?...**अंबड संन्यासी।**

7-बाल विधवा आदि शील पालते हुए विगई त्याग अथवा आयंबिल करें तो कितने हजार वर्ष की देवी बनती हैं ? ....**64।**

8-शत्रुंजय पर 1 आयंबिल करने से कितने उपवास का लाभ मिलता हैं ? .... **15।**

9-बेले-बेले के पारणे में आयंबिल करके कौन सी सती ने अपने शील की रक्षा की ? .... **द्रौपदीजी।**

10-वचन से कोई पाप होने पर अगले दिन आयंबिल कौन करते थे ? .... **कुमारपाल राजा।**

11-साढ़े बारह वर्ष तक अखण्ड आयंबिल कौन से आचार्यजी ने किये थे ? .... **जगतचन्दसूरिजी**

केवलज्ञान

झांझरिया मुनि- शिरच्छेद की राजाज्ञा जान उच्च भावना से भावित।

चण्डरुद्राचार्य- नूतन मुनि को खमाते हुए।

मरुदेवी माता- हाथी की अंबाड़ी पर।

मृगावती- गुरुणी चंदनबालाजी को खमाते हुए

पुष्पचूला साध्वी- अरणिका पुत्राचार्य के लिए निर्दोष गोचरी लाकर देते हुए।

रतिसार कुमार- पत्नी को सोलह श्रृंगार से श्रृंगारते हुए।

गजसुकुमाल- मस्तक पर अंगारे का उपसर्ग सहते हुए।

वल्कलचिरि- पात्रा प्रमार्जना करते हुए।

भद्रसेन- डंडे की मार व विहार में गुरु की गाली खाते हुए।

कनकावती- गृहवास में (सती दामयंती का जीव)

चंदनबाला- शिष्या मृगावती को खमाते हुए।

शीतलाचार्य को- चार भानेज मुनिओं को खमाते हुए।

कपिल ब्राह्मण- लोभ से फिरते हुए।

अरणिकाचार्य- नदी पार करते हुए विराधना के डर से।

आषाढ़भूति- भरतेश्वर वैभव (राष्ट्रपाल) नाटक करते हुए।

कूर्मा पुत्र- घर में बैठे-बैठे।

पुण्याढ्य राजा- वीतराग प्रभु के भाव से दर्शन करते हुए।

अइमुत्ता मुनि- इरियावही बोलते-बोलते

माषतुष मुनि- मारुष.... मातुष.... शब्द को याद करते हुए भरत चक्रवर्ती, आदित्ययशा आदि।

महाराजा- आरिसा भवन में अनित्य भावना भाते हुए।

बाहुबली- अभिमान छोड़कर भाईयों को वंदन करने जाते समय।

प्रसन्नचन्द्र राजर्षि- मस्तक उपर मुकुट शोधते हुए।

मेतारज मुनि- सोनी का परिषह सहन करते हुए।

इलाची कुमार- निर्विकार भाव से मुनि को गोचरी वहोराते देखकर।

कुरगडु मुनि- संवत्सरी के दिन आहार करते हुए।

खांदक मुनि- सेवकों द्वारा शरीर की चमड़ी उतरवाते हुए।

नागकेतु- वीतराग प्रभु की पुष्प पूजा करते हुए।

ढंढण अणगार- मोदक को परठने के लिये चूरा करते हुए।

पृथ्वीचन्द्र राजा- सिंहासन पर बैठे-बैठे केवली गुणसागर की बात सुनते हुए।

✻ आत्मा को पहचानना हो तो आत्मा के परिचयी बनो, परवस्तु के त्यागी बनो।

निरापद नहीं है मोमबत्तियां

✽ मेनका गांधी

क्या आपको मालूम है कि अंग्रेजी समारोह (सेरीमोनी) शब्द मूलतः लैटिन भाषा के ''समोनियस'' से बना है जिसका अर्थ ''सार्वजनिक समारोह में मोमबत्ती लेकर चलने वाला व्यक्ति होता है। मोमबत्ती व्यवसाय भारत में घरेलू खपत और निर्यात दोनों क्षेत्र में बढ़ा है। मोमबत्तियों का उपयोग रेस्तराँओ में, जन्मदिन के अवसर पर और धार्मिक आयोजनों आदि में होता है। मोमबत्ती क्या है और कैसे बनती है, यह जानना आपके लिये आवश्यक होगा।

मोमबत्तियों के बारे दो बातें गौरतलब है। एक तो यह कि ये शाकाहारी नहीं होती है। दूसरे, सभी मोमबत्तियां प्रदूषण फैलाती हैं। मोम और बत्ती रंगीन और सुगंधित होती है। पहले मोम के बारे में जानें। पहले मोम पशुओं की चर्बी को उबाल कर और सख्त बनाकर तैयार किया जाता था। उसकी बदबू को दूर करने के लिये उसमें सुगंध मिलाई जाती थी। 1700 से लेकर दो शताब्दियों तक हजारों स्पर्म व्हेलों को मार कर उनके सिरवाले हिस्से में मिलनेवाले स्पर्मसेटी नामक तेल को मोमबत्तियाँ बनाने के काम में लिया जाता था। उसके बाद मधुमक्खियों के छत्ते वाले दोनों तरीके अब भी प्रचलित है। लेकिन 1850 के बाद पैराफीन का उपयोग किया जाने लगा। यह पेट्रोलियम उत्पाद तैयार करने के बाद बचा पदार्थ है और आजकल सामान्य इसे ही काम में लिया जाता है। यह सस्ता और सहज उपलब्ध है। रंगहीन होता है। दुर्भाग्यवस से पैराफीन की मोमबत्तियों से धुआं निकलता है जिसमें बेंजीन और तेलीय पदार्थ भी होते हैं। पैराफीन का उपयोग किया जाने लगा। यह पेट्रोलियम का उत्पाद तैयार करने के बाद बचा पदार्थ है। यह सस्ता और सहज उपलब्ध है। रंगहीन होता है। दुर्भाग्य से पैराफीन तो पुनः प्राप्त किए जा सकने वाले संसाधनों में आता है। फ्रांस ने 1811 में पशुओं की चर्बी से स्टीयरिन (स्टीयरिक अम्ल) नामक पदार्थ को अलग किया। स्टीयरिन को ट्राईथानोलामाइन के साथ मिलाने से एक तो पैराफीन का गलनांक बढ़ जाता है और दूसरे उसमें रंग और सुगंध को आसानी से मिलाकर मोम को गाढ़ा बनाया जा सकता है। इसलिये चाहे जैसे भी बनाई गई हों, सभी मोमबत्तियों में पशुओं की चर्बी से निकाला गया स्टीयरिन तो होता ही है। मधुमक्खियों के छत्ते से मिलने वाले मोम का उपयोग भी कभी अकेले नहीं किया जाता। उसे सख्त बनाने और ज्यादा समय तक जलने के लिये पेट्रोलियम के सूक्ष्म स्फटिक मिलाए जाते हैं। इसी प्रकार उसे चमकीला बनाने के लिये नेफ्‌था से मिले पोलिएथिलीन मिलाते हैं। सबसे मुलायम मोम पेट्रोलियम में एक दिक्कत मोम के मुलायम होने के कारण बत्ती डालने की होती है। इसके लिये धात्विक रेशों से बनी बत्ती की जरुरत होती है। सोयाबीन से बना सोय मोम से ज्यादा साफ होता है। यह ज्यादा समय तक जलता है और विषाक्त प्रभाव रसायनों से भी मुक्त होता है।

मोमबत्ती लगे वाली बत्ती बल देकर और ऐंठ देकर पौधों से प्राप्त रेशों या कपास से बनती है, मुलायम मोम से मोमबत्ती बनाने के लिये धागे के चारों ओर कागज या धात्विक रेशे काम में लिये जाते हैं ताकि वह कड़ा बना रहे। इसके लिये सीसे, जस्ते या ताँबे का उपयोग किया जाता है। सीसे से समस्या होती है। इसलिये अमेरिका में उस पर प्रतिबंध है। लेकिन भारत, चीन और यूरोप में उसका उपयोग किया जाता है। सीसा जब जलता है तो लैड आक्साईड निकलता है। यह अगर साँस से मानव शरीर में पहुंच जाए तो फेंफड़ों में जम जाता है। इससे कई बीमारियाँ पैदा होने का खतरा होता है। रंग और सुगंध के लिये रासायनिक यौगिक मिलाने की जरुरत होती है। जब मोमबत्तियां जलती है तो उसमें मिलाये गए यौगक भी जलते हैं। क्या सुरक्षित है और क्या विषाक्त है, इसका ध्यान मोमबत्ती उत्पादक नहीं रखते।

शासन-समाचार

दादर वेस्ट श्री संघ में जन्मोत्सव मना

मुंबई- श्री राम गुरुधर जैन संघ में पूज्य साध्वीवर्या श्री भव्यव्रताश्रीजी, साध्वी श्री विन्रमव्रताश्रीजी म.सा.की निश्रा में 16 सितंबर को पूज्यश्री के जन्मोत्सव पर ज्ञानाचार के सम्यग् ज्ञान 51 खमासमण, दर्शनावार के अंतर्गत राई देवसीय प्रतिक्रमण, मौन सामायिक और आयंबिल का आयोजन किया गया। प्रभु आंगी, अनुकम्पादान, अभयदान किया गया।

बड़ा उपाश्रय में गच्छाधिपति श्री की जन्मोत्सव अनुमोदना

उज्जैन- श्री हीरविजय सूरी जैन बड़ा उपाश्रय में पूज्य आचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी एवं वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा और प्रेरणा से सागर संघताज पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के 100 वें वर्ष प्रवेश पर जन्मोत्सव पर 100 दिन तक प्रतिदिन एक आयंबिल नमो आयरियाणं का जाप, 36 लोगस्स का काउसग्ग के आयोजन के साथ प्रतिदिन दादाश्री आदिनाथ प्रभु का छोटी शांति, संतिकरं आदि स्त्रोत द्वारा अखाण्ड अभिषेक, 100 जीवों को अभयदान आदि के साथ दीर्घ आयुष्य की कामना की गई।

कालधर्मः- परम पूज्य आगमोद्धारक समुदायवर्तीय साध्वी श्री प्रशमशीला श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री प्रशमतीर्थेश्वर श्रीजी म.सा. का दिनांक 25/9/2020 को जामनगर में 12 वर्ष संयम के उपरांत 78 वर्ष की आयु पूर्ण कर कालधर्म हो गया।

✽ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल अक्टूबर-2020

मेष– आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में आशा अनुसार वृद्धि होगी, उच्च कोटि का मनोबल रहेगा, व्यापार में कोई नई योजना क्रियान्वित होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

वृष– आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में अधूरे कार्य पूर्ण होंगे, इस माह क्रोध एवं वाणी पर अवश्य नियंत्रण रखें, धार्मिक कार्यो में रुचि रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम करना होगा।

मिथुन– आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में वृद्धि हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी, परिवार में कोई विशेष उत्सव संभावित है, व्यय की अधिकता रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये तनाव का समय रहेगा।

कर्क– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, दूर स्थानों से विशेष लाभ संभावित है, कार्य में आशा अनुसार परिणाम प्राप्ति रहेगी, पदोन्नति की संभावना भी रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ समाचार संभावित है।

सिंह– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग कार्य में वृद्धि करवाएगा, यह समय भाग्योदय कारक रहेगा, परिवार में संतोषजनक वातावरण रहेगा, विद्यार्थी वर्ग में परिश्रम की अधिकता रहेगी।

कन्या– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में लाभप्रद योजना शामिल होगी पार्टनर का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में वर्चस्व वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ समय रहेगा।

तुला– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापार में कोई विशेष सफलता संभावित है, वृद्धजनों के आर्शीवाद से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे, परिवार में किसी प्रकार का महोत्सव आदि संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये अनुकूल समय रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह समय समान्य फलदायक रहेगा, आशा अनुसार लाभ प्राप्ति ना होने से निराशा संभावित है, व्यय की अधिकता मानसिक तनाव दे सकती है, माह का उत्तरार्द्ध शुभ रहेगा।

धनु– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा बौद्धिक कार्यों में वृद्धि होगी, सामाजिक क्षेत्र में वर्चस्व प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं उभर सकते है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

मकर– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, आते हुए लाभ में बाधाएं आ सकती है व्यय की अधिकता रहेगी, उच्चाधिकारियों का सहयोग बेहतर संभावना दे सकता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

कुम्भ– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में पार्टनर के सहयोग से नई योजना बनेगी, संचित धन में वृद्धि होगी, कार्य का विस्तार होगा, दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी।

मीन– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापार में हानि होने की संभावना है, संतान पक्ष से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, मान सम्मान में वृद्धि हेतु बेहतर समय रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम की अधिकता रहेगी।

वर्ग पहेली क्रमांक-*306*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	3	■	4		5	
	■	6		7		■		■
8	9		■	10		■	11	12
■	13			■	14	15		
16	■		■	■	■		■	
17	18		19	■	20		21	
22		■	23	24	■	25		26
■		■	27		28		■	
29				■	30			

बाएं से दाएं:-

1- प्राकृत भाषा में एक कोष....राजेन्द्र कोष (4)
4- तीर्थंकर विमलनाथ भगवान के पिता.... (4)
6- स्वामी विवेकानंद के गुरु-....परमहंस (4)
8- सत्रहवें विहरमानजी का नाम- वी.... (3)
10-पुण्य का विलोम शब्द.... (2)
11-महिना, माह का पर्याय.... (2)
13-बारह चक्रवर्ती में से दूसरे चक्रवर्ती का नाम- .... (3)
14-तपस्वी जैन श्रमणों को जैन ग्रंथों में .... भी कहा गया है (4)
17-कुशल, प्रवीण का पर्याय.... (2)
20-ध्वज, झण्डा का समानार्थी शब्द....(3)
22-मुझे तोड़ लेना व.... ली उस पथ पर तुम देना फेंक, मातृभूमि पर शीष चढ़ाने जिस पथ जावे वीर अनेक (2)
- माखनलाल चतुर्वेदी की ''पुष्प की अभिलाषा'' कविता से
23-तीर्थंकर नमिनाथजी के पिता का नाम-.... यसेन (2)
25-स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अ. .... है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा- लोकमान्य तिलक (3)
27-फिर वही शाम, वही गम, वही तनहाई है-गीत वाली फिल्म.... (4)
29-.... में प्रवेश करते ही 3 बार ''निसीही'' बोलते है (4)
30-श्रीमद.... को महात्मा गांधी का आध्यात्मिक गुरु भी कहा जाता है (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-305 का परिणाम

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

ढा	■	सी	■	वि	श्व	से	न	■
ई	क	ता	रा	■	से	■	म	न
■	रं	■	ग	ब	न	■	■	वा
चं	द	न	■	द	■	वी	रा	न
द्र	■	ह	स्ति	ना	पु	र	■	ग
प्र	ह	र	■	व	■	म	ग	र
भा	■	■	ब	र	स	■	ग	■
ष	मा	■	ल	■	मो	ह	न	खो
■	म	णि	भ	द्र	■	रि	■	इ

ऊपर से नीचे:-

1- जैसलमेर के निकट एक तीर्थ.... सागर (3)
2- धार का पुराना एक नाम .... (5)
3- नवकार महामंत्र का दूसरा नामः ....(2)
4- हर माह में एक शुक्ल पक्ष और दूसरा....होता है (2,2)
5- जीरावला और मंडार के निकट भ.महावीर का तीर्थ .... (4)
7- दया, करुणा, अनुकम्पा, अनुग्रह, मेहरबानी का पर्याय.... (2)
9- पाली जिले में मांडण संघवी का बनवाया भगवान पार्श्वनाथ का तीर्थ- ....ली (2)
12-संपूर्ण जैन समाज के लिये प्रयुक्त शब्द-.... जैन श्रीसंघ (3)
15-सम्मेत शिखार पर्वत को सभी पर्वतों का राजा यानि .... कहा जाता है (6)
16-भ.महावीर 25 वें भव में .... मुनि थे (3)
18-संवत्सरी दिवस को.... पर्व के रुप में मनाया जाता है (4)
19-तीर्थंकर भ.अरिष्टनेमि के पिता का नाम है- समु....जी (1,3)
21-सुपार्श्व रिश्ते में भ.महावीर के.... होते थे (2)
24-सम्मेत शिखरजी वह पुण्यस्थली है.... से 20 तीर्थंकर मोक्ष सिधारे (2)
26-श्री रामजन्मभूमि के ऐतिहासिक शिलान्यास कार्यक्रम में आमंत्रित जैन धर्म के प्रतिनिधि-जैनधर्म गुरु श्री....कीर्ति स्वामी (3)
28-बिहार के.... शहर का प्रसिद्ध जैन मंदिर है-विश्राम जो भगवान को समर्पित है (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-306

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

1- शादी के फेरे फिरते 84 के फेरे किसने टाले ?
2- चोरे के प्रमुख मीटकर संघ के प्रमुख कौन बने ?
3- एक रात्रि में 525 को किसने प्रतिबोध किया ?
4- हंस पर बैठकर कौन तैर गये ?
5- आचार्य देश में से आकर अणगार कौन बना ?
6- वंदना के बैरागी कौन बने ! विरति किसने ली ?
7- आँख से कर्म बांधे और आँख से ही कर्म किसने छोड़े ?
8- पंख की दया से परम पद किसने पाया ?
9- मौन के प्रतिबोध से संयम में स्थिर कौन हुए ?
10-गुमान छोड़कर गणधर कौन बने ?
11-कर्म के हार में बैठकर काम का खून किसने किया ?
12-कांच के महल में केवली कौन बने ?

✻ स्वर्गीय गोखले के लेखों और भाषणों का अनुवाद गुजराती में करने का कार्य एक सज्जन को सौंपा गया। वह छपने लगा। उसकी भूमिका गांधीजी को लिखनी थी। छपे फर्मे सामने आए और अनुवाद का स्तर देखा गया तो वह घटिया प्रतीत हुआ।

गांधीजी ने कहा-''अप्रमाणिक वस्तु जनता को दूँ, यह मुझसे न हो सकेगा।'' उन्होंने सारे छपे हुए फर्मे जलवा डाले, उन्हें रद्दी में नहीं बेचने दिया गया।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं. 030001000331
IFSC Code ICICI0000300

वर्गपहेली क्रमांक-305 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रेयांसकुमार जैन, उज्जैन (म.प्र.) -द्वितीय
3- श्रीमती सरोज तलेरा, इन्दौर (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :-

जवाहरलाल जैन, उज्जैन, स्नेहलता जैन, मंदसौर, सुधा लोढ़ा, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-305 के परिणाम

विजेता:-

एक मात्र सही उत्तर:-

स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.)

सही उत्तर-

1-बालमंदिर, 2- सुदर्शन सेठ, 3- आकाश, 4- पालक 5- कमल, 6- मनोरमा, 7- लक्षपाक 8- विनाश, 9- छ:, 10- विजय, 11-बाहुबली, 12- क्षमा।

✻ जिसका हृदय शुद्ध, संत की बतायी गई राह पर चलता है, उसको धन्य है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-10-2020 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमश:51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

भोपावर प्रतिष्ठाचार्य की निश्रा में गच्छाधिपति के जन्म शताब्दी वर्ष पर गुणानुवाद सभा हुई

* डॉ. सुभाष जैन ने पूज्यश्री के साथ के अनुभव बतलाये।
* प्रवचन अन्य आयोजन पर ब्रेक लगा हुआ है।
* साध्वी भगवंतों की वाचना चल रही है।
* आगे के धार्मिक महोत्सव गाईड लाईन के अनुसार ही होंगे।

उज्जैन- सागर समुदाय के वचन सिध्द वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ यहां विराजित सागर समुदाय के सभी गुरु भगवंत, साधु-साध्वी की निश्रा में सागर श्रमण संघसरताज पूज्यपाद जिनागम सेवी आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के जन्म शताब्दी वर्ष पर जन्म दिवस भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर को आयोजित गुणानुवाद सभा के मुख्य निश्रादाता पूज्यपाद वचनसिद्ध आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा रहे। साथ आचार्यदेव श्री मुक्तिसागरसूरीजी म.सा. के पंन्यास अचलमुक्तिसागरजी, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी, मुनिश्रीमनमुक्ति सागरजी म.सा. एवं वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रिय दर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मुक्ति दर्शनाश्रीजी, साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्री जी म.सा. आदि ठाणा की पावन गरिमा मय उपस्थिति रही। पूज्यश्री के जीवन दर्शन के बारे में आचार्य श्री नरदेव सागर सूरीजी म.सा. ने प्रकाश डालते हुए बतलाया कि पूज्यश्री आपके गुरुभ्राता है और आगम ग्रंथ पर आपने जो कार्य किया है वह यादगार है। आचार्यश्री मुक्ति सागर सूरीजी म.सा.ने कहाकि-पूज्यश्री आनेवाले 50 हजार दिन तक हमें आर्शीवाद बरसाते रहे। पूज्य पंन्यास श्री अचलमुक्तिसागरजी, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी ने भी प्रेरक उद्बोधन दिये। आगमोद्धारक सम्पादक डॉ. सुभाषजैन ने पूज्यश्री के साथ हुए जीवन स्मरण से अवगत कराया। त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 100/- रुपये के साथ श्रीफल, लड्डू, पेड़े की प्रभावना हुई।

श्री शंखेश्वर आगम मंदिर में गच्छाधिपति के जन्मोत्सव पर भव्य गुणानुवाद सभा, सामायिक आयंबिल हुए

शंखेश्वर- श्री आगम मंदिर संस्थानमें पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगम रत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू.आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्न सागर जी म. सा.आदि साधु-साध्वी आदि ठाणा की निश्रा में यहां पर परमात्मा की भव्य आंगी के साथ आगम मंदिर में पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के 100 वें जन्म वर्ष में प्रवेश पर भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर 2020 को गुणानु वादसभा का आयोजन किया गया। सामुहिक आयंबिल और सामायिक भी हुई।ऑनलाईन मुनिश्री वज्ररत्नसागरजी म.सा. ने पूज्यश्री पर सुन्दर उद्बोधन दिया। दादा शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की सुन्दर अंगरचना हुई।

बड़नगर में जन्मोत्सव पर त्रिदिवसीय आयोजन

बड़नगर- पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा. मुनिप्रवर श्री चारित्राचंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्रसागरजीम.सा.एवं साध्वीवर्या श्री मेघावर्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा में यहां दादाश्री आदिनाथ प्रभु की छत्राछाया में पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री का जन्मोत्सव उत्साह और आनन्द से मनाया गया। भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर को श्रमण भाव वंदना एवं गुणानुवाद सभा हुई। त्रिदिवसीय आयोजन के अंतर्गत पूजन पढ़ाई गई। 100 दिवसीय अखाण्ड एकासणा, आराधकों का बहुमान किया गया। जिन मंदिरों में दीप श्रृंगार आंगी रचाई गई। 45 आगम के कंठस्थ नाम याद करने वालों का बहुमान किया गया।

गणिवर्यश्री की निश्रा में जन्मोत्सव मनाया गया

भोपाल-भोपाल- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर अरोरा कालोनी भोपाल में आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सागर समुदाय के सरसंघ चालक पूज्यपाद जिनागमसेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वें वर्ष में प्रवेश पर गुणानुवाद सभा का आयोजन जन्म दिवस भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर 2020 को किया गया। संघ में सामुहिक सामायिक, आयंबिल के आयोजन के साथ जिनालय में परमात्मा की आंगी रचाई गई। 18 सितंबर को आपश्री की महामांगलिक का आयोजन भी हुआ।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

100 से अधिक साधु-साध्वी की निश्रा में सागर गच्छाधिपतिश्री का 100 वां जन्मोत्सव युवा जैनाचार्यश्री के मार्गदर्शन में मनाया गया

*पांच दिवसीय जन्मोत्सव का आयोजन। *18 अभिषेक-भक्तामर और सिद्धचक्र महापूजन हुई। *गुणानुवाद सभा में शताय गुरु के लिये शतक से अधिक साधु-साध्वी सम्मिलित। *आगमोद्धारक का समर्पण विशेषांक गच्छाधिपति को समर्पित होगा। *भावनगर में भी गुणानुवाद सभा हुई। *साध्वी भगवंतों के जोग क्रिया सतत् चालू। *महामांगलिक का आयोजन 18 सितंबर को हुआ। *चार्तुमास के बाद आगे आयोजन पर मंथन। *कोरोना महामारी से धर्म क्रिया आयोजन प्रभावित।

पालीताना-जम्बुद्वीप वर्धमान पेढ़ी पर चातुर्मासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के द्वितीय शिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म. सा., मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी, मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रामें पूज्यपाद सागर संघ गच्छाधिपति जिनागम सेवी शतायु आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वें वर्ष में प्रवेश पर भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर को शतक से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में गुणानुवाद सभा में रही। पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा और मार्गदर्शन में पालीताना में विराजित सभी साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 13 से 17 सितंबर 2020 तक आयोजित जन्मोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत 13 सितंबर को पंच कल्याणक पूजन पढ़ाई गई। 14 सितंबर को आगम मंदिर में सुबह और जम्बुद्वीप में विजयमुहूर्त में 18 अभिषेक का आयोजन हुआ। 15 सितंबर को गुरु वंदनावली का आयोजन पालीताना में विराजित गुरु भगवंतों की निश्रा में हुआ। दोपहर से भक्तामर महापूजन पढ़ाई गई। 16 सितंबर को जन्म वधावणा के साथ भव्य गुरु गुणानुवाद सभा में पालीताना में विराजित गुरु भगवंतों ने पूज्य गच्छाधिपति को शब्द सरोवर अर्पित किये। दोपहर में श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई। 17 सितंबर को सत्तरभेदी पूजन के साथ जन्मोत्सव की पूर्णाहुति हुई। पूज्यश्री की निश्रा में साध्वी भगवंतों को जोग क्रिया चल रही है। वाचना का आयोजन भी प्रातःकाल हो रहा है। 18 सितंबर को पूज्यश्री की महामांगलिक का आयोजन हुआ जिसका प्रसारण पारस चैनल पर हजारों धर्मिष्ठों ने सुना। पूज्यश्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में गच्छाधिपति को समर्पित **''आगमोद्धारक समर्पण विशेषांक''** का प्रकाशन भी होने जा रहा है। कोरोना महामारी के संकट से धर्म क्रिया आराधना और आयोजन प्रभावित हुए। शासन के निर्देशानुसार आगे के आयोजन की रुपरेखा बनेगी।

भावनगर जैन श्रीसंघ में उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनि श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा.की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपति के जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। गुणानुवाद सभा और आयंबिल हुए। चार्तुमास कोरोना महामारी के मध्य शांत भाव से भावनगर में प्रसार हो रहा है। चार्तुमास के उपरांत आगे की धार्मिक योजनाओं और कार्यक्रम की रुपरेखा बनेगी।

जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी की निश्रा में गच्छाधिपति के जन्मोत्सव पर गुणानुवाद सभा हुई

✻ 18 सितंबर को महामांगलिक हुई।

बदनावर-पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव भोपावर तीर्थो द्धारक श्री नवरत्नसागरसूरीजी म. सा. के शिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजीम.सा. अर्हम्रत्नसागरजी सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां जैन धर्मशाला में श्रावक-श्राविका की मर्यादापूर्ण उपस्थिति में सागर समुदाय के गच्छाधिपति पूज्यपाद जिनागमसेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वें वर्ष में प्रवेश के शुभ मंगल अवसर पर भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर 2020 को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संघ में आयंबिल और सामायिक का आयोजन भी हुआ। दिनांक 18 सितंबर को आपश्री की महामांगलिक का आयोजन किया गया। अल्प श्रावक-श्राविका की उपस्थिति में धर्माराधना नियमित चल रही है।

श्री कंचनलालजी मंडोवरा का अवसान हुआ

गौतमपुरा- श्री भक्तामर तीर्थ के सचिव श्री कंचनलालजी मंडोवरा का अवसान विगत दिनों हो गया। आप पूज्य आचार्य देवेश श्री जिनरत्न सागरजी के भ्राता तथा आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा.एवं आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा. के संसारी काकाजी थे। सुश्रावक के रुप में जिनशासन की आपने अनुमोदनीय सेवा की है। आगमोद्धारक परिवार की ओर से श्रद्धासुमन।

उन्हेल में मना जन्मोत्सव

उन्हेल- श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्री संघ में पू. साध्वीवर्या श्री राजरत्ना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपति श्रीजी के 100 वर्ष प्रवेश प्रसंग पर 16 सितंबर को आयोजित गुणानुवाद सभा में श्री शांतिलाल मारु आदि ने पूज्यश्री का गुणगान किया। आयंबिल का आयोजन भी हुआ।

श्री पार्श्वपुरम् तीर्थ में त्रिदिवसीय महोत्सव

पार्श्वपुरम् तीर्थ- कोकण नव स्थापित तीर्थ पार्श्वपुरम् में तीर्थ स्थापक आचार्य श्री सागरचन्द्र सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में 21 श्री संघों के द्वारा संयुक्त रुप से पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री के 100 वें वर्ष प्रवेश शुभ मंगल प्रसंग पर भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर के अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 14 से 16 सितंबर तक आयोजित जन्मोत्सव महोत्सव के अंतर्गत 14 सितंबर का शुक्रस्तव अभिषेक हुए। 15 सितंबर को सागर के सर्व सूरीश्वरजी म.सा. को वंदना आयोजन हुआ। 16 सितंबर को गुरु पादुका पूजन तथा पूज्यपाद गच्छाधिपति के 36 गुणों की स्तवना की गई। सभी 21 संघों में अंगरचना, जीवदया और अनुकम्पा आदि कार्य भी हुए।

ठाकुद्वार संघ में गुणानुवाद हुई

मुंबई- श्री शांतिनाथ जैन देरासर ठाकुरदास संघ में चार्तुमास हेतु विराजित शासन प्रभावक आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी के शिष्यरत्न 87 राई प्रतिक्रमण मंडल के प्रेरक प्रखर प्रवचनकार मुनि विरक्त सागरजी म.सा. की निश्रा में गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. के 100 वर्ष पूर्ण होने से 16 सितंबर के दिन गुणानुवाद करते हुए बतायाकि -मेरा सौभाग्य है कि दीक्षा के बाद पूज्यश्री की निश्रा में रहने को मिला, पूज्यश्री आगमों के महान ज्ञाता है। ''जिनागमसेवी'' का विरुद्ध मिला है जितने भी आगम मंदिर बने है उनका Prof Reading पुज्यश्री ने किया है। पूज्यश्री के 100 वर्ष निमित्त ठाकुद्वार के मुलनायक शांतिनाथ भगवान का संतिकरम् महा अभिषेक 100 दिन तक चलेगा।

सराक प्राचीन जैन महासंघ के द्वारा बिहार, बंगाल, झारखण्ड में जन्मोत्सव

पालीताना- यहां विराजित सराक समाज के प्रथम आचार्य श्री चंद्रशेखर सागर सूरीजी म.सा.की प्रेरणा और मुनि श्री विश्वशेखरसागरजी, मुनि श्री दिव्य शेखरसागरजी के मार्गदर्शन में बिहार, बंगाल और झारखंड के जिनमंदिरजी गच्छाधिपति श्री केजन्म दिवा पर भव्य अंगरचना और भक्तों को प्रभावना वितरण की गई।

मिथिला कल्याणक तीर्थ की झलकी देखें

मिथिला- श्री मिथिला कल्याणक तीर्थ जो 8 कल्याणक की तीर्थ भूमि है इसका प्रतिष्ठा महोत्सव 18 जनवरी से 2 फरवरी 2020 तक हुआ था। प्रतिष्ठा की झलकियां दिनांक 16 अक्टूबर 2020 को रात्री 8.40 बजे से पारस चैनल पर दिखायी जायेगी।

धार में गच्छनायक का जन्मोत्सव तप, जप आराधना के साथ मना

धार- श्री अभ्युदय भक्तामरधाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100+100+150ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरजी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्नसागर जी म.सा.,मुनिश्री जिज्ञनेशरत्नसागर जी म.सा.,मुनिश्री गोयसरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सागर समुदाय के गच्छनायक पूज्यपाद जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा का 100 वें वर्ष के प्रवेश सुअवसर पर जन्मोत्सव भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर 2020 को तप, जप आराधना के साथ मनाया गया। मूलनायक श्री आदिश्वर दादा की भव्य अंगरचना सजाई गई। धार संघ में भी आयंबिल-सामायिक का सामूहिक आयोजन किया गया।चार्तुमास के बाद की धार्मिक गतिविधियों के लिये योजना बन रही है।

मुंबई के इन दो संघों में भी मना जन्मोत्सव

मुंबई- यहां के श्री अमिझारा वासुपूज्य-नडियाद श्री संघ तथा श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ मलाड़ (वेस्ट) में पूज्य साध्वी श्री तक्षशीला श्रीजी तथा श्री जिनांगश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में गच्छाधिपतिश्री के जन्मोत्सव पा त्रिदिवसीय आयोजन के साथ 14 से 16 सितंबर तक आयोजित जन्मोत्सव में आयंबिल, सामायिक, सवा लाख नमो आयरियाणं जाप एवं आंगी, जीवदया के साथ विशिष्ट प्रभावना का वितरण भी हुआ। पूज्य साध्वीश्री की प्रेरणा से श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन संघ में सोने की आंगी अनुकम्पा, जीवदया का आयोजन हुआ।

इन्दौर में 100 संस्था के 100 वरिष्ठों ने शब्द सुमन अर्पित किये

इन्दौर- श्री नवकार परिवार के द्वारा दिनांक 16 सितंबर को पूज्यश्री के 100 वें वर्ष प्रवेश पर जन्मोत्सव पर 100 संस्थाओं के 100 वरिष्ठों के द्वारा ऑनलाईन शब्द सत्कार समारोह का आयोजन किया गया।

गुरु को अद्भूत भेंट प्रदान की

–पूज्य साध्वीवर्या श्री अर्पितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री स्नेहनिधि श्रीजी म.सा. ने पूज्य गच्छाधिपतिश्री के जन्मोतसव पर एक दिन में संबोधत्तरी तथा श्री शत्रुंजय लघु कल्प की 100+81 नई गाथा याद कर पूज्यश्री को समर्पित की है।

बैगंलोर में जन्मोत्सव मना

बैगंलोर-श्री ऑसबर्न रोड़ जैन संघ में पूज्य साध्वीवर्या श्री दिव्ययशा श्रीजी साध्वी दिव्यदर्शाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में गच्छाधिपतिश्री के जन्मोत्सव पर 100 दिन अखण्ड ज्योत, शांतिधारा पाठ, साधार्मिक भक्ति, आयंबिल, सामायिक, पंच प्रतिक्रमण पुस्तक प्रकाशन, 10,000 जाप चारित्र, आचार्य और नवकार मंत्र साध्वीजी द्वारा 25000 स्वाध्याय त्रिदिवसीय आयोजन में सिद्धचक्र महापूजन, 18 अभिषेक आयोजन हुए।

जन्मोत्सव पर 1 लाख सामायिक का आयोजन

पूना- पूज्य साध्वीवर्या श्री दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के जन्मोत्सव पर 16 सितंबर को ऑन लाईन पंजीयन कर 1 लाख सामायिक का आयोजन किया गया। 50 विजेता को ड्रॉ निकाल कर सम्मानित किया गया। सामायिक 1 लाख से अधिक संख्या में हो गई।

शिवपुर तीर्थ में अनुयोगाचार्यश्री ने जन्मोत्सव मनाया

चापड़ा- पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा.की निश्रा में यहां पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री का जन्मोत्सव पर भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। पूज्यश्री ने फरमाया कि पूज्य गच्छाधिपति एक वर्ष पूर्व शिवपुर महातीर्थ पधारे थे। तीर्थ देख आनंदित होकर बोले कि- वीररत्न अद्भूत ! यहां पर परमात्मा मंदिर के साथ आगम मंदिर भी होना चाहिये । पूज्यश्री ने कहा कि- गच्छाधिपति 81 वर्ष के संयमी है, अनुशासन के पक्के है, पूज्यश्री की जितनी अनुमोदना की जाये कम है।

रतलाम में भी जन्मोत्सव के आयोजन हुए

रतलाम-देवसुर तपागच्छ श्री संघ गुजराती उपाश्रय और ऋषभदेव केशरीमलजी पेढ़ी के अंतर्गत साध्वीवर्या श्री पूर्णयशाश्रीजी म.सा. ,श्री सुचिप्रज्ञा श्रीजी, जिग्नेश रत्ना श्रीजी, राजगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के जन्मोत्सव पर 16 सितंबर को गुणानुवादसभा के साथ 60/- रुपये की प्रभावना, 224 सामायिक, 120 आयंबिल एवं 52/- रुपये की प्रभावना हुई।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश दौलतसागरसूरीजी महाराजा के शतवर्षीय होने पर 16 सितंबर को सम्पूर्ण जैन जगत में अनुमोदनार्थ गुणानुवाद सभा

✻ देशभर के श्री संघों मे आदर के साथ आनंद छाया। ✻ 450 जिन मंदिर आंगी सजाई गई। ✻ अनुकम्पा, जीवदया, अनाथ अपंग वृद्ध आश्रम में भोजन करवाया गया। ✻ साधर्मिक की विशेष सहायता की गई। ✻ सारे देश में गुणानुवाद सभा हुई। ✻ उपकारी गुरु भगवंत के उपकारों का स्मरण किया गया। ✻ सूरत के 100 दिनों से कार्यक्रम चले। ✻ 36 दिन तक लगातार अनुष्ठानों का आयोजन हुआ।

सूरत- सुविशाल सागर समुदाय के वर्तमान गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा ने जीवन के 100 वर्ष वर्ष में प्रवेश किया है। पूज्यश्री जैतपुर नामक गाँव जो मेहसाणा गुजरात के समीप है, वहां के एक पाटीदार समाज से है, आपश्री ने जेतपुर में भव्य जिन मंदिर का निर्माण करवाया है जहां नियमित 40-50 अजैन सेवा पूजा आरती के लिये आते हैं। आपश्री की एक अद्‌भूत अविस्मरणीय देन जैन जगत को है जो पूना के कात्रज में आगम मंदिर के नाम से विख्यात है, पूर्व में पूज्यश्री का चार्तुमास और 100 वर्ष की वय पूर्ण कर लेने पर एक अविस्मरणीय आयोजन पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन और प्रेरणा से पूना में होना था किंतु कोरोना महामारी से अब आपश्री चार्तुमास हेतु सूरत में ही विराजित है पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अजातशत्रु श्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी,पूज्यपाद आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वीवृंद के साथ घोड़दौड़ रोड़सरेलावाड़ी स्थित जैन उपाश्रय में बिराजमान आचार्य श्री दौलतसागरसूरी महाराज का 16 सितंबर को शताब्दी वर्ष में मंगल प्रवेश के अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। 200 वर्ष के इतिहास में सौ वर्ष में प्रवेश करनेवाले दौलतसागर सूरीजी महाराज प्रथम अजैन साधु है।

वर्तमान जैन शासन में सबसे बड़ी 100 वर्ष की उम्र और सबसे अधिक 81 दीक्षा पर्याय प्राप्त सागर समुदाय के 925 से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों के गच्छनायक पूज्य आचार्य श्री दोलतसागरजी का भादो वद-14 यानी 16 सितंबर 2020 बुधवार को 100 वें वर्ष में प्रवेश करने पर सरेलवाड़ी जैन संघ द्वारा गुरु राम पावन भूमि, स्टार मॉल के सामने पाल में त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। वर्तमान कोराना महामारी के दौरान कोविड-गाईड लाईन का संपूर्ण पालन करते हुए विविध धार्मिक कार्यक्रम श्रावक घर बैठे यू-ट्यूब हजारों धर्मिठों ने देखा। आचार्य श्री दोलतसागरजी के शताब्दी महोत्सव पर बड़े भोजन का आयोजन हो सकता है मगर इस अवसर को एक अलग तरीके से मनाने का निर्णय लिया। सूरत के सभी 450 जैन मंदिरों में भगवान की भव्य अंगरचना हुई। सरेलावाड़ी संघ तथा गोपीपुरा के सभी जैन घरों में मिठाई का वितरण किया गया। सूरत में सागर समुदाय में दीक्षा ली है उनके परिवारों का सम्मान, मेडिकल कैम्प का आयोजन, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, दिव्यांग स्कूल में भोजन, जीवदया पांजरापोल संस्था को दान आदि कार्यक्रम किये गये। करमसद् के कड़वा पटेल सरदार वल्लभभाई पटेल जो एक विशिष्ट राजपुरुष बने वही जेतपुर (महेसाणा) में शंकरभाई गलदास पटेल यानी आचार्य श्री दोलतसागरजी का जन्म हुआ था।

आचार्य श्री दोलतसागरजी जन्म से जैन नहीं थे फिर भी 925 सागर समुदाय के साधु-साध्वीजी का अधिनायक बनने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त है। जैन शासन के पिछले 200 वर्ष में आचार्य दोलतसागरजी प्रथम साधु है जिनका 100 वां जन्म दिवस मनाया।

पूज्यश्री के जन्म महोत्सव

के अंतर्गत 100 दिन तक भारतभर के जैन श्रीसंघों में अष्टप्रकार की पूजन, स्नात्र पूजन, नवकारसी, जीवदया,अनुकम्पा दान, एकासणा, आयंबिल चारित्र पद की आराधना जैसे अनेक धार्मिक आयोजन हुवे। पूज्यश्री को धर्म आधारित इस समर्पण महोत्सव में हजारों हजार श्रावक-श्राविका ने भाग लिया। सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों ने अनेक प्रकार की आराधना की। पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में सारे देश के जैन श्री संघों में अनेक तरह के आयोजन हुवे।

गच्छाधिपति पूज्यपाद जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के शासन प्रभावक कार्य

❋ पूना कात्रज जिनालय के प्रेरक मार्गदर्शक।

❋ श्री घसोई तीर्थ घसोई (म.प्र.)।

❋ पालीताना जम्बुद्वीप परिसर में 108 फीट दादा श्री आदिनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा।

❋ रोहिशाला तीर्थ प्रतिष्ठा आदि 37 जिनालयों के प्रतिष्ठाचार्य।

❋ सात आगम मंदिरों के निर्माण के लिये आगमग्रंथों को प्लेट का उत्कीर्ण कार्य करवाया।

❋ पंचांगी आगम की प्रतिलिपि तैयार करवाई।

❋ 35 स्थानों पर सचित्र बारसा सूत्र उत्कीर्ण करवाकर स्थापित करवाये।

❋ अनेक श्रीसंघों तथा गुरुदेवों को आगम सूत्र, बरसा सूत्र, ताम्रपत्र बनवाकर उन्हें अर्पित कर जोरदार श्रुतसेवा करनेवाले पूज्यपाद।

❋ तपागच्छीय श्रमण सम्मेलन की प्रवर समिति में पूज्यश्री का गौरवपूर्ण स्थान।

❋ 825 से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों के सरसंघ चालक गच्छाधिपति।

❋ पालीताना आगम मंदिर में अनेक मंदिरों के नूतन निर्माण के साक्षी गुरुदेव।

❋ नूतन गणधर मंदिर तलेटी की तीन देरी तथा सागर श्रमणी विहार के प्रेरणादाता प्रतिष्ठा उद् घाटन के निश्रादाता गच्छाधिपति।

❋ संवत् 2041 जम्बुद्वीप जिनालय की प्रतिष्ठा के समय सागर समुदाय सम्मेलन के मुख्य निश्रादाता पूज्यपादश्री।

❋ समुदाय के उत्कर्ष्ट गौरव हेतु पूज्यपाद श्री सदैव प्रेरणा करनेवाले गच्छाधिपतिश्री।

❋ सौ से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों को योगक्षेम करनेवाले पूज्यश्री।

जन्मः- संवत् 1977 भादवा वद-14, जेतपुर (गुजरात) जन्म नामः- शंकर भाई गलदास पटेल माताजीः- दीवाली बहन दीक्षा :- संवत् 1996 कार्तिक वद-10, नरोड़ा दीक्षादाता :- पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री महाराजा गुरुदेव :-संयम मूर्ति स्वर्गस्थ गच्छाधिपति श्रीदेवेन्द्र सागर सूरीश्वरजी महाराजा गणि :- संवत् 2021, अहमदाबाद पंन्यास :- संवत् 2029, महासुद-3, सूरत उपाध्याय :-संवत् 2043,वैशाख वद-3, अहमदाबाद आचार्य :-संवत् 2044 फागण सुद-1, अहमदाबाद गच्छाधिपति :- संवत् 2066 फागण सुद-12 शिष्य सम्पदा :- मुनिश्री निर्वेदसागरजी म.सा. मुनिश्री यशोदेवसागरजी म.सा.

मांडवगढ़ महातीर्थ मूलनायक सुपार्श्वनाथ जिनालय का शिलान्यास 8 नवंबर को जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में

✻ पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री का जन्मोत्सव मनाया गया।
✻ आचार्य भगवंतों की पावन निश्रा रही।
✻ आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी अध्यक्ष को सर्तकता का पत्र लिखा।

मांडवगढ़- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभयसागरजी म.सा. के सुशिष्य 60 वर्षीय दीर्घ संयम साधक, सिंह गर्जना के स्वामी पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराजा गुरुकुल के आचार्य भगवंत श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य देवेश श्री विवेकचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. सा., आचार्य देवेश श्री मतिचंदसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी ठाणा की पावन निश्रा में प्राचीनतम तीर्थ श्री मांडवगढ़ के मूलनायक प्रभु श्री सुपार्श्वनाथ दादा के जिनालय का आमूलपूर्ण जीर्णोद्धार निमित्त भव्य शिलान्यास का आयोजन 8 नवंबर को होने जा रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में होने वाले इस शिलान्यास के उपरांत एक अद्भूत भव्य अनोखा जिनालय का निर्माण होगा। पूर्ण निर्माण के बाद ही परमात्मा की प्रतिमा का उत्थान किया जायेगा। इस निमित्त तीर्थ को भव्य स्वरुप प्रदान करने की योजना पर व्यापक काम चल रहा है ताकि भविष्य में धर्मिष्ठों का आगमन बड़ी संख्या में हो, विगत दिनों पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के जन्मोत्सव पर भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर को भव्य गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन यहां पर हुआ। पूज्यश्री पर आचार्यश्री ने एक सुन्दर जीवनी भी लिखी है साथ ही पूज्य आचार्यश्री ने आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी के अध्यक्ष श्री संवेगभाई को सरकारी योजनाओं से सतर्क रहते हुए कार्य करने की सलाह देते हुए पत्र भी लिखा है क्योंकि सरकार की निगाह धर्म संस्थानों की धनराशि पर लगी हुई है।

साध्वी श्री कल्पद्रुमाश्री को 100 वीं ओली का पारणा 24 जनवरी 2021 को आगर में होगा

दुधलिया-सामग समुदाय के पूज्य मालव दीपिका पू. मनोहर इन्दु शिशु म.सा. के पूज्य साध्वी श्री वर्धमान तपाराधिका साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री कल्पद्रुमा श्रीजी म.सा. को वर्तमान में 99 वीं वर्धमान तप की ओली चल रही है। आपकी 100 वीं ओलीजी आसोज (निज) वदी-5 बुधवार दिनांक 7 अक्टूबर से आरंभ होगी। 100 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति पोष सुदी-11 रविवार 24 जनवरी 2021 को आगर मालवा में होगी। यहां सागर समुदाय के अनेक साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में भव्य तपोत्सव के साथ ओली का पारणा सम्पन्न होगा। ओली पारणा महोत्सव की तैयारी आरंभ हो गई है।

श्री नाकोड़ा भैरवदर्शन धाम में त्रिदिवसीय आयोजन

मुंबई- श्री नाकोड़ा भैरव दर्शन धाम में पूज्य आचार्य भगवंत राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के 100 वें वर्ष प्रवेश पर 15 सितंबर से 17 सितंबर तक जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 15 सितंबर को गुणानुवाद सभा का प्रसारण ऑन लाईन हुआ। 16 सितंबर को खुशबु कुंभट के द्वारा भक्ति संध्या का आयोजन तथा 17 सितंबर को परमात्मा के 18 अभिषेक तथा 100 गाय को लापसी तथा हरा चारा खिलाया गया।

गच्छाधिपतिजी का जन्मदिन मनाया गया

नीमच-श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ जैन मंदिर के जैन भवन में पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के तृतीय सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी के सुशिष्य मुनिश्री नमिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. एवं साध्वी अर्चपूर्णाश्री आदि ठाणा की निश्रा में भादवा वदी 14 दिनांक 16 सितंबर को पूज्यपाद गच्छाधिपति के जन्मोत्सव पर गुणानुवाद सभा, सामुहिक आयंबिल का आयोजन किया गया।

पालीताना में 100 आराधकों का सम्मान

पालीताना- पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के स्वास्थ्य और दीर्घायु की मंगल कामना के साथ पूज्य मुनि श्री गुणरत्नसागरजी म.सा. की प्रेरणा से पालीताना के 100 आराधकों का बहुमान किया गया।

सागर संघताज के जन्मशताब्दी वर्ष जन्मदिवस पर संपूर्ण विश्व में जैन-अजैन लोक में गुणानुवाद सभा और आयोजन का सागर लहराया

* **मुख्य आयोजन पूज्यश्री की निश्रा में सूरत में हुआ।**
* **किसी जैन महर्षि के जन्म दिवस का ऐसा विराट आयोजन देशभर में पहली बार हुआ।**
* **दर्शन ज्ञान चारित्र के क्षेत्र में अनेक आयोजन, अनेक प्रकार के तप के द्वारा दीर्घ आयु की कामना की गई।**
* **पूज्यश्री के जन्म स्थान जैतपुर में भी जैन-अजैनो महोत्सव मनाया।**
* **सारे देश से एक संक्षिप्त रिपोर्ट।**

उज्जैन- समग्र भारत वर्ष के जैन जगत में जंगम तीर्थ के रुप में पहचाने जानेवाले जिनागमसेवी अविरल आगम ग्रंथों के उपासक सागर समुदाय श्रमण संघ के सारसंघ चालक पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वें वर्ष में प्रवेश पर जन्म दिवस भादवा वदी-14 दिनांक 16 सितंबर 2020 पर सारे विश्व के जैन जगत में आनंद का सागर लहराया। किसी जैन संत के जन्म दिवस पर इतने व्यापक और विराट स्वरुप में आदरांजलि अर्पित करने का यह पहला प्रसंग है। पूज्यश्री के जन्मोत्सव का व्यापक भव्य आयोजन पूना में होना था किंतु कोराना महासंकट से उपजी परिस्थिति के कारण पूज्यश्री को सूरत स्थिरता करना पड़ी। इस कारण से सभी स्थानों पर शासन के नियमानुसार आयोजन हुए। विपरित परिस्थिति में भी इस तरह के व्यापक और विराट जन्मोत्सव का आयोजन कर जैन जगत के श्रीसंघों ने पूज्यश्री के संयम जीवन के 81 वर्ष और जीवन के 100 वें वर्ष में प्रवेश पर जो सम्मान-गौरव प्रदान किया है वह इस कलिकाल में यादगार और अविस्मरणीय रहेगा। किसी जैन संत महर्षि के लिये पूरे देश में सोशल मीडिया और सभी इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया में जिस तरह विविध प्रकार से एप बनाने के साथ आदरांजलि अर्पित की गई वह भी अद्भूत और अनोखी थी ऐसा कभी भी देखने में नहीं आया। यह पूज्यश्री के पुण्य की प्रबलता है कि विगत 200 वर्ष इतिहास में 100 वर्ष की आयु वाले गिने चुने महर्षि में से आपश्री है। यही नहीं 81 वर्ष का संयम जीवन जीनेवाले भी आपश्री एक मात्र महर्षि है।

सारे देश में पूज्यश्री के 100 वर्ष में प्रवेश प्रसंग पर जन्मदिवस पर आयोजित महोत्सव को कवर करने के लिये 100-200 पेज की एक पुस्तक ही छप जायेगी। हम अति संक्षिप्त में श्री संघों में आयोजित महोत्सव की जानकारी दे रहे है। सबको सम्मिलित करना हमारे लिये भी असंभव है। इसके लिये क्षमा करें। सम्पूर्ण जैन जगत में सभी श्रीसंघ सभी चार्तुमास स्थल पर आ गये हैं।

पूना में पंचान्हिका पंचाचार परिमल महोत्सव के साथ गच्छाधिपति को आदरांजलि दी गई

पूना- श्री गोटीवाला ओसवाल जैन संघ में पूज्य आचार्य श्री गुणचंद्र सागरसूरीजी म.सा. की निश्रा एवं पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के जन्म महोत्सव के अंतर्गत पांच दिवसीय आयोजन 13 से 17 सितंबर तक किया गया। दर्शनाचार-ज्ञानाचार-चारित्रा-चार-तपाचार-वीर्याचार के अंतर्गत 100 मंदिरजी में आंगी, 24 भगवान, 20 विहरमान, 45 आगम के नाम याद करना, एक दिन में 8 सामायिक, 2 प्रतिक्रमण करना, घर-घर आयंबिल करना एवं सम्यग ज्ञान, 51 खमासमण देना, टीवी, रात्रि भोजन का त्याग करने जैसे आयोजन किये गये।

हमारे तीज-त्यौहार

1- निज आसोज वदी-5	बुधवार	7/10/2020	रोहिणी
2- निज आसोज सुदी-5	बुधवार	21/10/2020	यक्षेन्द्रश्री मणिभद्र दादा का स्मृति दिवस-हवन-पूजन
3- निज आसोज सुदी-7	शुक्रवार	23/10/2020	आसोज नवपद आयंबिल ओली आरंभ

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- निज आसोज वदी-9, रविवार, दिनांक 11/10/2020, समय- 01.27 बजे

समाप्तः- निज आसोज सुदी-10, सोमवार, दिनांक 12/10/2020, समय- 01.18 बजे

पंचक :–

आरम्भः- निज आसोज सुदी-9, रविवार, दिनांक 25/10/2020, समय- 15.28 बजे

समाप्तः- निज आसोज सुदी-14, शुक्रवार, दिनांक 30/10/2020, समय- 14.58 बजे

घर कहता हैः-

सीढ़ियां (पगथिया) यहां पांच गठिये (हिंसा, असत्य, चोरी, काम, परिग्रह) है, यहां न आयें।

चबुतरा (ओटलो)- चेतना ! यहां से हटो, भागो, भीतर न आयें।

नकूचा- चूकें नहीं, अब भी कहता हूं चुको मत। भीतर आने जैसा नहीं है।

कमरा (ओरडो)- इनकार किया था, फिर भी भीतर आ गये ? हे आतमराम ! रोते रहो, अब जीवन भर रोते ही रहो।

चार दीवार- यहां घर में क्या है ? यहां तो केवल चार दिन (व्हाल) प्रेम है। बस, फिर सब प्रेम उड़ जावेगा। ''चारदिन की चांदनी फिर अंधेरी रात।''

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

दीपावली विशेषांक

नवम्बर 2020- आगमोद्धारक का ''दीपावली विशेषांक'' प्रकाशित होगा। आपकी रचनाएं भेजें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

पालीताणा महातीर्थ में चातुर्मास के अंतर्गत एच.एन.सफल ग्रुप अहमदाबाद द्वारा परम पूज्य आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

की पावन निश्रा में सुवर्ण एवं रजत प्रतिमा का निर्माण हुआ (संघ माता सर्युबेन के हाथो के द्वारा)

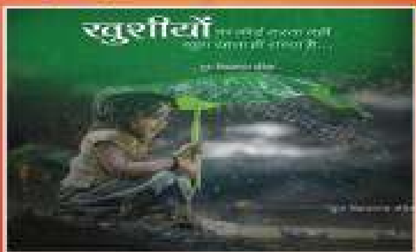

वर्ष-25 आसोज (निज) अक्टूबर 2020 अंक-10
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.डी. 08/2018-2020

डॉ. सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

बुक-पोस्ट
प्रति,
श्रीमान्

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स
285, एम.जी. रोड, इंदौर से मुद्रित। फोन : 0734 – 2412232, संपादक मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897